मानस भवन में आओ उतारें आरती ।
हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि हो नागरी ॥

रेशम भारती

दिसंबर 2022

केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय, बेंगलूरु

केन्द्रीय रेशम अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु

केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक व प्रशिक्षण संस्थान, बेंगलूरु

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर

बुनियादी तसर रेशम कीट बीज संगठन, बिलासपुर

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूरु

मूगा रेशमकीट बीज संगठन, गुवाहाटी

बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, पाली

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली

केन्द्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, राँची

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, बारीपदा

पुरस्कार विशेषांक

केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा समर्पित गृह-पत्रिका

हिन्दी माह

दीप प्रज्जवलित करते हुए बोर्ड के अधिकारी गण

डॉ. बी टी श्रीनिवास, निदेशक द्वारा संबोधन

हिन्दी माह 2022 के दौरान कवि सम्मेलन का दृश्य

सांस्कृतिक कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारी/कर्मचारी गण

पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सव्यसाची खान

पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री किरण बथेरी

पुरस्कार ग्रहण करती हुई सुश्री अभिलाषा

पुरस्कार ग्रहण करती हुई श्रीमती सरोजा

पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सुमित

पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री मनोज

हिन्दी पखवाड़ा

बुतरेबीसं, बिलासपुर में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह

केतअवप्रसं, रांची में हिन्दी पखवाड़ा के दौरान प्रतियोगिता

क्षेका, नई दिल्ली में हिन्दी पखवाड़ा में पुरस्कार वितरण

केरेअवप्रसं, मैसूरु में हिन्दी प्रतियोगिता का दृश्य

केरेअवप्रसं, पाम्पोर में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह

एअप्रके, फतेहपुर में हिन्दी पखवाड़ा का दृश्य

बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संस्थानों के साथ वी सी के माध्यम से बैठक

विविधा

सूरत में दिनांक 14 व 15 सितंबर 2022 को संपन्न द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का दृश्य

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची में
राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु में
राजभाषा तकनीकी सेमिनार

नराकास, बेंगलूरु द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में
पुरस्कार प्राप्त कर रही हैं श्रीमती सुचेता गोम्बी

नराकास, बेंगलूरु द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में
पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं श्री आर एस विश्वकर्मा

नराकास, बेंगलूरु द्वारा आयोजित विविधा प्रतियोगिता में
पुरस्कार प्राप्त कर रही हैं श्रीमती सुलेखा कुमारी

हिन्दी माह 2022 के दौरान प्रहसन का दृश्य

संरक्षक
राजित रंजन ओखंडियार

संपादक
सी पी जयश्री
मीना एस. कामत

प्रबंधन
जनार्दन तिवारी
सुलेखा कुमारी

मुख पृष्ठ
रविन्द्र एस.बडिगेर

पत्र व्यवहार
संपादक
रेशम भारती
केन्द्रीय रेशम बोर्ड
प्रथम तल, केरेबो काम्प्लेक्स
मडिवाला, बी टी एम लेआउट
बेंगलूरु-560068
ई – मेल: hindi.csb@nic.in

मुद्रक
सर्वश्री शरद इंटरप्राइजेज,
51, कार स्ट्रीट, हलासुरु,
बेंगलूरु- 560 008
फ़ोन: 080 25556015,
98459 44311

रेशम भारती

खंड 33 | अंक 66-67 | दिसंबर 2022

इस अंक में 1
सदस्य सचिव की कलम से 2
संपादकीय 3
शहतूत के फल-एक नया दृष्टिकोण 4
मूगा कीटपालन क्षेत्र में रोग प्रबंधन 8
मनुष्य होने का बोध ही बड़ी चीज़ है9अंतःकरण का ऑपरेशन 12
भगवान की इच्छा 12
प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया 13
मैं तुम्हें नहीं रोकता 15
ताजमहल किसने बनाया 15
मुस्कुराना 16
बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन के के प्रमुख प्रकाशन 19
निराला 20
अनकहा कहा:संभाषण से रूपान्तरण की काव्य-यात्रा 21
निराश्रिता 22
राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला संगठित विद्रोह 'संथाल हूल' 23
गाँधी जी आज भी जीवित हैं 24
मैं एक स्मार्ट फोन बनना चाहता हूँ। 24
आत्ममंथन का समय है 25
साहित्य सौंदर्य की अवधारणा 25
सनारा
बात की बात
केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार
राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूर द्वारा राजभाषा शील्ड वितरण समारोह
राजभाषा तकनीकी सेमिनार, केंरेअप्रसं, मैसूरु
सबक
तीसरी संतान
शरीफ कुत्ते
शाप
बदल गया चोर
बेटी की आरजू
यह जिंदगी
हिन्दी पखवाड़ा
हिन्दी कार्यशाला
आपके पत्र

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से केंद्रीय रेशम बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है । बिक्री के लिए नहीं, केवल आंतरिक परिचालन के लिए ।

सदस्य सचिव की कलम से

रेशम उद्योग के विकास में रेशम कृषि की बुनियादी एवं महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस परिप्रेक्ष्य में रेशम कृषि से जुड़े कृषकों के हित के लिए उन्हें नव-विकसित प्रौद्योगिकियों की जानकारी देना तथा ऐसे उपाय करना आवश्यक है कि रेशम उद्योग का समग्र विकास सुनिश्चित हो । केन्द्रीय रेशम बोर्ड का लक्ष्य है कि भारत विश्व स्तर पर अग्रणी रेशम देश के रूप में उभरे । इसके लिए रेशम क्षेत्र की अन्य प्राथमिकताओं के साथ गुणवत्तापूर्ण द्विप्रज शहतूत कच्चे रेशम के उत्पादन में वृद्धि पर ध्यान केन्द्रित रहा । केन्द्रीय रेशम बोर्ड की अनिवार्य गतिविधियाँ विभिन्न राज्यों में स्थित उसकी इकाइयों द्वारा केन्द्रीय क्षेत्र योजना नामत: "सिल्क समग्र-2" के माध्यम से की जा रही है जो रेशम उद्योग के विकास के लिए एक एकीकृत योजना है जिसका उद्देश्य वैज्ञानिक, तकनीकी और आर्थिक अनुसंधान के माध्यम से रेशम उद्योग का व्यापक और सतत विकास करना है ।

भाषा के रूप में हिन्दी देश की एकता का सूत्र है । हिन्दी विभिन्न भाषाओं के उपयोगी और प्रचलित शब्दों को अपने में समाहित करके सही मायनों में भारत की संपर्क भाषा होने की भूमिका निभा रही है यद्यपि हमारे देश में कन्नड़, तमिल, तेलुगू, मलयालम, मराठी, राजस्थानी, गुजराती, कोंकणी, पंजाबी, बंगाली, असमिया, भोजपुरी, अवधि जैसी अनेक भाषाएं बोली जाती है । हमें सभी भारतीय भाषाओं को साथ में लेकर चलना है ।

14 सितंबर 2022 को हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में जारी संदेश में माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने आहवान किया कि हम सभी संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों एवं कार्यालय के कामकाज अधिक से अधिक हिन्दी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करें तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करें । केन्द्रीय रेशम बोर्ड में रेशम उद्योग के साथ-साथ राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में भी प्रयास किए जाते हैं । इसी के फलस्वरूप बोर्ड के प्रयास की सराहना विभिन्न मंचों एवं राजभाषा विभाग द्वारा की जाती है और पिछले वर्ष बोर्ड को राष्ट्रीय स्तर पर भी राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

मुझे उम्मीद है कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड के अधिकारी व कर्मचारी अपने अन्य कार्यों के साथ राजभाषा संबंधी दायित्वों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहेंगे ।

(राजित रंजन ओखंडियार)

संपादकीय

राजभाषा हिन्दी सचमुच आगे बढ़ चुकी है । यद्यपि अंग्रेजी राजभाषा के रूप में ब्रिटिश काल से ही अपना आधिपत्य जमाये हुई थी, आज स्थिति में काफी सुधार हुआ है । आज उत्तर भारत हो या दक्षिण भारत, हर प्रदेश में लोग हिन्दी समझते हैं और बोल लेते है । केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय एवं हिन्दीतर भाषी क्षेत्रों में स्थित इसके केन्द्रों में भारत के कोने-कोने के लोग कार्यरत है, वे हिन्दी समझ लेते है और बोल भी लेते है । हर्ष की बात है कि बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति में उत्तरोत्तर विकास होता रहा है और हमारे अधीनस्थ कार्यालयों में भी राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के हर संभव प्रयास किए जाते हैं । इसी का द्योतक है कि पिछले वर्ष हमारे अनेक कार्यालयों को राजभाषा विभाग एवं नराकास द्वारा राजभाषा के उत्कृष्ट निष्पादन के लिए पुरस्कार प्रदान करते हुए गौरवान्वित किया गया है । केन्द्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, रांची को राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के लिए लगातार 2 वर्ष के लिए प्रथम पुरस्कार, केन्द्रीय रेशम अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु को वर्ष 2021-22 के लिए तृतीय पुरस्कार, केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु को वर्ष 2021-22 के लिए प्रथम तथा 2020-21 के लिए तृतीय पुरस्कार, केन्द्रीय रेशम अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, बरहमपुर को वर्ष 2020-21 के लिए तृतीय, क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली को वर्ष 2020-21 के लिए प्रथम पुरस्कार, बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर को वर्ष 2020-21 के लिए द्वितीय तथा 2021-22 के लिए प्रथम, मूगा रेशमकीट बीज संगठन, गुवाहाटी को वर्ष 2020-21 के लिए प्रथम पुरस्कार, बुनियादी बीज प्रगुणन व प्रशिक्षण केन्द्र, पाली को प्रथम एवं क्षेत्रीय रेशम अनुसंधान केन्द्र, बारीपदा को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया । इसके अतिरिक्त केन्द्रीय कार्यालय, मुख्यालय, बेंगलूरु को नराकास, बेंगलूरु द्वारा वर्ष 2019-20 के लिए तृतीय एवं वर्ष 2020-21 के लिए द्वितीय पुरस्कार से तथा राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूरु को नराकास द्वारा वर्ष 2019-20 और 2020-21 के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं इसके अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा रेशम उद्योग के अनुसंधान विकास के साथ-साथ हिन्दी के क्षेत्र में भी अपना समर्पित योगदान देते हुए अनेक पुरस्कार पाकर राजभाषा विकास एवं प्रशिक्षण क्षेत्रों के ध्वज को ऊँचा फहराया गया है । उम्मीद है कि आने वाले वर्षों में भी केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं इसके केन्द्रों द्वारा यह प्रयास जारी रखा जाएगा । रेशम भारती का प्रस्तुत अंक आपको कैसा लगा, इसके संबंध में अपने विचारों से अवश्य अवगत कराएँ ।

शहतूत के फल - एक नया दृष्टिकोण

- ग. थनवेंदन, ऋत्विका सुर चौधरी , एम.सी. त्रिवेणी, राजू मंडल एवं बी.टी.श्रीनिवास

शहतूत की सबसे अधिक खेती की जाने वाली किस्मों की उत्पत्ति चीन, जापान और भारत की हिमालय की तलहटी के क्षेत्र में हुई है। चीन में शहतूत का सबसे बड़ा क्षेत्र है, जो लगभग 6,26,000 हेक्टेयर है, इसके बाद भारत में लगभग 2,80,000 हेक्टेयर में शहतूत का वृक्षारोपण हैं (युआन और झाओ, 2017)। हाल ही में, फल देने वाले शहतूत पर रुचि भारत में अधिक महत्व प्राप्त कर रही है क्योंकि शहतूत फलों के स्वास्थ्य लाभ और अन्य मूल्यवर्धन पर कई रिपोर्टें हैं। शहतूत के फलों के स्वास्थ्य लाभों को ध्यान में रखते हुए, भारत और दुनिया के अन्य देशों में शहतूत के फलों के कई उत्पाद विकसित किए गए (एरसिल और ओरहान 2007; इमरान और अन्य, 2010; यांग और अन्य, 2010 और किम और अन्य, 2003)। शहतूत के फल को कम उपयोग वाली फल फसल माना जाता है, औषधीय गुणों के साथ अत्यधिक पोषक होने और प्रतिकूल मिट्टी और जलवायु परिस्थितियों में बढ़ने की उनकी क्षमता के बावजूद, उसे वांछित ध्यान नहीं मिला है। शहतूत के फलों के व्यवसायीकरण से ग्रामीण गरीबों में कुपोषण कम हो सकता है। इसके फलों के लिए विशेष रूप से इसकी खेती महाराष्ट्र, राजस्थान और हरियाणा के कुछ हिस्सों में की जा रही है। शोधकर्ताओं, हितधारकों, गैर सरकारी संगठनों और किसानों से फल देने वाले शहतूत जननद्रव्य

विभिन्न प्रकार के शहतूत फल

की मांग हाल ही में उनके मीठे स्वाद, प्रभावशाली पोषण मूल्य और विभिन्न स्वास्थ्य लाभों के कारण बढ़ी है (कैलिन-सांचेज़ और अन्य, 2013)।

विश्व की जनसंख्या (7.87 बिलियन) वर्तमान में प्रति वर्ष 1.03% की दर से बढ़ रही है और 2050 में लगभग 9.6 बिलियन तक पहुंचने की उम्मीद है। भारत, जो विश्व के सतही क्षेत्रफल का मात्र 2.4% है, में 1.38 बिलियन लोग रहते हैं, जो विश्व की आबादी का 17.5% है, [संयुक्त राष्ट्र संगठन, 2021]। आजकल सबसे बड़ी चुनौती इस बढ़ती आबादी को स्थिर, सुरक्षित और पौष्टिक गुणवत्ता वाला भोजन उपलब्ध कराना है। इसमें कुपोषण का मुकाबला करने की एक निराशाजनक स्थिति प्रस्तुत की गई है, जो अंततः सामाजिक-आर्थिक प्रगति विशेष रूप से अफ्रीका और भारत को प्रभावित कर रही है। फलों के स्वास्थ्य लाभों के बारे में उपभोक्ता जागरूकता संतुलित आहार के हिस्से के रूप में उनके नियमित सेवन पर बहुत जोर देती है। न केवल लोगों की पोषण स्थिति को बढ़ाने के लिए बल्कि प्रतिरक्षा और चयापचय स्वास्थ्य पर उनके सकारात्मक प्रभावों के लिए हाल के वर्षों में पोषक तत्वों से भरपूर फलों की दुनिया भर में मांग बहुत बढ़ गई है। यह कोविड-19 महामारी परिदृश्य को देखते हुए विशेष रूप से दिलचस्प है (मीना और अन्य, 2022)।

भारत में, 26 मिलियन टन के वार्षिक उत्पादन के साथ 32 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में फल फसलों की खेती की जाती है। विश्व के कुल उत्पादन में भारत का योगदान 8% है। शेखर और अन्य (2017) ने पाया कि भारत में समग्र खाद्य मुद्रास्फीति में फलों और सब्जियों की कीमतों का प्रमुख योगदान है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (2011-2012) के एक हालिया विश्लेषण ने संकेत दिया कि एफ एंड वी की प्रति व्यक्ति खपत ग्रामीण भारत के लिए 160 ग्राम/व्यक्ति/दिन और शहरी भारत के लिए 184 ग्राम/व्यक्ति/दिन है (मिनोचा और अन्य, 2018), जो चौधरी और अन्य (2020) द्वारा रिपोर्ट किए गए 400 ग्राम / व्यक्ति / दिन के डब्ल्यूएचओ बेंचमार्क से काफी कम है। शहतूत के फल पूरे देश में उगाए जाते हैं; प्रमुख फल उत्पादक राज्य तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पश्चिम बंगाल, पंजाब और हरियाणा (अपनी खेती, 2021) हैं।

भारत में, केन्द्रीय रेशम उत्पादन जननद्रव्य संसाधन केन्द्र को राष्ट्रीय सक्रिय जननद्रव्य साइट (एनएजीएस) और शहतूत जननद्रव्य के लिए नोडल संगठन के रूप में मान्यता प्राप्त है, जिसे नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज (एनबीपीजीआर), नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में, केन्द्रीय रेशम उत्पादन जननद्रव्य संसाधन केन्द्र 1317 शहतूत परिग्रहणों का संरक्षण करता है, जिसमें विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और विषम परिदृश्यों से 1032 स्वदेशी और 285 विदेशी परिग्रहण शामिल हैं। ये विविध जननद्रव्य एक्स-सीटू फील्ड जीन बैंक में संरक्षित हैं। इनमें से 10 की पहचान नियमित परियोजना लक्षणों के दौरान किए गए हमारे प्रारंभिक अवलोकन कार्य के आधार पर आशाजनक दिखती है। हालांकि, शहतूत के फलों की फल उपज क्षमता की जानकारी का आज तक व्यवस्थित रूप से अध्ययन नहीं किया गया है। उच्च फल उपज उत्पादन के लिए प्रथाओं के पैकेज की आवश्यकता होती है जिसमें कमी है। प्राचीन काल से, शहतूत की खेती दुनिया के विभिन्न हिस्सों में बड़े पैमाने पर इसके पत्ते के लिए की जाती है, जिसका उपयोग कच्चे रेशम के उत्पादन के लिए रेशम के कीड़ों (बॉम्बिक्स मोरी) को खिलाने के लिए किया जाता है। फल देने वाले शहतूत के उपयोग की क्षमता के बारे में हाल ही में जागरूकता ने नए अवसर खोले हैं जो रेशम उत्पादन किसानों के लिए आर्थिक निर्वाह और अतिरिक्त आय प्रदान कर सकते हैं।

क्र. सं	जीनोटाइप का सामान्य नाम	जीनोटाइप का वैज्ञानिक नाम	संस्थान कोड (के.रे.ज.सं.के)	राष्ट्रीय संहिता (एनबीपीजीआर)	उद्गम देश	फलों का रंग और स्वाद	एकल फल वजन (ग्र)
1	**टीआर**-5	मोरस एल्बा	एमआई-0188	आईसी 313845	भारत	काला/मीठा हरा	2-3
2	**सरस्वती टी एस्टेट**	मोरस लाविगेटा	एमआई-0380	आईसी 314132	भारत	गुलाबी/मीठा	3-4
3	**मारानहल्ली**-1	मोरस इंडिका	एमआई-0486	आईसी 314062	भारत	काला/खट्टा	2-3
4	**गुड़गांव लोकल**-1	मोरस लाविगेटा	एमआई-0572	आईसी 314212	भारत	गुलाबी/मीठा	3-4
5	**होसुर सी**-1	मोरस इंडिका	एमआई-0608	आईसी 405756	भारत	गुलाबी/मीठा	2-3
6	**रामदासपेट**	मोरस इंडिका	एमआई-0784	आईसी 573005	भारत	सफेद/मीठा	5-6
7	**सुबोंगपोंग**	मोरस एल्बा	एमइ-0150	ईसी 493877	दक्षिण कोरिया	काला/मीठा	2-3
8	**जापान**-II	मोरस एल्बा	एमइ -0010	ईसी 493767	जापान	काला/खट्टा	1.5-2
9	**एम. कैथायना**	मोरस कैथायना	एमइ -0018	ईसी 493775	इंडोनेशिया	काला/खट्टा	1.5-2
10	**बी.आर.**-3	मोरस लैटिफोलिया	एमइ -0253	अनुपलब्ध	पैराग्वे	काला/मीठा	2-3

"स्रोत: एमजीआईएस-नेशनल डेटाबेस, सीएसजीआरसी, केंद्रीय रेशम बोर्ड, होसूर से एकत्रित"

सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए भरोसात्मक शहतूत फल देने वाले परिग्रहणों की पहचान से बड़े पैमाने पर व्यावसायीकरण की संभावना तलाशने में मदद मिलेगी। शहतूत फल की खेती के लिए प्रथाओं के पैकेज से किसानों और हितधारकों को अंतरफसल और बड़े पैमाने की खेती के माध्यम से अतिरिक्त आय उत्पन्न करने में लाभ होगा। शहतूत के फलों की पोषण संबंधी रूपरेखा न्यूट्रास्यूटिकल्स और फार्मास्युटिकल उद्योगों में मूल्य वर्धित उत्पादों के और विकास में मदद करेगी।

शहतूत आयरन, कैल्शियम, विटामिन-ए, सी, ई और के, फोलेट, थायमिन, पाइरिडोक्सिन, नियासिन और फाइबर का एक बड़ा स्रोत है। शहतूत में पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट मुक्त कणों का सुधार करते हैं। शहतूत में रेस्वेराट्रोल (एंटीऑक्सीडेंट) भरपूर मात्रा में पाया जाता है। यह हृदय स्वास्थ्य और समग्र जीवन शक्ति को बढ़ावा देने में मदद करता है। शहतूत एंथोसायनिन, फ्लेवोनोइड्स, ल्यूटिन, ज़ेक्सैन्थिन, बी-कैरोटीन और ए-कैरोटीन जैसे बहुपोषक से भी भरपूर होता है जो बालों को फिर से जीवंत करता है, बालों के विकास को बढ़ावा देता है तथा बालों के प्राकृतिक रंग को बरकरार रखता है। एम. अल्बा, एम. नाइग्रा, एम. इंडिका और एम. लाविगाटा जैसी कुछ प्रजातियों के फलों का उपयोग कई एंटीऑक्सिडेंट युक्त उत्पादों जैसे जैम, पेस्ट, जूस और अंगूरी मदिरा आदि की तैयारी के लिए किया जा रहा है (साई और अन्य, 2002)।

प्रमुख व्यावसायिक रूप से उगाई जाने वाली फसलों की तुलना में कम उपयोग वाले फल जैसे शहतूत के बढ़ने में आसानी, कठोरता और जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन के मामले में कई फायदे हैं। इसके अलावा, वे महत्वपूर्ण फाइटोकेमिकल्स में असाधारण रूप से समृद्ध हैं और औषधीय तथा न्यूट्रास्युटिकल मूल्य हैं। इसलिए, दुनिया भर में कम शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में रहने वाले आबादी की पोषण संबंधी जरूरतों को पूरा करने में मदद मिल सकती है।

- केंद्रीय रेशम जननद्रव्य संसाधन केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, होसूर, तमिलनाडु

***

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूर द्वारा राजभाषा शील्ड वितरण समारोह

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूर द्वारा अपने अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में गति लाने एवं पदधारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा शील्ड योजना चलाई जा रही है ।

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, बेंगलूर मुख्यालय की राजभाषा शील्ड योजना दो श्रेणियों में बांटी गई है। एक हिंदी भाषी क्षेत्र तथा दूसरा हिन्दीतर भाषी क्षेत्र । इकाइयों की संख्या को ध्यान में रखते हुए हिंदी भाषी क्षेत्र के लिए एक पुरस्कार और हिन्दीतर भाषी क्षेत्र के लिए तीन पुरस्कार की योजना है। वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा शील्ड योजना के अधीन पुरस्कार प्राप्त इकाइयों को दिनांक 24.05.2022 को रारेबीसं मुख्यालय में आयोजित समारोह में पुरस्कार वितरण किया गया । राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए "क" क्षेत्र में स्थित इकाइयों में पी2 मूल बीज फार्म, शीशमबाड़ा, देहरादून को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया । "ग" क्षेत्र में स्थित इकाइयों में पी2 मूल बीज फार्म, पालक्काड, केरल को प्रथम पुरस्कार, रेशमकीट बीज उत्पादन केंद्र, जोरहाट असम को द्वितीय पुरस्कार और पी3 मूल बीज फार्म, मैसूरु को तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किए गए । राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में राजभाषा शील्ड का वितरण अत्यंत महत्वपूर्ण कदम है ।

मूगा कीटपालन क्षेत्र में रोग प्रबंधन

- सुब्रह्मण्यम जी., पवन शुक्ला एवं के.एम. पोंनुवेल

मूगा रेशम कीटपालन की बाहरी प्रकृति के कारण, विभिन्न रोगों का प्रकोप जैसे पेब्रिन, फ्लेचरी, मस्कार्डिन और ग्रासरी इत्यादि का खतरा हमेशा बना रहता है जिसका प्रतिकूल प्रभाव मूगा रेशम उद्योग पर पड़ता है । रेशमकीट पालन के समय उपरोक्त रोगों की वजह से काफी संख्या में लार्वा की मृत्यु हो जाती है जो कोसा उत्पादन को प्रभावित करता है और अंततः रेशम उत्पादन कम हो जाता है। अच्छी गुणवत्ता वाले पत्ते और उपयुक्त पर्यावरण की स्थिति प्रदान करने के बाद भी, प्रत्येक फसल में लगभग 14-40% फसल की हानि सामान्य रूप से इस तरह की बीमारियों के कारण होती है। इसलिए, विशेष रूप से पूर्व-बीज और बीज फसलों में प्रतिकूल मौसम में मूगा फसल के नुकसान को कम करने के लिए उचित रोगाणुनाशक के अनुप्रयोग के साथ-साथ उपयुक्त प्रबंधन की आवश्यकता पड़ती है।

मूगा कीटपालन के क्षेत्र में रोग की घटनाओं के लिए पूर्वसूचक कारक

- कीटपालन में घटिया किस्म के बीज का उपयोग
- खराब गुणवत्ता वाले पत्ते का उपयोग
- कीटपालन के दौरान गन्दगी तथा ख़राब प्रबंधन
- उच्च तापमान, उच्च सापेक्ष आर्द्रता और वर्षा की व्यापकता
- ओवरलैपिंग कीटपालन/बहुफसलीय खेती
- अपर्याप्त रोगनिरोधी उपाय
- रोगजनक कारकों का संचरण

रोग प्रबंधन के उपाय

- कीटपालन स्थल पर स्वच्छता की स्थिति बनाए रखें।
- कीटपालन से पहले और बाद में कीटपालन क्षेत्र को ब्लीचिंग पाउडर और चूने के मिश्रण (1:9 अनुपात) से छिडकाव करें ।
- कीटपालन से कम से कम 7 दिन पहले ब्लीचिंग पाउडर और चूने के मिश्रण के 5% घोल से पत्तियों पर छिड़काव करें ।
- अनुशंसा के अनुसार पालन से पहले और समय पर 0.01% सोडियम हाइपोक्लोराइट(NaOCl) घोल का छिड़काव करें।
- कीटपालन के बाद खेत की गहरी गुड़ाई करना अत्यधिक आवश्यक है क्योंकि यह क्षेत्र में रोगजनकों के इनोकुलम को नष्ट करने के लिए एक प्रभावी पारंपरिक विधि है।
- मरे हुए कीड़ों और कूड़े को वैज्ञानिक तरीके से दबा दें।
- 2 % फॉर्मेलिन घोल से चालोनी आदि का उचित कीटाणुशोधन करें ।
- जाड़े की फसलों में मस्कार्डिन रोग के प्रबंधन के लिए "लहदोई" का प्रयोग करें।

मूगा रेशमकीट के रोगों को नियंत्रित करने के लिए विसंक्रमक का घोल तैयार करने और उसके प्रयोग की विधि

- मूगा कीटपालन के दौरान विसंक्रमक का अनुप्रयोग और स्वच्छ वातावरण बनाये रखने से रोगों की घटना को रोकने में मदद मिलती है ।
- सोडियम हाइपोक्लोराइट/टीएसपी मिश्रण पत्तियों पर एक सतही विसंक्रमक के रूप में कार्य करता है जो बैक्टीरिया, वायरल और फंगल रोगों के कारण होने वाली लार्वा मृत्यु दर को नियंत्रित करने में प्रभावी है। सोडियम हाइपोक्लोराइट/टीएसपी मिश्रण तैयार करने का विवरण क्रमशः तालिका 1 और 2 में दिखाया गया है।
- सोडियम हाइपोक्लोराइट (0.01%) की आवश्यक मात्रा 2.5 मिली प्रति लीटर पानी या एक चम्मच 2 लीटर पानी में घोलें।
- मूगा पोषित पौधे और जमीन पर विसंक्रमक घोल के छिड़काव से कीटपालन क्षेत्र को विसंक्रमित करें।

तालिका 1: 0.01% सोडियम हाइपोक्लोराइट घोल तैयार करने की विधि

अनुप्रयोग शिड्यूल	सोडियम हाइपोक्लोराइट (लीटर)	पानी (लीटर)
ब्रशिंग करने के 6-7 दिन पहले	1	200
दूसरे इंस्टार के दौरान	0.5	100
तीसरे इंस्टार के दौरान	0.5	100
चौथे इंस्टार के दौरान	1	200
पांचवे इंस्टार के दौरान	1	200
कुल	4	800

तालिका 2: एक एकड़ में 400 डीएफएल कीटपालन के लिए विसंक्रमक (टीएसपी मिश्रण)

अनुप्रयोग शिड्यूल	टीएसपी (किग्रा)	यूरिया (किग्रा)	बुझा चूना (किग्रा)	पानी (लीटर)
ब्रशिंग करने के 6-7 दिन पहले	4	2	1	200
दूसरे इंस्टार के दौरान	4	2	1	200
चौथे इंस्टार के दौरान	4	2	1	200
कुल	12	6	3	600

'लहदोई' का एक एंटी मस्कार्डिन फॉर्मूलेशन के रूप में अनुप्रयोग

सी.एम.ई.आर. एंड टी.आई., लहदोईगढ़ द्वारा एक मस्कार्डिन रोधी फॉर्मूलेशन विकसित किया गया है जिसे "लहदोई" के नाम से जाना जाता है । यह ग्रामीण मूगा किसानों के बीच सर्दियों की फसलों में मस्कार्डिन रोग के प्रबंधन के लिए लोकप्रिय है। अनुशंसित सांद्रता का उपयोग करने से यह रेशमकीट के लिए गैर-विषैला होता है। मस्कार्डिन रोग को नियंत्रित करने के लिए यह निवारक और उपचारात्मक फॉर्मूलेशन दोनों है। इसके उपयोग की विधि निम्न प्रकार है :

I. 1 लीटर पानी में 1 ग्राम पाउडर घोलें।
II. पत्तियों और शाखाओं पर अच्छी तरह छिडकाव करें।
III. लहदोई से मिट्टी को सींचें।
IV. अनुप्रयोग के 7 दिनों के बाद लार्वा को ब्रश करें।
V. शीत ऋतु की फसलों (जरुआ, चटुआ) में 15 दिन के अंतराल पर इस फॉर्मूलेशन का अनुप्रयोग करें।

- रेशम-जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान प्रयोगशाला,
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कोड़ती, बेंगलूरु

***

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु में राजभाषा तकनीकी सेमिनार

केंरेअप्रसं, मैसूरु में 23.02.2023 को एक दिवसीय पूर्ण-कालिक राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया। तकनीकी गतिविधियों में राजभाषा का प्रयोग बढाने के उद्देश्य से इस सेमिनार का आयोजन किया गया था । "शहतूत रेशम उत्पादन की आधुनिक तकनीक" विषय पर आयोजित इस सेमिनार में कुल 13 वैज्ञानिकों/परियोजना सहायकों ने शोध पत्र प्रस्तुत किया । उक्त सेमिनार दो सत्रों में आयोजित किया गया ।

उद्घाटन समारोह सुश्री. निसर्गा, परियोजना सहायक, शहतूत रोग विज्ञान अनुभाग के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ । श्री. एस.के. उपाध्याय, उप निदेशक (सेवानिवृत्त) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । संस्थान की निदेशक (प्रभारी) डॉ. मेरी जोसेफा शेरी ए.वी. व मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया । तत्पश्चात संस्थान के सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती शचि. के द्वारा स्वागत संबोधन एवं कार्यक्रम की भूमिका का विवरण प्रस्तुत किया गया ।

मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में तकनीकी सेमिनार का आयोजन एक सार्थक प्रयास है । यह प्रतिस्पर्धा के लिए नहीं तकनीकी विषय हिंदी में अभिव्यक्त करने हेतु प्रोत्साहन देना इसका उद्देश्य है । भारत के विभिन्न राज्यों के कृषकों एवं राज्य सरकारी अधिकारियों को रेशम उत्पादन के विभिन्न पहलुओं पर संस्थान में प्रशिक्षण दिया जाता है । शहतूत संवर्धन एवं रेशम कीटपालन की जानकारी सभी को अपनी अपनी मातृभाषा में प्रदान किया जाना असंभव है । उस समय हिंदी के माध्यम से यह जानकारी दी जा सकती है । यह सेमिनार प्रशिक्षणार्थियों को हिंदी में प्रशिक्षण देने हेतु वैज्ञानिकों का आत्म विश्वास बढाने में सहायक होगा । निदेशक प्रभारी ने अध्यक्षीय अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित सभी वैज्ञानिकों को आह्वान किया कि वे इस सेमिनार से लाभ उठाकर अपना ज्ञान एवं प्रौद्योगिकी जन जन तक पहुंचाने का प्रयास करें । वैज्ञानिकों ने पॉवर पाइंट की प्रस्तुति के माध्यम से सरल और सुबोध भाषा में अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया ।

कार्यक्रम के समापन समारोह में प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए । श्रीमती शचि के., सहायक निदेशक (रा.भा) ने कार्यक्रम का संचालन किया और सेमिनार के सफल आयोजन हेतु सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया ।

मनुष्य होने का बोध ही बड़ी चीज़ है

-सरोज राम मिश्रा 'प्रकृति'

कला और साहित्य का सुंदर व विशद सर्जक हैं प्रयाग शुक्ल। मैं इसे सुखद संयोग मानती हूँ कि वे मेरे ही अपार्टमेंट में रहते हैं। बहुत ही सरल, आत्मीय व विराट व्यक्तित्व हैं प्रयाग जी जिसके चलते मैं अक्सर ही उनके घर चली जाती हूँ। उनके साथ बैठती हूँ, उनका कहा सुनती हूँ और उनका अनकहा शेल्फ में रखी उनकी किताबों से, कैनवास पर उभरी उनकी ताजी पेंटिंग से व मेज़ पर मुहँ बाये पड़े अनेक रंगों से समझने का प्रयास करती हूँ।

उनकी दिनचर्या स्वयं चाय बनाने से शुरू होती है । पेंटिंग उनकी दिनचर्या में ऊर्जा भरती है। लेखनी उनकी शक्ति है और उनका विराम है कृष्ण से एकाकार कराती हुई उनकी बाँसुरी पर तत तत तत...का आलाप! कभी कभी उनका मौन भी बोलने लगता है। उनकी कूँची में जादू है, पेंटिंग में बारिकियाँ हैं । उल्लसित रंगों में अद्भुत समायोजन है और कल्पना के कैनवास पर उभरती उनकी संगृहीत 'संवेदना', उनके आशावादी नज़रिए को बयान करती हैं। उनका एक एक चित्र नई पीढ़ी के लिए दस्तावेज़ बन रहा है।

आकस्मिक घटनाओं व चुनौतियों में भी हँसने मुस्कुराने की कला कवि प्रयाग जी ने अपनी कविताओं से ही सीखा है। 2 वर्ष पहले उनकी छोटी बेटी वर्षिता के निधन पर दुखी रहते हुए भी वे चैतन्य हैं। हाल में उनकी पत्नी का भी देहांत हुआ है। पर ये आघात भी कवि की जीवंतता को तोड़ न पाया । मैंने देखा था कि किस प्रकार प्रयाग जी बिस्तर पर पड़ी अपनी बीमार धर्मपत्नी ज्योति की सेवा में बड़ी ही संजीदगी से लगे थे और उनके इस अथक प्रयास से उनकी ज्योति की आँखों में एक नव ज्योति की लौ फिर से जलने लगी थी । लंबे समय बाद वह कुछ कहने भी लगी थीं और वे उन्हें जब तब सुनने भी लगे थे। निसंदेह इसे प्रेम का करिश्मा ही कहेंगे।

83 वर्ष पहले कलकत्ता में जन्मे प्रयाग शुक्ल हिन्दी साहित्य में कई विधाओं में लेखन करने वाले रचनाकार के रूप में जाने जाते हैं और अपने सुंदर विचारों से आज तक साहित्य जगत को तरोताज़ा कर रहे हैं। प्रकृति के प्रति सजग प्रयाग जी पेड़ पौधे को, नीले व ललछऊँ आसमान को घंटों निहारते हैं। इसके लिए अपनी बालकनी को विविध फूलों से सजाकर उन्हें व्यक्तिगत तौर पर संरक्षित कर पुष्पित करने का प्रयास कर रहे हैं। जनसत्ता में प्रकाशित 'गमले में गोभी' जैसी रचना प्रयाग जी ने यहीं बैठ कर लिखी है और आजकल गांधी पर अनुवाद की श्रृंखला भी यहीं तैयार हो रही है।

जीवन दर्शन पर अपनी पूरी पकड़ रखने वाले एक ऐसे रचनाकार है जो परिवेश, उलझते रिश्तों को लेकर गंभीर हैं। रिश्तों की बदलती तस्वीर उनके लिए शोचनीय मुद्दा है। वह स्वयं इस दर्द से 1954-55 में गुज़रे हैँ जब उनका संयुक्त परिवार टूटा । इससे फ़ाक़ाकशी का दौर भी इनके जीवन में आया। वह कहते हैं कि आज सामाजिक जीवन में भाई चारा, सद्भाव किस कदर कम हो रहे हैँ, पर वे निराश नहीं हैं । नई पीढ़ियों की ऊर्जा और रचना क्षमता के कायल हैं। वह जीवन में गहरे बोध के आग्रही हैं । उनका मानना है कि बोध ही मनुष्य को सचेत व जागरूक रखता है। मनुष्य होने का गहरा बोध ही, सृष्टि से हमारे संबंधों को तय करता है। इस समय समाज सम्पन्न है, लोगों में ज्ञान है पर लोगों में 'बोध' कम हो रहा है।

प्रयाग जी मानते हैं कि संघर्ष, चुनौतियाँ अधिकांश लोगों के जीवन का हिस्सा है। यही मनुष्य को निखारते भी हैं । वह 23 वर्ष की आयु 1963 में कलकत्ता से हैदराबाद 'कल्पना' पहुँचे । कल्पना के संपादकीय मण्डल ने इनके जीवन को निखार दिया। दिनमान व नव भारत टाइम्स के संपादकीय मण्डल में रहे प्रयाग जी रंग प्रसंग और संगना के संपादक भी रहे हैं। बृहद आकाश की तरह फैला उनका व्यक्तित्व ज़मीन से भी जुड़ा हुआ है। यही कारण है वे अपने बारे में कहते भी हैं, मैं कुछ भी तो नहीं। मैंने अभी कुछ ऐसा नहीं किया जिसके बारे में बात की जाए।

प्रयाग जी को चटकीले रंग, स्याही और किताबों की खुशबू पसंद है । बच्चे उनके प्रिय हैं । बच्चों के झुंड से घिरे प्रयाग शुक्ला, उन्हें कोमल पंखुरियों वाला फूल मानते हैं। अपने बचपन की यात्रा पर ले जाते हुए मुझे उनके चेहरे पर एक बालक की अठखेलियाँ दिखने लगीं। महज 8 वर्ष की आयु में 'आशु कवि' जगमोहन नाथ अवस्थी द्वारा उनपर लिखी एक कविता से उन्हें लगा कि वे कवि बने या ना बने पर साहित्य की दुनिया से सदैव जुड़े रहेंगे।

प्रयाग जी के बहुतेरी स्मृतियों से झाँकती हुई मैं कह सकती हूँ कि 'साहित्य के नायाब हीरे' को दिल्ली ही पुकारती रही। 1964 में प्रयाग जी के दिल्ली आते ही चित्रकारों ,लेखकों-कवियों की पारखी नज़र ने उनमें छिपे सौन्दर्य और रचनाशीलता को पहचान लिया। वे फ्री लांसार काम करते थे ।

यहाँ दिल्ली में रहने का कोई ठौर नहीं था। इस पर चित्रकार राम कुमार वर्मा ने अपने गोल मार्केट वाले स्टूडियो को इनके रहने के लिए खोल दिया। प्रयाग जी के साहित्य जीवन में बदलाव का चक्र यहीं से शरू हुआ। यहाँ बहुत सारे आत्मिक आभा वाले लोग आते जाते थे । अज्ञेय , राजेश, सर्वेश्वर, मोहन राकेश, चित्रकार एम एफ हुसैन, तैयब मेहता, जे स्वामीनाथन, कृष्ण खन्ना से उनका सम्पर्क बढ़ते हुए अंतरंगता में तब्दील हो गया।

ऊपरवाला रंगरेज़ है। कब आपकी ज़िंदगी के कैनवास पर आकांक्षों को पूरा करने के लिए कौन सा रंग भरेगा, ख़बर न लगने देता। लॉकडाउन के दौरान एक ओर उनका हथियार कलम समाज में प्रेरणा भरता रहा तो दूसरी ओर उनकी बोलती रेखाओं के रंग भी लोगों में उमंग भरने का काम कर रहे हैं। वे कहते हैं कि कला की दुनिया, रंगों पर पकड़, तो कल्पना पत्रिका से ही शुरू हो गई थी। वे जे स्वामीनाथन को एक अप्रतिम कला चिंतक मानते हैं। वे कहते हैं कि कला का गहरा बोध उन्हें जे. स्वामीनाथन से मिले इंटरव्यू से हुआ जिसमें स्वामीनाथन ने कहा कि कवि की कविता या चित्रकार की कला किसी और के बारे में नहीं सिर्फ़ अपने बारे में होती है। हर रचना अपना यथार्थ होती है। प्रयाग जी स्वयं भी कलाकार की ईमानदारी के प्रति सचेत हैं।

अपने चित्र-कृतियों के बारे में प्रयाग जी का कहना है कि किसी भी छवि दृश्य बिम्ब में सिर्फ़ शोभा ही नहीं होना चाहिए बल्कि उसमें भाव इतना गहरा होना चाहिए कि उस चित्र को चाहे मैं आज देखूँ,या पाँच साल बाद, या दस बरस बाद उसकी गहराई निरंतर बनी रहे । उसके रंग पहले से भी ज्यादा गाढ़े व गतिमान दिखे तभी उनका आनंद है। प्रेम, आनंद, मायाजाल, पक्षी, वृक्ष, फूल, आकाश, बादल, मानवाकृतियों से सराबोर सब प्रयाग शुक्ल की कला में भरपूर है। यकीनन ख्याति बटोरती प्रयाग जी की कृतियाँ कम से कम 16-17 लेयर्स कला के अंग रंग हैं। सिन्दूर, पीला , नीला, काला, चाक की तरह सफ़ेद खड़िया, गेरु माटी और हरे रंग आदि में अपनी आभा के साथ-साथ एक गति है। आलोक है। भाव है। खरा प्रभाव है। वास्तव में, रचना सुख ही उनके यहाँ प्रमुख है, कुछ खोने पाने का भाव है।

आत्मीय व्यवहार व दृढ़ इच्छा शक्ति प्रयाग शुक्ल का अनूठा गुण है। अपने इसी स्वभाव के चलते वे कल्पना के संपादक बदरीविशाल पित्ती के इच्छा वाले काशी अंक को निकालने में सफल रहे। यह अंक बदरीविशाल पित्ती जी के रहते हुए ही निकलना था। सामग्रियाँ भी जुटा ली गईं थी। पर तब अंक निकल न सका। 1978 में कल्पना का प्रकाशन बंद हो गया। दिसम्बर, 2003 में पित्ती जी का निधन हो गया। इसके बाद उनके पुत्र शरद पित्ती के आग्रह पर प्रयाग जी ने उनकी आखिरी इच्छा को पूरा किया। 2005 में कल्पना के काशी अंक का संपादन को प्रयाग जी अपनी सबसे बड़ी संतुष्टि और बदरीविशाल पित्ती के लिए अपनी सच्ची श्रद्धांजलि मानते है।

प्रयाग जी से आशीर्वाद में मिला 'कल्पना काशी अंक' मुझे झंकृत कर गया। इसके लिए उन्होंने नई और प्रासंगिक सामग्री नये सिरे से जुटायी। इसको पढ़ते हुए मैं कह सकती हूँ कि यह उनका बेहतरीन व उम्दा संपादन है। इसमें उनकी दो अनमोल टिप्पणियां है।'छविमय बनारस'-बनारसी मर्म लिए उनके हृदय में अलग कोने में बसा वाराणसी है तो हिन्दी भाषा के शुद्ध प्रयोग पर उनका सारगर्भित विचार है।

हाल ही में, त्रिवेणी कला संगम में तथा कुछ अन्य जगहों पर (बनारस, मुंबई...) उनके चित्रों की प्रदर्शनी लगी थी जिसे देखकर मुझे यह विश्वास हो गया है कि साहित्य जगत के शिरोमणि प्रयाग शुक्ल अपने चित्रों के साथ कला जगत में भी एक चित्रकार के रूप में भी अपनी जगह बना सकेंगे। कला समीक्षक के रूप में तो वह सुपरिचित हैं ही।

- ई एच1, 303, इलडेको युटोपिया

सेक्टर-93 ए, नोएडा-201 304

अंत:करण का ऑपरेशन

- कामेश्वर पाण्डेय

'मैंने अंतःकरण का ऑपरेशन करवा लिया है। आप भी करवा लीजिए कोई खर्च नहीं है, कोई रिस्क नहीं है, न ब्लड टेस्ट न ईसीजी, न एक्सरे, कुछ नहीं करना है, सिर्फ कुछ नेताओं और पुलिस अधिकारियों से राय-मशविरा कर लेना है। वे लोग अभ्यस्त हैं और इसकी जानकारी इन लोगों के पास सबसे ज्यादा है। वे लोग रोज कुछ लोगों को मुफ्त सलाह देते हैं। मैं भी पहले आपके समान ही था। दूसरों के दुःख में दुःखी हो जाता था, कहीं-कहीं रो पड़ता था, कहीं-कहीं सहायक होकर खड़ा भी हो जाता था लेकिन जब से यह ऑपरेशन करवाया है तब से मुझमें काफी परिवर्तन आ गया है। अब दूसरे को दुःखी देखकर मुझ पर कोई असर नहीं पड़ता है। इसकी जांच के लिए मैंने कल सड़क पर एक आदमी को पानी बिना तड़पते देखा और मैं चलता बना। वह आदमी प्यास से तड़प रहा था। तभी मैं समझ गया कि मेरा भी ऑपरेशन सफल हो गया है। बड़ा नेक काम है। आप भी करवा लीजिए ना; प्लीज, यह इन्सानियत पर एक बड़ा ऐहसान होगा"। सामने खड़े अनिल बाबू चुपचाप सब सुन रहे थे और मैं बोलते जा रहा था। वे मेरा मुख निहार रहे थे।

हमें पूरा भरोसा है कि आप सभी लोग मेरे प्रसंग का आशय जरूर समझ गये होंगे क्योंकि आप लोग भी इसी व्यवस्था एवं सामाजिक परिवेश के एक अंग हैं। वर्दी वाला और खादी वाला आदमी भी इसी व्यवस्था का एक अंग है जो परिस्थितिवश या स्वार्थवश अपना यह ऑपरेशन करा लिया है। मेरा यह विनम्र अनुरोध है कि सच्चे और ईमानदार लोग इसे अन्यथा न लें क्योंकि मेरा इशारा उनकी तरफ नहीं है। ऐसे नेक आदमी को मेरा कोटिशः नमन है। चूंकि अधिकांश लोग ऐसे ही हैं इसी कारण ऐसा उदाहरण देना पड़ रहा है। आज भी ईमानदार और नेक दिल इन्सान हैं जो इन्सानियत की कीमत पहचानते हैं। लेकिन अधिकांश लोग अंतःकरण के ऑपरेशन वाले ही मिलेंगे। दया और संवेदना मनुष्य के व्यक्तित्व के आभूषण है। जिस प्रकार आभूषण विहीन महिला अपने को सूना मानती है उसी प्रकार आदमी भी उपर्युक्त गुणों से विहीन अपने को सूना मानता है। भौतिकवादी दुनिया और पाश्चात्य शैली के प्रभाव से हम संवेदना शून्य होते जा रहे हैं । इन्सान जरूर चांद पर जा रहा है लेकिन इन्सानियत गर्त में जा रही है। आखिर जिन्दा इन्सान भावना शून्य होकर मृतप्राय हो गया है। अकेला एक आदमी इसके लिए जिम्मेवार नहीं है, पूरी व्यवस्था इसके लिए जिम्मेवार है। संवेदनहीनता इस प्रकार संक्रमित हो गयी है कि आदमी चाहकर भी किसी के प्रति संवेदनशील नहीं हो रहा है। एक बात जरूर है कि अगर मेरे सीने में दिल है तभी तो धड़केगा; लेकिन जब दिल निकाल दिया गया है तो क्या धड़केगा। हम भाव शून्य और चेतना शून्य हो गये है। प्रतीक अर्थ में अन्तःकरण का ऑपरेशन यही है।

एक बार मेरे गांव में बाढ़ आ गयी। चारों तरफ तबाही का मंजर था। लोग दाना-दाना को मुंहताज हो गये। बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे। जानवरों एवं पशुओं का चारा तक नहीं था। इलाके में पार्षद और नेता भाषणबाजी में व्यस्त थे। स्थानीय लोग शासन और प्रशासन पर प्रहार कर रहे थे कि किसी प्रकार का 'रिलीफ वर्क' सरकार की तरफ से नहीं चलाया जा रहा है। अचानक एक सरकारी ट्रक आया जिस पर खाने-पीने का सामान था। वितरण के समय बड़े नेता (सांसद) आ धमके और सरकारी कर्मचारियों को धमकाने लगे कि "वितरण मेरे निगरानी में होगा"। सरकारी कर्मचारी डर गये और शान्त हो गये। उन्होंने इशारे इशारों में ड्राइवर को इशारा कर दिया कि आधा माल नेताजी के फार्म हाउस में रख दो और बाद में तिरपाल से ढककर पूरा ट्रक पंचायत भवन में खड़ी कर दो। इसी बीच एस.डी.ओ. साहब भी आ धमके। सांसद महोदय को पहले से वहां हाजिर देख कर उनकी भी सिट्टी-पिट्टी बन्द हो गयी। सांसद महोदय ने खुशीपूर्वक यह घोषणा भी कर दी कि रिलीफ का सामान माननीय एस.डी.ओ. साहब के हाथों वितरित होगा।

लोग लाइन में बड़े आशा के साथ खड़े हो गये कि पूरा ट्रक भरकर सामान है कोई खाली नहीं जायेगा। सबको खाने-पीने का सामान और कपड़े एवं प्लास्टिक के मग और बाल्टी जरूर मिलेगा। लेकिन अभी 40 प्रतिशत लोगों को ही सामान मिल सका था कि एस.डी.ओ. साहब ने घोषणा की कि आप लोग यहीं इंतजार करें। दूसरा ट्रक शीघ्र ही पहुँच रहा है। यह घोषणा कर साहब और सांसद दोनों अपने-अपने रास्ते चल पड़े और आम ग्रामीण जनता दूसरे ट्रक के आने का इन्तजार करती रही। काफी देर हो गया; जब सबकी आवाजाही बन्द हो गयी तो मैं भी मन मसोस कर चल दिया। मुझे पक्का यकीन हो गया कि इन लोगों ने भी अन्त:करण ऑपरेशन करा लिया है और ऑपरेशन सफल एवं कारगर हुआ है।

- पूर्व राजभाषा अधिकारी,
हावडा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा

प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

-कामेश्वर पाण्डेय

पहले मैं जब बी.ए. में पढ़ता था तो मीडिया के बारे में कुछ जानता नहीं था और बात भी कुछ और है कि उस जमाने में मीडिया उतना सक्रिय नहीं था। समाचारों का एकमात्र साधन समाचार-पत्र ही था। वास्तव में तब मैं प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बारे में कुछ कम समझता था। बहुत बाद में मुझे दोनों का फर्क मालूम हुआ। ज्ञातव्य रहे तब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का विस्तार एकदम नहीं हुआ था। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव तो सूचना अधिकार अधिनियम (2005) के पारित होने के बाद और अधिक होने लगा। प्रेस की स्वतंत्रता का अधिकार जो न्यायालय को दिया तो प्रेस और जनता दोनों ही सजग हो गये। आज चैनलों का इतना प्रभाव हो गया है कि उसके आगे प्रिंट मीडिया फीका पड़ने लगा है। कल जो अखबार में छपेगा उसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आज ही परोस देता है। मुझे ठीक से याद है कि तब समाचार पत्रों के सम्पादकीय कितने प्रभावी हुआ करते थे। समाचार-पत्रों के सम्पादक बड़ी सावधानी और ईमानदारी के साथ अपने अखबारों के साथ न्याय करते थे। खबरों पर लोगों की विश्वसनीयता बनी रहती थी। कहीं-कहीं तो न्यायालयों में कानून से इतर सम्पादक की कही हुई बातें भी कोट की जाती थी। यह एक परम्परा चल पड़ी थी। यह तब तक कायम रहा जब तक अखबार का मालिक इसे अपना सामाजिक दायित्व समझता था। जब से समाचार पत्र कमाई का साधन हो गया तब से इसकी विश्वसनीयता पर प्रश्न उठने लगे। सर्कुलेशन की होड़ में चटपटे खबरों और विज्ञापनों पर विश्वास होने लगा और मालिक और पाठक दोनों ही इसके अभ्यस्त होने लगे। प्रिंट मीडिया से बढ़-चढ़ कर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया काम करने लगा। ऐसी बात नहीं है कि वह व्यापार नहीं कर रहा है। समाचार-पत्रों से अधिक विज्ञापन और प्रचार चैनलों पर दिखाई पड़ने लगा। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि वास्तव में चैनलों को प्रचार और विज्ञापन ही चला रहे हैं। चैनलों पर ऐसे-ऐसे हैरतअंगेज खबर दिखाये जाने लगे जिसका पता सरकार को भी नहीं होता।

लेकिन एक बात जरूर है कि दोनों प्रकार के मीडिया की ईमानदारी और सत्यता पर प्रश्न उठने लगे और पत्रकारों की स्वतंत्रता छिन गई है। वे समाचार-पत्रों एवं चैनलों के हाथ के कठपुतले हो गये हैं। वे लोग वही खबर छापेंगे और दिखायेंगे जो समाचार-पत्र का एवं चैनलों का मालिक चाहेगा। उस जमाने में समाचार-पत्र का मुख्य पत्र सम्पादक तय करते थे और अब मालिक। यह बात अलग है कि मालिक से ज्यादा प्रतिभासम्पन्न उसका सम्पादक है। लेकिन चूंकि सम्पादक उसके अधीन कार्यरत है, इसी कारण वह वही खबर छापने के लिए बाध्य है जिसे मालिक चाहता है। सुदूर गांव में भूख से मरे हुए लोगों की खबर तीसरे और चौथे पृष्ठ पर छोटे अक्षरों में छपेगी लेकिन सलमान खान की रिलीज होने वाली फिल्मों की खबर मुख्य पृष्ठ पर छपेगी। नेता द्वारा चीनी मिलों के उद्घाटन की खबर को मुख्य पृष्ठ पर जगह दिया जायेगा और पेंशन के अभाव में शिक्षक की मौत की खबर तीसरे या चौथे पृष्ठ पर क्योंकि मालिक का यही निर्देश है। उसी प्रकार चैनलों में बनावटी दवाओं के विज्ञापन 5 मिनट दिखाये जायेंगे तो मुख्य समाचार सिर्फ 2 मिनट और बाकी खबर ब्रेक के बाद यह बिकाउपन की प्रणाली अपने पूरे सबाब पर है। ऐसी बात नहीं है कि इसमें केवल समाचार पत्रों और चैनलों का ही स्वार्थ है। आम जनता की भी ऐसी ही इच्छा है एवं ऐसी ही खबरों को पढ़ने एवं देखने में रुचि है। अगर किसी रोगी का रोग गुड़ खाने से ही ठीक हो जाता है तो उसे के.सी. दास का रसगुल्ला खिलाने से क्या फायदा। जब अखबार और चैनल पूरा ही व्यापार, धंधा और कमाई पर आधारित हो जाय तो वहां नैतिक दायित्व एवं नैतिकता का कहां स्थान रह जाता है। ये माध्यम सामाजिक दायित्व के अग्रणी हैं। समाज इन पर भरोसा करता है और अगर ये ही माध्यम दबंगों एवं राजनेताओं के हाथों की कठपुतली बन कर रह जाएं तो आम जनता क्या करे। एक जमाना था जब प्रशासन चाहता था कि उसकी आलोचना हो ताकि उसमें निखार आये और निरंकुश होने से बचे। लेकिन आज प्रशासन और राजनेताओं तथा कानून के रखवालों की लाख आलोचना होती रहे, उन पर कोई असर पड़ने वाला नहीं है। उनको पता है कि ये दोनों माध्यम खरीदे और बेचे जा सकते हैं। ऐसी स्थिति में इनको डर क्यों लगे। मतदान के समय फिर से इन्हीं माध्यमों के द्वारा वोट बटोर लेते हैं और प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया वही लिखता और दिखाता है जो ये चाहते हैं।

ऐसी बात नहीं है कि सभी बिकाऊ हैं, कुछ नैतिकता वाले लोग जरूर हैं जो सच्चाई ही छापते और दिखाते हैं। लेकिन

इसकी कीमत उन्हें चुकानी पड़ती है और जगह-जगह उनकी पतवार की मूर्तियां बना दी जाती हैं और उन बेजान मूर्तियों पर वर्षी के दिन दो-चार पुष्प चढ़ा दिये जाते हैं ताकि जनता को उनके किये भूलों की याद आ जाये और फिर कोई ऐसा करने की हिम्मत न कर सके। ईमानदारी और सच्चाई की कीमत ऐसे पत्रकार या संवाददाता अपनी कुर्बानी देकर चुकाते हैं और सारे समाचार-पत्रों का परिपत्रण (सर्कुलेशन) और चैनलों के टीआरपी हासिये पर चले जाते हैं। इस अर्थवादी युग में पैसा सब पर चढ़कर बोल रहा है। वे ही खबरें छापी और दिखाई जायें जो 'मनहिते' और लोकहित दोनों में ही हो। यह परिपाटी बन गयी है और ईश्वर जाने कब तक बनी रहेगी।

- पूर्व राजभाषा अधिकारी
हावडा मंडल, पूर्व रेलवे, हावड़ा

***

मैं तुम्हें नहीं रोकता

- पंकज कुमार

तुम्हारे न होने से
तुम्हारे हालात अच्छे हो ही जाएंगे
इसकी गारंटी अगर तुम दे सको
तो जाओ
मैं तुम्हें नहीं रोकता ।

तुम्हारे न होने से
तुम्हारे पिता की लाठी
कोई बाहरवाला बन ही जाएगा
अगर हो जाए तुम्हें भरोसा
तो जाओ
मैं तुम्हें नहीं रोकता ।

तुम्हारे न होने से
तुम्हारी मां को कोई बाहरवाला
ठीक उसी तरह संभाल लेगा
जैसे तुम संभाल लेते हो
ये विश्वास अगर हो पक्का
तो जाओ
मैं तुम्हें नहीं रोकता ।

तुम्हारे न होने से
तुम्हारे बड़े होते बच्चों की
परवाह कोई कर लेगा
उनके बचपन को कोई वैसे ही सिंचेगा
जैसे तुम सींचते हो
अगर है इस भरोसे में दम
तो जाओ
मैं तुम्हें नहीं रोकता ।

तुम्हारे न होने से
तुम्हारी पत्नी
कभी छली नहीं जाएगी
सुरक्षित रहेगा उसका वजूद हमेशा
ये यकीं है अगर तुम्हें
तो जाओ
मैं तुम्हें नहीं रोकता ।

ऐसा बिलकुल नहीं
कि मुझे तुम्हारी समस्याओं का इल्म नहीं
कठिनाइयां तो हमारी भी कुछ कम नहीं
जानता हूं मैं

हमारे रोजगार के रास्ते तंग हैं
बल्कि बहुत सारे रास्ते तो बंद हैं
हम फिर निराश न हुए
खुद कुछ किया
और खड़े हुए
हम ऐसा ही फिर करेंगे
साथ बैठेंगे
बात करेंगे
चले आओ
मैं तुम्हें नहीं रोकता ।

-दिव्यांशु विल्ला
जयप्रकाश नगर
अरशुंदे, कन्के, रांची-834 006

व्यंग्य

ताजमहल किसने बनाया

-जी. के. वालिवे

कुछ लोगों को अपनी प्रशंसा करवाने का बहुत शौक होता है । ऐसे ही एक कंस्ट्रक्शन कार्यालय के बहुत बड़े अधिकारी को यह बीमारी लग गई। उन्होंने एक कार्यालय से कहकर अपना अभिनंदन करवाने उद्घाटन समारोह आयोजित करवा डाला, जो इस कार्यालय के इसी अधिकारी ने बनवाया था। यह भी तय किया गया कि कार्यालय के कुछ कर्मचारियों के बीच एक प्रतियोगिता भी रखी जाएगी एवं प्रश्न कुछ इस प्रकार होंगे कि उनका उत्तर कंस्ट्रक्शन के बड़े अधिकारी की प्रशंसा का ही रूप हो। उद्घाटन समारोह के अंत में अधिकारी महोदय सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी से प्रश्न पूछेंगे एवं पुरस्कार वितरित करेंगे। इस कार्य को अंजाम देने के लिए पहले ही एक कर्मचारी को सभी प्रश्न एवं उनके उत्तर रटा दिए गए। किन्तु दुर्भाग्य से इस कार्यक्रम के आयोजन से ठीक एक दिन पूर्व उस कर्मचारी को इस अधिकारी महोदय की पर्सनल डायरी हाथ लग गई, जिसमें उनके काले कारनामे पढ़कर उस कर्मचारी का दिमाग खराब हो गया। दूसरे दिन उसने कैसे उत्तर दिए उसे देखें:

प्रश्न: इस वर्ष सबसे अधिक आयकर किस अधिकारी ने भरा ?

उत्तर: जी सर आपने, पर सबसे अधिक आयकर चुराया भी आपने।

प्रश्न: इस वर्ष सबसे अधिक इमारतें/कार्यालय किसने बनवाया ?

उत्तर: जी सर आपने, पर सबसे अधिक घूस भी ली आपने।

प्रश्न: इस वर्ष सबसे अधिक कार्यालयों का निरीक्षण किसने किया ?

उत्तर: जी सर आपने, पर परिवार को भी सबसे ज्यादा घुमाया आपने।

प्रश्न: एक इमारत बनने में 40 ट्रक रेत, 400 बोरी सीमेंट लगा तो 10 इमारतों में कितना लगेगा ?

उत्तर: वैसे तो गणित के हिसाब से 400 ट्रक रेत, 4000 बोरी सीमेंट लगेगा, पर सिर्फ 400 बोरी सीमेंट ही लगेगा, रेत की मात्रा बढ़ जाएगी, यदि बनाया आपने।

अधिकारी महोदय एकदम झल्ला गए और गुस्से में पूछा ''ताजमहल किसने बनवाया'' ?

उत्तर: किसी ने भी बनवाया होगा पर सर आपने नहीं वरना कब का गिर जाता।

- सहायक निदेशक (प्र व ले)
बुतरेबीसं, बिलासपुर

***

मुस्कुराना

-पंकज कुमार

कितना मुश्किल होता है
आज पूछा मैंने
एक मां से
जो एक अस्पताल के गेट पर
अपनी नन्हीं सी बेटी को
अपनी पीठ पर बांधे
लिट्टी चोखा
बना भी रही थी
सेंक भी रही थी
बेच भी रही थी
लोग रूह कंपाती ठंड में
खुद को ढके हुए
गरम-गरम लिट्टी का
आनंद ले रहे थे
कुछ मुस्कुराते हुए
लिट्टी की तारीफ भी कर रहे थे
लेकिन मां चुप थी
मुझे उनका न मुस्कुराना
बेचैन कर रहा था ।

- दिव्यांशु विल्ला
जयप्रकाश नगर
अरशुंदे, कन्के, रांची-834 006

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन के प्रमुख प्रकाशन

- डॉ. ए. वेणुगोपाल एवं पी.एस. लोधी

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज पत्रिका

संगठन कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा को समर्पित तसर रेशमकीट बीज पत्रिका (न्यूज लेटर) के खण्ड 8 (अंक 1 व 2) का प्रकाशन किया गया जिसके माध्यम से संगठन कार्यालय की तकनीकी एवं प्रशासनिक गतिविधियों को हिंदी भाषा के माध्यम से तसर उत्पादक कृषकों एवं इससे जुड़े हुए कार्मिकों से संवाद स्थापित करने में सहायक है।

वार्षिक प्रतिवेदन

संगठन कार्यालय द्वारा प्रशासनिक एवं तकनीकी क्रियाकलापों को उल्लेखित करने वाली वार्षिक प्रतिवेदन 2021-22 को द्विभाषी रूप में प्रकाशित किया गया है।

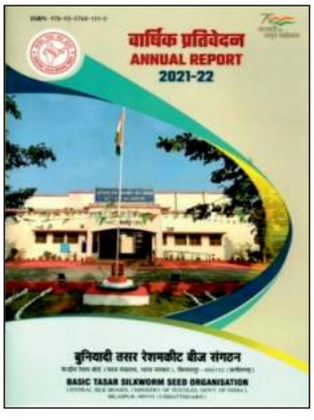

तसर रेशम उत्पादन की सफलता की कहानियां

संगठन कार्यालय द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में तसर रेशम उत्पादन के क्षेत्र में सफल तसर रेशम उत्पादक कृषकों की सफलता की कहानियां को प्रकाशित किया गया है जिससे इस क्षेत्र में कार्यरत तसर रेशमउत्पादक कृषकों को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिल सके एवं वे इस क्षेत्र में और अधिक लगन एवं मेहनत से कार्य कर सके।

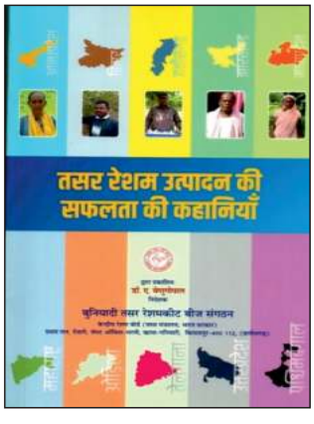

तकनीकी बुलेटिन

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन द्वारा तसर उत्पादक कृषकों को अद्यतन तकनीकियों से अवगत कराने हेतु 03 तकनीकी बुलेटिन जैसे; उष्णकटिबंधीय तसर रेशम उत्पादन के लिए लागत प्रभावी ग्रीन शेड नेट संरचना, उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट कीएकमात्र प्राधिकृत प्रजाति बीडी आर-10 एवं कोविड-19 महामारी से उष्णकटिबंधीय तसर रेशमकीट पालन में बचाव संबंधी मागदर्शिका प्रकाशित किए गए है।

प्रक्षेत्र मार्गदर्शिका

तसर रेशमउत्पादक कृषकों की तकनीकी जानकारी अद्यतन करने एवं प्रक्षेत्र में तकनीकियों का भलीभांति प्रयोग करने के लिए संगठन कार्यालय द्वारा प्रक्षेत्र मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया गया है। इससे कृषकों को तसर उत्पादन वैज्ञानिक तरीके से करने में सहायता मिलेगी।

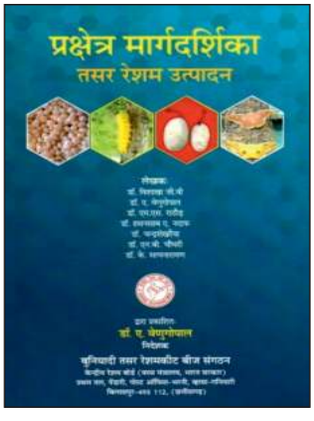

बुतरेबीसं, गिल्म्स

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन द्वारा वर्तमान वित्तीय वर्ष में किए गए मुख्य कार्यों, लक्ष्यों एवं जनादेश आदि का विवरण प्रस्तुत करने संबंधी जानकारी प्रदान करने वाला यह ब्रोशर प्रकाशित किया गया है।

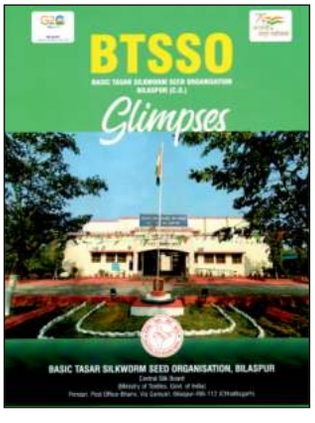

फंडामेंटल ऑफ एंटोमोलॉजी

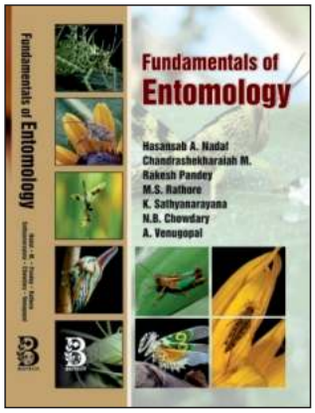

यह पुस्तक "भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), नई दिल्ली की पांचवीं डीन समिति की रिपोर्ट" के पाठ्यक्रम के अनुसार तैयार की जा रही है। यह पुस्तक कीट के परिचयात्मक स्तर पर विषयों को संबोधित करती है जिसमें इसके उपांग, सिस्टम, पारिस्थितिकी, कीट नियंत्रण के तरीके एवं कीट सिस्टमैटिक्स शामिल हैं। कृषि एवं संबद्ध विषयों के स्नातक छात्रों को होने वाली कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए विभिन्न अध्यायों को छात्रों के लिए सरल एवं समझने योग्य तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

उष्णकटिबंधीय तसर बीज गुणन प्रणाली पर एक अवलोकन

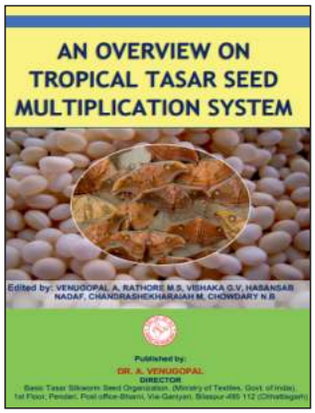

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर की स्थापना के रजत जयंती वर्ष में, इस कार्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा "उष्णकटिबंधीय तसर बीज गुणन प्रणाली पर एक अवलोकन" नामक पुस्तक के रूप में सभी जानकारी लाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक निश्चित रूप से उष्णकटिबंधीय तसर गुणवत्ता बीज प्रगुणन प्रणाली की धारणा के बारे में परिचित कराने में मदद करेगी तथा तसर उद्योग के लिए सहायक होगी।

उष्णकटिबंधीय तसर रेशमउत्पादन प्रशिक्षण पुस्तिका

इस पुस्तिका का प्रकाशन भी हिंदी में किया जा रहा है तथा इसके माध्यम से उष्णकटिबंधीय तसर रेशम उत्पादन से जुड़े कृषकों एवं अन्य पणधारियों को सहायता मिलेगी ।

- बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर

***

निराला

-पंकज कुमार

एक जीवंत
जिंदादिल इंसान पहले
कवि बाद में
जिन्होंने मरते दम तक भी
जीते रहने का दर्शन दिया
अंतरवेदना से व्यथित रहकर भी
सामान्य जनों के साथ जीते हुए
जन - जन के लिए लिखते हुए
आम जनों की तरह
हमसे विदा हुए
ऐसी थाती छोड़ गए
कि उन्हें छू लेने की हिम्मत
आज किसी साहित्यकार में नहीं
वो जूझने वाला जुनून कहां है आज किसी में
प्रतिकूलताओं के मरुस्थल में
संभावना के बीज बोने की कला
किसके पास है आज
मैं ढूंढ तो रहा हूं
मिलते नहीं दूर - दूर तक
कोई भी कहीं भी
यूं कहना है हमें
किसी भी मंच से
सामने चाहे कोई हो
निराला से बड़ा न होगा
निराला से कड़ा न होगा
और निराला से कोमल भी न होगा
जिसमें हिम्मत होगी
वही खड़ा होगा ।

- दिव्यांशु विल्ला
जयप्रकाश नगर, अरशुंदे,
कन्के, रांची-834 006

अनकहा कहा: संभाषण से रूपान्तरण की काव्य-यात्रा

पुस्तक समीक्षा

-ललन कुमार चौबे

समीक्षित कृति: **अनकहा कहा** (कविता संग्रह)
कवि: **विशाखा मुलमुले**
मूल्य: रु.150/-
प्रकाशक: प्रतिबिंब,नोशन प्रेस ,चेन्नई

अपनी रचना तो स्वाभाविक रूप से प्रिय होती है परंतु यदि वही रचना दूसरों के लिए भी प्रिय हो जाए तो सृजन की सार्थकता का बोध होता है। किताबें वे नहीं जिनसे रैक को सजाया जाए अपितु किताबें वे हैं जिन्हें किसी भी समय हाथ में लेने के लिए मन मचल उठे।कविताओं को पढ़ने के बाद पाठक यदि सन्नाटा में थोड़ी देर तक डूब न जाए तो कैसे कविता को सफल माना जाए। यह सही कि बड़ा से बड़ा कवि भी अपने पूरे जीवन काल में बीस-पचीस से अधिक यादगार और सफल कविताएं नहीं लिख पाता। इसमें कोई दोष भी नहीं है। कुछ कवि अपवादस्वरूप हो सकते हैं। कविताओं के संबंध में मोटे तौर पर मेरी राय ऐसी ही है। कविता मेरी प्रिय विधा है और कविताओं को पढ़ने का मौका मैं नहीं चूकता। इस क्रम में समकालीन स्त्री-लेखन पर जब कभी दृष्टि जाती है, गहरी आश्वस्ति मिलती है।

समकालीन स्त्री-लेखन को समृद्ध करने वाली अनेक सर्जकों के मध्य विशाखा ने अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। यद्यपि उनकी समस्त रचनाओं से मुझे गुजरने का मौका नहीं मिला है, फिर भी उन्हें स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं और ब्लॉग आदि पर लगातार पढ़ता रहा हूं। इस सीमित अध्ययन के आधार पर मैं इतना जरूर कह सकता हूँ कि उनकी कविताएं स्त्री-विमर्श के बंधे-बंधाए फ्रेम में नहीं अंटती। यहाँ अनुभव का वैविध्य देखने को मिलता है।उनके यहाँ स्त्री विभिन्न रूपों में अपने सामर्थ्य और सीमा के साथ मौजूद है। जहां एक तरफ गृहस्थ-जीवन का प्रेम और औदार्य है, वहीं उसके संघर्ष एवं पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति भी है। खास बात यह कि यहाँ कहने की शैली में मिठास है। विशाखा की कविताएं बिना लाउड हुए अपना काम बखूबी करती हैं । सच को कहने का शालीन तरीका बहुत कम लोगों में पाया जाता है। कहने की यह सुसंस्कृत शैली है। स्त्री विमर्श के तुमुल–कोलाहल के बीच ऐसी कविताओं को पढ़ते हुए कभी-कभी आश्चर्य भी होता है। इस दृष्टि से समकालीन स्त्री कविता में उनकी पृथक पहचान बनती है। हाल ही में उनका दूसरा कविता संग्रह "**अनकहा कहा**" प्रकाशित हुआ है। प्रसंगवश बतला दूं कि प्रतिष्ठित वेब पत्रिका 'समालोचन' पर जब उनकी लंबी कविता 'संभाषण ' छपी थी तो मैंने टिप्पणी करते हुए लिखा था कि आपने कनुप्रिया की याद करा दी। बहरहाल, संग्रह की कविताओं से गुजरना मेरे लिए एक सुखद अहसास है तथापि इतना अवश्य कहूंगा कि **संभाषण** शीर्षक कविता माला का अलग मनका है जो कवि और पाठक के मन की भी कविता है। मैं इस कविता के माध्यम से कवि और उसके प्रिय आराध्य के बीच हो रहे संभाषण को पूरी तल्लीनता से सुन रहा हूं। सुन ही नहीं रहा, बल्कि गुन रहा हूं। हिन्दी कविता के पाठक भली-भांति जानते हैं कि इन दिनों हिन्दी कविता में भक्ति और प्रकृति दोनों लगभग गायब हैं। विमर्शहीनता के बावजूद विमर्शों का शोर है। ऐसे में विशाखा की लंबी कविता संभाषण में समकाल के सारे अंतर्द्वंद्व और ताप मौजूद हैं। यह संयोग ही है कि विशाखा यहाँ सखी रूप में कृष्ण से संवाद करती है। द्वापर में राधा के अलावा ललिता और विशाखा भी कृष्ण की प्रिय सखियाँ रही हैं।यह स्वाभाविक है कि जहां सखी-भाव है, वहाँ कोई औपचारिकता नहीं होगी। अपनी कविता में विशाखा कृष्ण के रूप-सौन्दर्य का चित्रण करने के पश्चात तमाम तरह के प्रश्नों के साथ उपस्थित हो जाती हैं। यहाँ कोई दुराव-छिपाव नहीं। यहाँ भक्ति का प्रगाढ़ रंग देखने को मिलता है। किसी के लिए यह विस्मय का विषय भी हो सकता है। लेकिन कवि के मनोजगत में कुछ भी संभव है। जब श्याम रंग में रंग गए तो दूसरा रंग चढ़ना मुश्किल है। मैं यह नहीं कह रहा कि **संभाषण** कविता भक्ति काव्य का नया संस्करण है पर इतना अवश्य है कि इसमें प्रेम एवं भक्ति का रस लबालब भरा हुआ है। परंतु, यहां प्रेम छलकता नहीं मतलब प्रदर्शन की सामग्री नहीं है, अपितु यहां प्रेम और भक्ति की अन्तर्धारा बह रही है जिसे अलगाना मुश्किल है। दोनों दूध और शक्कर की तरह घुल मिल गए हैं। कृष्ण के रुप-सौन्दर्य के चित्रात्मक वर्णन से शुरू होती यह कविता धीरे-धीरे अनौपचारिक हो गई है। 'देव' कितना प्रिय संबोधन है! यह कई बार कविता में आया है। मानो कृष्ण और अर्जुन का संवाद चल रहा हो। कवि अपने समकालीन ज्वलंत प्रश्नों के साथ कृष्ण के समक्ष है। यह बिल्कुल सही तरीका है। कवि यदि समकालीन संदर्भों से कटा हो या तटस्थ हो तो कविता निष्फल हो जाएगी। व्यष्टि की मुक्ति स्वार्थ है तो समष्टि की मुक्ति ही परमार्थ है। इसीलिए कवि विविध किस्म के इहलौकिक और पारलौकिक

प्रश्नों के साथ अपने देव के सामने उपस्थित होती है और इनका समाधान पूछती है। कभी-कभी तो लगता है कवि एक कुशल पत्रकार की तरह कृष्ण के सामने प्रश्नों की झड़ी लगा रही है। इस बहाने कृष्ण के सर्वांगीण व्यक्तित्व का उद्घाटन भी हुआ है। पूरी कविता में अपने समय के तमाम प्रश्न हैं।

जैसे-

देव!
वस्त्रों से लिपटी रहती हूँ
फिर भी कुदृष्टि भेदती चली जाती है
वस्त्रों के आर-पार
निर्वस्त्र हूँ
हर पहर होती रही यही अनुभूति
संकट रहता हर समय भान।

या

आर्यावृत में
भाई-भाई में अब भी हो रहे हैं युद्ध
इस बात के लिए भी कि
किसका रक्त है अधिक शुद्ध

इस तरह के अनेक प्रश्न हैं जिसमें कवि की जिज्ञासा खुल कर सामने आई है। वह विगत के घटना-क्रम के लिए कृष्ण को उपालंभ भी देती हैं तो यह भी पूछती है कि वर्तमान समय में तुम्हारी क्या रणनीति होगी। संवाद की यह शृंखला छत्तीस खंडों में चलती है। बावजूद इसके कवि की अनन्यता बनी हुई है। कभी सुना था कि द्वंद्व का कवि कमजोर होता है लेकिन जिस कृति में अंतर्द्वंद्व का चित्रण हो वह सर्वाधिक सफल मानी जाती है। बहुत कम कवि होते हैं जो लंबी कविताओं के साथ न्याय कर पाते हैं। फलतः कविता अपना प्रभावान्विति खो देती है। इस संबंध में इतना जरूर कहूँगा समकालीन हिन्दी कविता-परिसर में **संभाषण** ने अपनी मुकम्मल जगह बना ली है। कविता के अंत में कवि को लगता है कि उसके देव को अब विश्राम करना चाहिए। यह कितना मोहक भाव है! कितनी सुंदरता से इस संभाषण का अंत हुआ है, आप भी देखिए:

देव!
अब तुम शयन करो
इस एक पहर के उपवास के पश्चात
मैं लौटती हूं संसार में।

संसार में लौटना जरूरी है। संसार की समस्याओं का समाधान संसार में लौटकर ही किया जा सकता है। अब कवि का अपने आराध्य से साक्षात्कार के पश्चात रुपांतरण हो चुका है।कृष्ण से मानस-साक्षात्कार के उपरांत उसे संसार का सामना करने में कोई कठिनाई नहीं है।

संग्रह का दूसरा खंड **रूपान्तरण** है जहां वह घर-गृहस्थी, दांपत्य, श्रृंगार की कविताएं रचती हैं पर उसके लिए संसार वही नहीं रह जाता। संभाषण के बाद की सजगता के कारण एक गहरी अंतर्दृष्टि उसमें विकसित हो चुकी है। वह जिस हवा में सांस ले रही है, आंसुओं से भीगी है,वह हवा वस्त्रों का पसीना नहीं सोख पा रही है। इसीलिए वह चिन्ता, भय व आशंकाओं से तर-ब-तर है। अपने समय के ताप- परिताप को अभिव्यक्त करती ये कविताएं अलग मिजाज की हैं। प्रेम मनुष्य को उदारता प्रदान करता है। वह करुणा से आर्द्र हो उठता है। प्रेम करता हुआ मनुष्य आक्रोश में नहीं होता, वह सदैव होश में होता है।यही कारण है ये कविताएं बड़ी सहजता से हमारे समय का आख्यान रचती हुई दिखाई देती हैं।बावजूद इसके सजगता अनिवार्य है। **रूपान्तरण** खंड की भी सभी कवितायें अच्छी है, तथापि दो कवितायें मुझे बड़ी प्रिय लगीं- **कामना में** और **प्यार है**। ये चित्रात्मक कवितायें हैं। खासकर पहली कविता जिसमें एक चिड़िया सकोड़े में चोंच डुबाने के पहले बीस बार इधर-उधर मुआइना करती है। एक हम हैं कि तृष्णा की नदी में तिनके की तरह लापरवाह बह जाते हैं। दूसरी कविता प्यार में जो प्रेमी की परवाह है उसे हम सब महसूस करते हैं पर कवि ने उसका दृश्यांकन किया है। मैंने इन कविताओं को इसलिए उद्धृत नहीं किया कि पाठक इन्हें स्वयं पढ़ें और इनका सौन्दर्यबोध करें। मैं समझता हूँ कि **अनकहा कहा** प्रेम, भक्ति एवं प्रकृति की त्रिवेणी है। आप इसमें अवगाहन कर मन तरोताजा कर सकते हैं।

-सहायक निदेशक (रा.भा.)
केरेप्रौअसं, केरेबो, बेंगलूरु

कहानी

निराश्रिता

-आर.डी. शुक्ल

"वहीं रुक जाओ, एक कदम भी बढ़ाया तो मुझसे बुरा कोई नहीं होगा ।" रजनी अपने सिर पर रखे लकड़ियों समेत पीछे मुड़ी और वहीं जड़वत खड़ी हो गयी । मोहन दौड़ता हुआ आया और रजनी के सिर पर रखी लकड़ियों को धक्का देकर वहीं गिरा दिया । रजनी ने तो सोचा भी नहीं था कि उसकी डेढ़ घण्टे की मेहनत यूं ही गिरकर बिखर जाएगी । वह नीचे पड़ी टहनियों को घूर रही थी और मोहन उसके चेहरे को- "मैं बड़ी देर से देख रहा हूँ-मेरे आम के बगीचे से पट-पट टूटने की आवाज आ रही है, यह तो अब पता चला कि इस आवाज के पीछे तुम्हारा हाथ था, अब यह भी बता दो तुमने मेरी बाग से आमों को तोड़कर कहाँ छिपा रखा है?" रजनी ने कहा- "भला मैं कच्चे बिल्कुल छोटे टिकोरों को तोड़कर क्या करूगीं, मैं तो इन सूखी टहनियों को तोड़कर आज रात अपने घर का चूल्हा जलाना चाहती थी। दुर्दिन के वक्त इल्जाम मत लगाइए बाबू! मैंने आपके बाग से लकड़ियां जरूर तोड़ी है लेकिन एक भी टिकोरों को हाथ नहीं लगाया ।" मोहन की नियति कुछ ठीक नहीं लग रही थी और रजनी जल्द घर पहुंचना चाहती थी। "देखिए बाबू ! शाम हो गयी है, मेरे 2 छोटे-छोटे बच्चे हैं । उन्हें घर छोड़कर आयी हूँ, अब और देर हुई तो वे भी परेशान होंगे । मेरा आदमी भी दो वक्त की रोटी जुटा कर घर आ रहा होगा। मुझे जाने दीजिए, बच्चे भी भूख से व्याकुल होंगे, अब और देर हुई तो वे परेशान हो जाएंगे ।" इतना कहते-कहते वह नीचे गिरी टहनियों को इकट्ठा करने लगी और गट्ठर बनाकर सर पर रखी भी नहीं थी कि मोहन ने उसे फिर रोक दिया ।

"मुझे पता है–तुमने आम भी तोड़ा है, चुपचाप उन्हें दे दो, नहीं तो मैं खुद ही ढूढ लूंगा", कहते हुए मोहन उसकी ओर बढ़ा। रजनी को अब डर लगने लगा था । वह आगे किसी अज्ञात अनहोनी से सहम उठी थी । उसके अंदर न जाने कितने कुत्सित विचार घुमड़ने लगे थे । भय अपना विशाल रूप बढ़ाता जा रहा था। कहीं ऐसा न हो कि आज मेरे जीवन का अंतिम दिन हो। अपनी जिम्मेदारियों और वर्तमान परिस्थितियों से जूझती उसकी भावना उसे शक्तिहीन बना रही थी । अचानक उसे अपने बच्चों की याद आयी और उसके अंदर का भय जैसे काफूर हो गया । वह अचानक चण्डी का रूप धारण कर चुकी थी । इसके पहले कि मोहन उस तक पहुंच पाता उसकी आंखें क्रोध से लाल हो चुकी थी । टूटी हुई लकड़ियों में से एक लकड़ी निकालते हुए उसने कहा-"अब आप वहीं रुक जाइए बाबू। एक कदम भी आगे बढ़ा तो पैर तोड़ दूंगी ।" औरत का यह रूप मोहन पहली बार देख रहा था । सारी घटनाएं एक बड़े बाग के बगल से गुजरने वाली पगडंडी पर हो रही थी । बिलकुल वीरान जगह, शाम का वक्त, सूर्य देवता शाम के वक्त की लालिमा समेटे चक्राकार रूप में जैसे घटनाओं के प्रत्यक्ष साक्षी बने हों । मोहन भी अब समझने लगा था-यदि उसने कुछ भी गलत कदम उठाया तो उसे भारी पड़ सकता था ।

मोहन शांत स्वर में बोला-"तुम मुझे गलत समझ रही हो । मैं तो सीधी तरह बोल रहा हूँ- यदि तुमने आम छिपा रखे हैं तो मुझे बता दो ।" "मैं सब समझती हूँ बाबू! इस बाग में भला एक भी आम है क्या-जिसे तोड़ा जा सके । इन नन्हें टिकोरों का मैं क्या करूँगी । आपकी निगाहें ठीक नहीं है । हाँ! मैंने लकड़ियां जरूर तोडी है जो आपके किसी काम की नहीं है ।"

रजनी अब आश्वस्त हो गई थी और बड़े निर्भीक कदमों से यथाशीघ्र घर पहुंचना चाहती थी । तेज कदमों से चलती हुई वह घर पहुंची तो देखती है – वहाँ दोनों बच्चे नहीं है – उसने सोचा, "शायद यहीं कहीं खेल रहें होंगे, अभी आ जाएंगे" । एक घंटा बीत गया, बच्चे नहीं आये । अब रजनी के मन में तमाम आशंकाएं उभरने लगी थी । वह घर के बाहर आई और आस-पास आवाज देकर पुकारने लगी । "सुरेश कहाँ हो, तुम्हारा भाई उमेश कहां गया ।" उसकी जोर-जोर की आवाज से आस-पास के लोगों का ध्यान भी अब उधर ही केंद्रित होने लगा था । वह एक-एक करके सबसे पूछ रहीं थी – "मेरे बच्चे घर में नहीं है-आप सबने कहीं देखा है क्या?" हर व्यक्ति ने नकारात्मक जवाब ही दिया ।

काफी तलाशने के बाद जब वे नहीं मिले तो रजनी का दिल तेज गति से धड़कने लगा । अकस्मात् उसके मन में विचार आया- हो सकता है उसके पति "दिलीप" आये हो और बच्चे उनके साथ कहीं निकल गये हों । इधर-उधर तलाशने के बाद भी जब बच्चे नहीं मिले तो घर जाकर देखना चाही, शायद दिलीप बच्चों के साथ घर आ गये हों । वह भागी-भागी घर गई तो देखती है- दिलीप नशे में धुत पड़ा है- रजनी को देखती ही वह चिल्लाने लगा-"कहां गायब रहती हो, जब देखो घर से फरार ही रहती हो, कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ, बच्चे कहां गये, तुम कहां से आ रही हो ।"

उसकी लड़खड़ाती आवाज से रजनी को लग गया था- वह आज भी पीकर आया है । उसके लिए यह कोई नई बात नहीं थी । रोज ही तो लगा रहता था । रोज–रोज की खट–पट से वह तंग आ चुकी थी । लेकिन आज वह सोच ही नहीं पा रही थी क्या करे? क्या कहे? किससे कहे । वह अपने भाग्य को कोस रही थी । दिलीप से उसने सिसकते हुए कहा-"बच्चे नहीं मिल रहे हैं । मैं उन्हें खोजने ही घर से बाहर गयी थी । तुम्हें तो जैसे घर से कुछ लेना-देना ही नहीं है । अब पड़े क्या हो, उठो । चलो उन्हें ढूढ़ते हैं। समझ ही नहीं पा रही हूँ- कहाँ जाएं- कहाँ खोजें । मैं काफी देर से बच्चों को ढूंढ रहीं हूँ । भागी-भागी घर आयी-यह सोचकर कि शायद तुम्हारे साथ बच्चे कहीं गये हों । अब तो मेरा दिल बैठा जा रहा है ।" दिलीप को जैसे कोई विशेष फरक ही न पड़ा हो । वह बेसुध पड़ा था और रजनी रोए जा रही थी । बड़ा ही अजीबोगरीब माहौल था । मां की ममता उसे झकझोर रही थी और वह असहाय पर कटे पक्षी जैसा फड़फड़ा रही थी । बहुत देर तक वह यहाँ रुक नहीं सकी और निकल पड़ी- अकेले जानी-पहचानी गलियों और सड़कों पर ।

रजनी से रास्ते में जो भी मिलता-बस यही पूछती-"आपने दो बच्चों को साथ में देखा है, एक छह साल का, दूसरा नौ साल का, लम्बा चेहरा, छोटे-छोटे बाल ।" हर जगह से उसे "नहीं" उत्तर ही मिलता । "नहीं" सुनते-सुनते उसकी आशाएं क्षीण होती जा रही थी । वह बिलकुल असहाय महसूस कर रही थी । थकान भी लग रही थी । अपनी चिंता को छोड़, वह केवल सुरेश और उमेश के बारे में सोचती जा रही थी । कहां होंगे मेरे बच्चे, कैसी स्थिति में होंगे । सुबह 11.00 बजे के पहले खाना खाए थे, अभी तो भूख से तड़प रहे होंगे । हे प्रभु! अब और प्रतीक्षा मत करवाइए मेरे बच्चों को मुझसे मिला दीजिए । यही होता है, ममत्व । मां अपने बच्चों में खुद को न्यौछावर कर देती है । बच्चों के बिना उसे एक पल भी अच्छा नहीं लगता । लगता है- बच्चों में ही उसकी जान बसती है । धन्य है मां और उसका ममत्व । नि:स्वार्थ प्रेम और वियोग की स्थिति में माँ पागल हो जाती है । सानिध्य सुख न मिलने से उसकी अंतरात्मा करुणा-क्रंदन करने लगती है । वात्सल्य विमुख होकर वह रह ही नहीं सकती ।

ढूंढते-ढूंढते रजनी अब सड़क मार्ग पर आ गई थी । वह पूरी तरह थक चुकी थी, पर पता नहीं कैसे उसके पग अथक गति से आगे बढ़ रहे थे। बच्चों के अलावा उसे और कुछ दिख ही नहीं रहा था । काश, उसके पति दिलीप भी साथ देते, तो शायद वह इतनी व्यथित नहीं होती । एक तो गरीबी ऊपर से ऐसा पति । इसे भाग्य की विडंबना ही कहेंगे ।

दिलीप ने कभी उसे सुख नहीं दिया । दो वक्त की रोटी भी वह मुश्किल से जुटा पाती थी । उसके बच्चों की परवरिश भी जैसे-तैसे ही हो रही थी । कुपोषण के चलते बच्चों का विकास भी वैसा नहीं था जैसा होना चाहिए था । घर पर कोई ऐसा दिन नहीं गुजरता था जिस दिन दिलीप से उसकी झड़प न होती हो । वह रोज पीकर आता था । रजनी उसे टोक-टोक कर थक चुकी थी । पिछले कई दिनों से वह सोच रही थी - क्यों न वह खुद कुछ घरों में काम करके गुजर-बसर करे । दो बच्चों को संभालना उसकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी थी । अब बच्चे कुछ बड़े हो गये हैं तो अन्य कार्यों के साथ-साथ कुछ पैसे कमाना, उसे आवश्यक-सा प्रतीत होता जा रहा था । दिलीप घर की जिम्मेदारियों से बेखौफ था । बच्चे जैसे-तैसे ही पल रहे थे, रजनी उन्हें पढ़ाना चाहती थी पर उसके सपने धरे के धरे रह गये थे ।

रात के 10 बज चुके थे । रजनी को अभी भी बच्चों का कुछ पता नहीं चला था । वह घबराई हुई थी - समझ ही नहीं पा रही थी-कहाँ जाऊँ। ढूढ़ते-ढूढ़ते वह थक कर चूर हो चुकी थी । अंतत: उसे कुछ दूर रोने की आवाज आयी और वह उसी दिशा में चल पड़ी । कुछ दूर चलने के बाद वह सड़क के किनारे सीमेंट की बनी बेंच पर अपने छोटे बच्चे 'उमेश' के रोने की आवाज पहचान गई। एक भी पल गवाए बिना वह बेतहाशा दौड़कर वहाँ पहुंचना चाहती थी । वहां जाकर वह देखती है- सुरेश उसी बैंच पर लेटा हुआ है । उसे देखती ही वह घबरा गई । क्या हो गया मेरे बच्चे को-सोचकर वह सिहर उठी । इसके पहले वह उसे उठाती-उमेश ने सिसकते हुए कहा- "देखो न मम्मी, यह उठ नहीं रहा है, मुझे भूख भी लगी है, हम दोनों तुम्हें ढूढ़ते-ढूढ़ते यहाँ आ गये, अब मैं अकेले क्या करूँ, तुम कहाँ चली गयी थी मम्मी ।" रजनी की आंख से आंसू जैसे ही बच्चे के मस्तक पर पड़े 'क्या हो गया मम्मी' कहकर उमेश उससे लिपट गया ।"कुछ नहीं उमू"-प्यार से वह अपने छोटे बच्चे को उमू कहकर बुलाती थी । रजनी करीब की एक छोटी दुकान से पानी लाई और सुरेश के मुंह पर पानी की छीटें दिए।

सुरेश मुंह पर पानी पड़ते ही उठ बैठा । "क्या हो गया "रेशू", ऐसे क्यों पड़े हो । कुछ नहीं मां, मैं तो उमू के साथ तुम्हें खोज रहा था-अचानक ही थककर यहाँ सो गया-हम दोनों को भूख लगी थी मां" । रजनी की आखों में आँसू आ गये । उसने सोचा चाय की दुकान से ब्रेड लेकर बच्चों को खिला दे, पास में पैसे न होने से वह बिलकुल लाचार थी । अपनी पीड़ा से वह व्यथित हो उठी । किंकर्तव्यविमूढ की स्थिति में थी वह। अंतत:, उसे ध्यान आया घर में सुबह का चावल पड़ा है । वह जल्दी-जल्दी बच्चों के साथ घर पहुंचना चाहती थी । दोनों बच्चों को साथ लेकर वह घर पहुंची तो देखी, दिलीप अभी भी बेसुध लेटा हुआ है। उसने दिलीप को आवाज देकर कहा- "तुम अभी भी पड़े हुए हो, तुम्हें बच्चों का बिलकुल ध्यान नहीं, कैसे बाप हो तुम, अरे कुछ तो शरम करो ।" अभी रजनी को जल्दी-जल्दी बच्चों को कुछ खिलाना था-इसलिए वह व्यर्थ समय नहीं गंवाना चाहती थी । भागकर चावल का पतीला उठाई ही थी कि उसे यह बिलकुल खाली जान पड़ा । ढक्कन उठाकर देखती है तो उसे यह बिलकुल खाली पड़ा मिला। अब वह समझ चुकी थी कि इसे दिलीप ने ही खाया होगा । दिलीप से कुछ पूछना बेकार था। फिर भी, वह अपने आपको दिलीप को जगाने से रोक न सकी । उसने दिलीप के सिर को हिलाते हुए बोला- "बच्चे भूख से व्याकुल हैं, घर में थोड़ा चावल बचा हुआ था, उसे भी तुम खा गया, क्या काम पर से आते समय कुछ आटा, दाल लाए थे?" दिलीप ने कहा-"सोने भी नहीं देती, बासी चावल रखती हो, न दाल न सब्जी, जैसे-तैसे सूखा चावल नमक मिलाकर खाया हूँ।" "तुम्हारी मति मारी गयी है क्या? घर में अन्न का एक दाना भी नहीं, कुछ पैसे भी नहीं देते हो, बच्चे भूख से तड़प रहें है, तुम्हें थोड़ा भी अफसोस नहीं।" रजनी ने तेज आवाज में कहा ।

दिलीप को रजनी पर अब गुस्सा आ गया । उसने दो-चार थप्पड़ जड़ दिए । बच्चे अभी भी जग रहे थे। उन्हें अच्छा नहीं लग रहा था, लेकिन क्या करते, बच्चे तो बच्चे ही होते हैं । रजनी को अपने भाग्य पर रोना आ रहा था । दिलीप आये दिन अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा था । आज तो हद ही हो गयी-परेशानी बांटने के बजाए वह रजनी पर चिल्लाये जा रहा था । बीच-बीच में उसे प्रताड़ित भी कर रहा था । रजनी सिसकने लगी। उसे सूझ ही नहीं रहा था कि क्या करें? अचानक उसे ध्यान आया कहीं चने का सत्तू रहा हुआ है । ढूढ़ कर वह इसे ले आई और थोड़ा नमक मिलाते हुए इसे घोलकर बच्चों को दो कटोरे में दिया । वाह रे नियति ! सोचते-सोचते उसकी आंखों से आंसू टपक रहे थे । सत्तू के घोल में उसके आंसू भी टपक पड़े । वह बच्चों से छिपाते हुए घोल को पीने के लिए कटोरा पकड़ा दी। बच्चे तो भूख से व्याकुल थे ही । वे उसे पूरा पी गये ।

रजनी पूरी रात सो नहीं सकी । एक-एक करके तमाम पूर्व-प्रसंग उसके मस्तिष्क में आते रहे और वह सोच-सोच कर सिसकती रही । वह दिलीप को भी छोड़ना नहीं चाहती थी । दारू पीने के बाद दिलीप असहाय हो जाता था, रजनी उसका पूरा ध्यान रखती थी । जैसे भी हो वह निरंतर प्रयास करती थी कि दिलीप सुधर जाए लेकिन उसके सारे प्रयासों पर पानी फिर जाता था ।

स्त्री के कई रूप होते हैं, कभी वह पत्नी की भूमिका निभाती है तो कभी मां का । विवाह के पूर्व पुत्री का, बहन का, भाई का रिस्ता निभाते-निभाते एक दिन ऐसा आता है जब उसे यह घर ही छोड़कर जाना पड़ता है । नये घर में नये अरमानों को संजोते हुए वह पति के घर का सदस्य बन जाती है और अपने-आप को वहाँ के परिवेश में रचने-बसने का बीड़ा उठा लेती है । नये घर में पति को अपना सर्वस्व समझने लगती है और यह उम्मीद करती है कि हर स्थिति में पति उसका साथ देगा, और वह सुख-दुख में बराबर का हिस्सेदार होगा । रजनी को प्रारंभ में कोई तकलीफ नहीं थी । दिलीप का व्यवहार उसे अच्छा लगता था और वह अपने आप में काफी खुश थी । उसे क्या पता था कि कालांतर में उसकी भाग्य विचित्र करवट लेनी वाली है । वक्त गुजरने के साथ-साथ दिलीप बिलकुल बदल चुका था । नशे की उसे ऐसी आदत लगी कि वह बाल-बच्चों से भी तटस्थ रहने लगा था । रजनी ने इसे अपनी नियति समझकर उसे हर स्थिति में स्वीकार कर लिया था । नोका-झोंकी से अब स्थिति मार-पीट तक आ पहुंची थी । रजनी इसे भी स्वीकार कर चुकी थी परंतु बच्चों को लेकर चिंतित रहने लगी थी । पहले तो दिलीप घर का थोड़ा बहुत ध्यान रखता भी था, अब तो वह बिलकुल बेफिक्र हो चुका था-न पत्नी की चिंता, न बच्चों की ।

पूरी रात जगने के उपरांत रजनी ने अंतिम निर्णय ले लिया था- सुबह दिलीप को उठने का इंतजार कर रही थी । उसने सोचा "आज गंभीरता से दिलीप से बात करूंगी, उसे रास्ते पर लाने का अंतिम प्रयास करूंगी" । बच्चों के भविष्य के लिए उसे

यह आवश्यक प्रतीत हो रहा था । पति जैसा भी हो, रजनी उसे छोड़ना नहीं चाहती थी । उसे ऐसा लग रहा था कि आज नहीं तो कल, दिलीप की चेतना जगेगी और वह अपनी जिम्मेदारियों को संभाल लेगा । सब कुछ विपरीत होता नजर आ रहा था। पिछली रात दिलीप, रजनी को प्रताड़ित कर चुका था । स्थितियों से अनभिज्ञ उसे सिर्फ अपने बारे में चिंता थी । रजनी सब कुछ सहते हुए सोची-सुबह उठने पर दिलीप को अपने कृत्यों पर ग्लानि होगी और वह निश्चय ही इस पर खेद प्रकट करेगा और स्थिति सामान्य हो जाएगी ।

"कहाँ मर गई। कब से उठा हूँ और इंतजार कर रहा हूँ- चाय दोगी-तुम निठल्ले की तरह पड़ी हुई हो", दिलीप चिल्लाया । रजनी ने शांत भाव से कहा- "देखो सुबह-सुबह तो शुभ-शुभ बोलो, घर में न चाय की पत्ती, न चीनी, न दूध-किस चीज की चाय बनाऊँ-चूल्हा जलाने के लिए घर में सिर्फ लकड़िया पड़ी है-कल से घर में कुछ नहीं हैं और तुम पूरा दिन मजदूरी करने के बाद अन्न का एक दाना भी नहीं लाये, बच्चे भूखे सो गये और तुम हो कि तुम्हें चाय की पड़ी है ।" दिलीप का पारा चढ़ गया, बोला- तुम मुझसे कल की मजदूरी का हिसाब पूछ रही हो, तुम्हें चिंता होनी चाहिए घर कैसे चलेगा- उल्टा हमसे जबान लड़ा रही हो- कहते हुए उसने रजनी के बाल खींच लिए - रजनी चिल्ला उठी-- प्रतिशोध के बजाए वह रोये जा रही थी । सिसकते हुए उसने कहा- "दिलीप तुम सोचने-समझने की क्षमता खो बैठे हो, अनायास हमें प्रताड़ित कर रहे हो, तुम चाहते क्या हो ? यदि मेरे साथ नहीं रहना चाहते तो बता दो । दिलीप क्रोध से चिल्लाया-हाँ मुझे नहीं चाहिए ऐसी पत्नी, तुम चली जाओ, अभी घर से निकल जाओ ।

रजनी सिसकती रही । बड़ी देर तक दिलीप और रजनी के बीच खामोशी व्याप्त रही । इस बीच रजनी न जाने क्या-क्या सोचती हुई सिसकती रही । आंसू थमने का नाम ही नहीं ले रहे थे । कभी उसे दिलीप की भावी विरह वेदना सता रही थी तो कभी बच्चों के भविष्य की चिंता । न जाने कितने विचार उसके मन में आते और वेदना छोड़कर चले जाते। शायद किसी गंभीर निर्णय की पूर्व-स्थिति उसे आगाह कर रही थी और वह ऊहापोह की स्थिति में फंसती चली जा रही थी । काफी देर तक वह दिलीप का पैर पकड़कर खूब रोई थी । अकस्मात् वह उठी- उमू को उसने गोद में उठाया और रेशू की उंगली पकड़े निकल पड़ी घर से जानी-पहचानी सड़कों को पार करते हुए वह पहुंच चुकी थी-अनजान राह पर । रजनी का भाग्य और बच्चों का भविष्य उसे खींचे चला रहा था।

- पूर्व उप निदेशक (रा.भा.)
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु

***

यह जिंदगी

-सुनील कुमार

मैं जो करना चाहता हूँ
कर नहीं पा रहा हूँ ।
मैं जो करना नहीं चाहता हूँ
लेकिन किए जा रहा हूँ ।
अपनी यह जिंदगी जिए जा रहा हूँ
अपने मन को तसल्ली दिए जा रहा हूँ।

क्या करूं क्या न करूँ
बस इसी उलझन में जिए जा रहा हूँ।
लोग कहते है जिंदगी खुबसूरत है
इसी खुबसूरती को ढूंढते हुए जिए जा रहा हूँ।
कौन अपना, कौन पराया, पहचाने कैसे
इसी सोच में जिए जा रहा हूँ ।

ये जिंदगी मैं अपने तरीके से जीना चाहता हूँ
मुझे कोई ऐसा पल दे खुशी दे
जिसे मैं जी भरकर जीना चाहता हूँ
जिंदगी में अमन चैन चाहता हूँ।
मैं जो करना चाहता हूँ
कर नहीं पा रहा हूँ ।

- अधीक्षक,
राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन,
बेंगलूरु

गाँधी जी आज भी जीवित हैं

-पंकज कुमार

गांधी दर्शन के जीवन्त स्वरूप का अगर साक्षात्कार करना चाहें तो हमारे झारखण्ड के टाना भगतों के दैनिक जीवन पद्धति को देखने का समय निकालें। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आज भी गाँधी जी जिंदा हैं हमारे झारखण्ड के उन गाँवों में जहाँ हमारे टाना भगत रहते हैं। ये पूरी तरह से प्राकृतिक जीवन जीते हैं। इनका घर, इनके कपडे, इनका भोजन, इनका रोजगार सब में गाँधी जी की सादगी, सौम्यता और सुन्दरता दिखती है। मैंने तो अपना जीवन इनके नाम ही कर दिया है। इनके लिये जीना है और इनकी बेहतरी के लिये प्रयास करते करते प्राण तजुंगी। ऐसा संकल्प लेकर चली हूँ। यहाँ पर जितनी चीजें आप देख पा रहें हैं वो सब इन्हीं की बनाई हुई हैं। ये जो पहनते हैं यही अपनी खादी है। ये जो अन्न खाते हैं ढेंकी का ये वही चावल हैं, देखिए कितना लाल है। दाल भी है । ये साग हैं। सब पूर्ण रूप से प्राकृतिक और सात्विक।

झारखण्ड की राजधानी राँची के मोरहाबादी मैदान में लगे खादी मेले में टाना भगतों द्वारा तैयार सामग्री के एक स्टॉल के किनारे खड़े होकर मैं उस बहन की बातों को बड़े गौर से सुने जा रहा था। अपने संभावित ग्राहक भाई को बड़ी सादगी और सुन्दरता के साथ जितनी बातें वो बताती जा रही थीं मैं कौतुहल और आश्चर्य के मिले जुले भावों के साथ भावनात्मक भी होता जा रहा था। मैं अपने आपको रोक न पाया, उनके स्टॉल पर पहुँचकर ढेंकी से कुटे हुए एक किलो का लाल चावल का एक पैकेट ले लिया। सचमुच में बचपन की यादें ताजा हो गई, जब गाँवों में दादी ढेंकी से कुटे हुए लाल चावल का माड-भात खाने को देती थीं। उस माड-भात में कितनी मिठास होती थी।

मैं उस स्टॉल के सामने बैठ गया और उनसे बातें करने लगा। पिछले कई वर्षों से झारखण्ड के टाना भगतों के सर्वांगीण विकास में लगी डा. सुनिता गुप्ता ने बताया कि मेरे पिता आजाद हिन्द फौज के एक निर्भीक सिपाही थे। राष्ट्रप्रेम की निर्मल धारा मेरे पिता के रग-रग में बहती थी। उसी प्रांजल धारा के निर्मल प्रवाह में मैं भी प्रवाहित होती गई। पिता का संघर्ष कहीं-न-कहीं मेरे मन-मस्तिष्क में राष्ट्र के लिए कुछ कर गुजरने का साहस मेरे अंदर भरता गया। मैं समाज हित के कार्यो से जुडती गई। कई प्रतिष्ठित स्वयंसेवी संगठनों में मैंने कार्य किया। परंन्तु जिस आत्मिक संतुष्टि की तलाश में मैं थी वह नहीं मिल पा रही थी। मैं भटकती रही और मेरी तलाश भी निरंतर चलती रही। मैं चाहती थी कि समाजसेवा के एक ऐसे क्षेत्र से जुडकर कार्य करूँ जहाँ काम करते हुए मुझे अपने जीवन की पूरी सार्थकता समझ में आ जाय। एक दिन इसी उधेड़बुन में भटकती हुई मैं राँची के मोरहाबादी स्थित गाँधी जी की प्रतिमा के नीचे थककर बैठ गई। घंटों बैठी रही वापस घर पहुँचने की जल्दी इसलिये भी नहीं थी क्योंकि मेरे परिवार वाले भी मेरे विरूद्व हो चुके थे। वे चाहते थे कि मैं भी एक आम लड़की की तरह शादी कर लूँ अपना घर बसा लूँ परंतु मुझे हमेशा से यही लगता कि मैं इसके लिए बनी नहीं हूँ। मेरे इस फैसले से मेरे परिवार वाले नाराज चल रहे थे। मैं बैठी रही, बस बैठी रही गाँधी जी की छत्रछाया में। मेरा ध्यान गाँधी जी की ओर था और मैं निरंतर उन्हें निहारती जा रही थी; बस निहारती जा रही थी। चुपचाप सोचती रही उनके जीवन के बारे में उनके द्वारा किये गये संघर्षों के बारे में। दक्षिण अफ्रीका में गुजर रही उनकी खुशनुमा जिंदगी के बारे में, फिर सब कुछ त्यागकर स्वयं को अपने देश के लिए समर्पित कर देने के बारे में। अन्ततः भारत को विदेशी गुलामी से आजाद कराते हुऐ विश्व को 'वैष्णव जन तो तेणे कहिए जे पीर पराई जाणे रे' के संवेदनशील संदेश से पूरे विश्व को करूणा के सूत्र में पिरोने की कोशिश में अपने को खपा देने के जज्बे को मैं महसूस करती रही। अपने जीवन को पवित्र और प्राकृतिक खूबसूरती से सजाकर उन्होंने जैसा जीवन जिया वह वास्तव में हमारे मानव मात्र के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

शाम ढल चुकी थी। अंधेरा बढने लगा था लेकिन गहराते अंधेरे के बीच आशा की एक छोटी किरण नजर आने लगी थी। मुझे अपनी मंजिल का पता मिल चुका था। मैंने झारखण्ड में टाना भगतों के जीवन को देखा। उनके जीवन दर्शन को देखा। मैं अब अच्छी तरह से जान चुकी थी कि गाँधी जी आज भी जीवित हैं टाना भगतों के रूप में। मैं तब से उनके साथ हो गई या यँ कहूँ कि उनसी हो गई। उनके प्राकृतिक जीवन दर्शन को समाज के सामने प्रस्तुत करने के मिशन में लगी हूँ।

- दिव्यांशु विल्ला
जयप्रकाश नगर
अरशुंदे, कन्के, रांची-834 006

मैं एक स्मार्ट फोन बनना चाहता हूँ।

-डॉ. चेनपल्ली रवि शंकर

रात के खाने के बाद एक शिक्षिका ने अपने छात्रों द्वारा लिखे गए निबंध-पत्रों को ठीक करना शुरू कर दिया। उसके बच्चे सो रहे हैं। पति एक कुर्सी पर बैठा है और अपने स्मार्ट फोन पर 'कंडी क्रश' में मग्न है। सुधार के लिए आखिरी पेपर पढ़कर शिक्षिका चुपचाप रो रही थी। पति ने सिर घुमाया और कुतों के रोने की आवाज सुनकर हैरान रह गया।

"क्या हुआ"

कल मैंने अपने दिवतीय कक्षा के छात्रों को गृहकार्य दिया।

"आप क्या बनना चाहते हैं" विषय पर कुछ लिखें।

"परंतु देखो! मैं इस आखिरी पेपर को सही करने के लिए पढ़ते हुए रोना बंद नहीं कर सकती", पति उत्सुक था, "उसने ऐसा क्या लिखा जिससे वह रो पड़ी"

शीर्षक इस प्रकार हैं-मैं एक स्मार्ट फोन बनना चाहता हूँ।

दादा-दादी को स्मार्ट फोन पसंद है, वे स्मार्टफोन का बहुत ख्याल रखते हैं। मुझसे अधिक पिताजी जब ऑफिस से थके हुए घर आते है, तो स्मार्ट फोन उन्हें आराम देता है। पिताजी के पास स्मार्ट फोन के लिए समय है। परंतु मेरे लिए नहीं, क्योंकि मेरे साथ खेलने से मेरे पिता को आराम नहीं मिलता। अगर दादा-दादी महत्वपूर्ण काम कर रहे हों, तब भी स्मार्ट फोन बजता है, वे फोन उठाएंगे और एक या दो रिंग से पहले इसका जवाब देंगे, लेकिन मैं कितनी भी बार फोन कर लूं, वो मुझे तरजीह नहीं देते !! मैं रो भी रहा हूँ तो वो मेरी जगह स्मार्ट फोन के साथ वक्त बिताते हैं। वे मुझसे ज्यादा स्मार्ट फोन से खेलना पसंद करते हैं। जब वे अपने स्मार्ट फोन पर बात कर रहे होते हैं, तो वे मेरी बात नहीं सुनते। मेरे लिए बस इतना ही मायने रखता है। अगर मुझसे बात करते समय घंटी बजती है, तो वे तुरंत फोन का जवाब देंगे। दादा-दादी स्मार्ट फोन की देखभाल करते हैं! हमेशा उसके साथ रहा, अत्यन्त सराहनीय, इसे इतना प्यार करता हूँ। इसके साथ आराम करो !! वे अपना खाली समय इसके लिए समर्पित करते हैं !! अगर मैं एक दिन बात न करूँ तो उन्हें कोई आपति नहीं है, लेकिन अगर स्मार्ट फोन एक घंटे भी काम नहीं करता है, तो वे बहुत चिंतित हो जाते हैं। रात को सोते समय भी बगल में रख देते है, सुबह उठते ही हाथ में ले लेना" इसलिए मेरी इच्छा है मैं वह स्मार्ट फोन बनूँ जो मेरे दादाजी के पास हुआ करते थे। पत्नी पढ़ रही थी। सुन कर पति का दिल टूट गया। उसकी आँखे थोड़ी गीली हो रही थी..." किसने लिखा है?" उसने अपनी पत्नी से पूछा "हमारे बेटे ने"- आंसू बहाते हुए अपनी पत्नी ने कहा! चीजों का उपयोग करना चाहिए! बंधनों से प्यार होना चाहिए !! यदि कोई अन्य सभी बधनों से अधिक चीजों को प्यार करना शुरू कर देते हैं तो धीरे-धीरे मूल बंधन पीछे धकेल दिए जाते हैं। यह एक वास्तविक कहानी है तो कृपया सोचें कि इस कहानी में हर कोई माता-पिता न बनें।

- वैज्ञानिक डी (सेवानिवृत्त)
क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र,
केन्द्रीय रेशम बोर्ड,अनंतपुर

आत्ममंथन का समय है

-बुधराम यादव

हम युवा हैं तो हमारा फर्ज है यह
अब बुजुर्गों की निशानी को बचाएँ।
स्वप्न की बारात लेकर क्यों चलें हम
साथ उल्कापात लेकर क्यों चलें हम
रात के आगोश में बेहोश रहकर
घात या प्रतिघात लेकर क्यों चलें हम ।।
खुद जगें सबको जगाएँ नींद से अब
दिनबदिन झरती जवानी को बचाएँ।
क्रोध, हिंसा, क्रूरता, तकरार हावी ।
छल, कपट, सिरमौर, अत्याचार हावी
भूख, बेगारी निकाले प्राण हर दिन-
आमजन लाचार, भ्रष्टाचार हावी
निर्दयी, जिद्दी बदी की आँधियों से
नेकियों की राजधानी को बचाएँ।
आज साँसों से भला कैसी ठगी है।
मौन है पल, त्रास में हर जिंदगी है।
मेघ रुठे भूमि प्यासी जीव जंगल-
सब दुखी हैं आग दुनिया में लगी है।।
सूखती झीलें, सरोवर और नदियाँ
आँख के अनमोल पानी को बचाएँ।

- उच्च श्रेणी लिपिक
बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

साहित्य सौंदर्य की अवधारणा

-ईश्वर चंद्र मिश्र

हिंदी से संबंधित गतिविधियों के अंदर एक प्रतियोगिता रखी गई – साहित्य सौंदर्य प्रतियोगिता। शायद विषय का नयापन ही मुख्य आकर्षण था लेकिन साहित्य सौंदर्य की अवधारणा क्या है, और इस प्रतियोगिता में प्रश्न कैसे पूछे जाए, यह तय नहीं था। इस विषय पर गौर करें तो हिंदी भाषा का रचना संसार उसका साहित्य सौंदर्य है। इसमें गद्य साहित्य और पद्य साहित्य के साथ-साथ नाटक और आलोचना शामिल है। "लहरों का राजहंस" मोहन राकेश द्वारा लिखित इस नाटक का नाम साहित्य सौंदर्य है। "चांद का मुँह टेढ़ा है" (मुक्तिबोध की कविता पुस्तक) और वाणभट्ट की आत्म कथा (हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास) साहित्य सौंदर्य के उदाहरण हैं। ऐसा ही उदाहरण अनामिका की कृति "टोकरी में दिगंत है"। धर्मवीर भारती द्वारा लिखित "कनुप्रिया" ऐसी ही है।

साहित्य का सौंदर्य क्या भाषा का सौंदर्य भी हो सकता है? उत्तर होगा अवश्य। भाषा और साहित्य में जल और लहरों जैसा संबंध है। भाषा में उच्च चिंतन हो, रचनात्मकता की ताकत हो तो उसे साहित्य का सौंदर्य कहते हैं। जिस तरह जल की विशेष अवस्था लहर कहलाती है और लहरों को जल से अलग करके समझना कठिन है उसी तरह का संबंध भाषा और साहित्य में होता है। भाषा में लिखा और रचा जाने वाला गद्य कब साहित्य हो जाएगा, बताना कठिन है। साँप हँसता नहीं है। यह बहुत छोटा वाक्य है, लेकिन वस्तु कथन और सत्य कथन की सपाटता के अंदर व्यंजकता है। साँप यानी जीवन का शत्रु और हँसना मतलब जीवन की सुंदरता। हँसना मन की सहज अवस्था है। इसीलिए साँप हँसता नहीं में तात्पर्य हुआ, जीवन के शत्रु में जीवन का सौंदर्य नहीं होना। अतएव, एक छोटे वाक्य में साहित्य का सौंदर्य समावेशित हो सकता है।

हिंदी भाषा के मुहावरे और लोकोक्तियां इसके सौंदर्य हैं। मुहावरे और लोकोक्तियों में अलंकार, ध्वनि और भाव प्रायः उच्च कोटि के होते हैं। लालच बुरी बला, जहां चाह वहां राह, मन चंगा कठौती में गंगा जैसी कहावतों में अलंकार और ध्वनि का सौंदर्य है। नौ दो ग्यारह होना, आँखों का तारा होना, देश का कर्णधार होना जैसे मुहावरे भाषा सौंदर्य के उदाहरण हैं। साहित्य सौंदर्य की एक कसौटी रचना में उच्च चिंतन का उद्घाटन भी होता है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर का प्रसिद्ध ग्रंथ "संस्कृति के चार अध्याय" एक ऐसा ही उदाहरण है। दिनकर की कविता पुस्तकें 'रश्मिरथी", 'कुरुक्षेत्र" और 'उर्वशी" इस दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। निराला द्वारा रचित "राम की शक्तिपूजा" और "सरोज स्मृति" दो अलग भावभूमि से संबंधित रचनाएं हैं। जयशंकर प्रसाद की "कामायनी", जानकीवल्लभ शास्त्री की "राधा" और मैथिलीशरण गुप्त की "साकेत" साहित्य सौंदर्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। धूमिल की कृति "संसद से सड़क तक" फिर अलग है और दुष्यंत कुमार की गजलों का संकलन "साए में धूप" का रचना सौंदर्य और अलग है। इस तरह हिंदी की जिस कृति ने जनमानस को झक झोरने का काम किया, वह हिंदी भाषा के सौंदर्य के कारण हुए।

हिंदी भाषा में साहित्य का विपुल भंडार है। यह विपुलता और विस्तार हिंदी का साहित्य सौंदर्य है। प्रेमचंद को कथा सम्राट कहना उनके उपन्यासों और कहानियों के कारण हैं। 'गोदान" और "कर्मभूमि" को छोड़ दें तो हिंदी उपन्यास का इतिहास अधूरा होगा। जैनेंद्र का 'त्यागपत्र', धर्मवीर भारती का उपन्यास "गुनाहों के देवता" और सुरेंद्र वर्मा का उपन्यास "मुझे चांद चाहिए" तक पहुँचने का सफर "रेत समाधि" (गीतांजलि श्री) तक आकर मुकाम पाता है। हिंदी उपन्यासों और कहानियों का जो विस्तार है, पुनः हिंदी का काव्य संस्कार है, सब हिंदी भाषा का सौंदर्य है। इन सारी कृतियों को पढ़ पाना, और सबको समझ पाना किसी सामान्य व्यक्ति के लिए अत्यंत कठिन है। हिंदी में इस विशालता और व्याप्ति को साहित्य का अद्भुत सौंदर्य मानना ही पड़ेगा। कथा साहित्य में जीवन का चित्रण, समाज का चित्रण और मानवीय व्यक्तित्व के इतने पहलू उद्घाटित हैं कि हिंदी भाषा को अपने पर गर्व करने से कोई रोक नहीं सकता।

संस्कृत की परंपरा का संपोषण करते हुए हिंदी में अलंकारों का अनोखा संसार है। अलंकारों के कारण भाषा का सौंदर्य और भावों का सम्मोहन विविध प्रकार से घटित हुआ है। "लाली मेरे लाल की जित देखौं तित लाल, लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।"-कबीर की इस पंक्ति का सौंदर्य कौन नहीं जानता। शब्द की शक्तियां हिंदी भाषा में विविध प्रकार से उद्घाटित होती है। अभिधा, लक्षणा और व्यंजना के संदर्भ को समझे बिना साहित्य के सौंदर्य को समझना असंभव है। भाषा में लय और ध्वनि का सौंदर्य साहित्य के सृजन में मनोरम अध्याय जोड़ते हैः

"ठुमुक चलत रामचंद्र बाजत पैंजनिया;
धाई मातु गोद लीन्हा दसरथ की रनिया।"

इसलिए व्यंजकता की बात करना साहित्य के सौंदर्य में आएगा। महामहिम, लोकमान्य, मानदेय और मानहानि जैसे शब्दों के रचना विधान में समास है और गरिमा है। शब्द निर्माण के उपादान में संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्यय की भूमिका होती है। अव्यय और व्याकरण के अन्य विषय शब्द निर्माण में आवश्यक होते हैं। हमारे अंदर भाषा में सौंदर्य देखने की दृष्टि चाहिए। दृष्टि और दृष्टिकोण बदल जाएं तो सौंदर्य देखने की समझ बदल जाएगी। बिहारीलाल के दोहे, घनानंद के सवैये, गिरधर की कुंडलियां क्या गजब हैं? हिंदी कविता में भाव और शिल्प की ऐसी विविधता है कि इसका अध्ययन और रसास्वादन अकथनीय आनंद का विषय है।

हिंदी में काव्य प्रवृतियों के नाम जैसे वीरगाथाकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, छायावाद और प्रगतिवाद हिंदी भाषा के सौंदर्य के उदाहरण हैं। कवियों ने अपने उपनाम रखे हैं जैसे रसखान, घनानंद, निराला, मुक्तिबोध, दिनकर, बच्चन, नागार्जुन, धूमिल आदि। ये उपनाम बड़ी व्यंजकता लिए हुए है और ये भी भाषा सौंदर्य के उदाहरण हैं।

-सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त),
केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, बेंगलूरु

***

बदलते घर-परिवार

- विष्णु वर्मा

क्या बतलाउँ कि कैसा है
अपना घर परिवार।
ना लगता आगे का कोई
अब अच्छा आसार॥

चाल-चलन और तौर-तरीके
सारे बदल गए हैं
सदाचरण से रहित सभी
घर के लोग हुए हैं ॥

नहीं मान-सम्मान बड़ों का
ना होता सदव्यवहार ॥

कोई कैसी दशा में रहता
नहीं किसी से मतलब।
अपने में ही गुम रहते
अपने से ही मतलब ॥

इसी स्वार्थ में खण्ड-खण्ड
बिखरा-बिखरा परिवार ॥

बड़े बुजुर्गों की छाया में
बंधा रहा परिवार।
अब तो ना वह सोच रह गई
ना अपनापन प्यार ॥

जगह-जगह से टूट रही है
घर की जर्जर दीवार ॥

रात दिवस कर एक जन्म से
जिसने पाला-पोसा।
उस माँ को मिल रही उपेक्षा
तरह-तरह से धोखा।

सहनशीलता से बाहर है
बच्चों का व्यवहार ॥

घर का तो माहौल हमेशा
डर में डूबा लगता।
अनहोनी कब क्या हो जाए
यह अंदेशा रहता ॥

दर्द, उपेक्षा और द्वेष से
वो झिल है घर द्वार ॥

घोर निराशा से चिन्ता से
मन घुटता-घुटता रहता।
हे भगवान, बुला लो जल्दी
यह सोचता रहता।

नहीं समझ में आता कैसे
होता अपनों का प्यार ॥

- ग्राम-ककोली
पोस्ट-ककोली-224195
जिला-अयोध्या, उत्तर प्रदेश

कहानी

सनारा

-ममता शर्मा

'सना दी, इस बार मैं भी छुट्टियों में आपके साथ ही रहूंगी -' मैंने कहा। 'मेरे साथ क्यूं भला' सना दी ने मुस्कुराते हुए कहा।

सना दी मुस्कुराती तो लगता जैसे किसी ख़ूबसूरत-सी फिल्म का कोई ख़ूबसूरत-सा पात्र मुस्कुरा रहा हो; वे मुस्कुराती तो लगता कोई पेंटिंग कैनवस से बाहर निकाल आई हो और मुस्कुरा रही हो; और वे मुस्कुराती तो लगता जैसे किसी कहानी से निकलकर कोई पात्र मुस्कुरा रहा हो।

जाने क्यों, वे मुझे दुनियावी चीज़ों से अहलदा किसी रोमानी दुनिया की शख़्सियत लगतीं। शायद इसलिए कि उनकी ज़िंदगी में वह सब कुछ नहीं होता जो बाकियों की ज़िंदगी में हुआ करता। मसलन अपनी दैनिक चर्या में वे किसी बच्चे को लेकर स्कूल जाती नहीं दिखतीं; वे वीकेंड पर शहर जाकर शॉपिंग करती या फिर किसी रेस्तरां में समय गुज़ारती नहीं दिखतीं या फिर छुट्टियों में किसी हिल स्टेशन का या किसी ऐतिहासिक जगह का प्लान बनाती नहीं दिखतीं । उनकी ज़िंदगी की शाक-भाजी उतनी मुखर नहीं होती, जितनी स्कूल के अहाते में रह रहे दूसरे परिवारों की होती। ज़रूरतें तो उनकी भी होती ही होंगी पर वे सामने दिखाई नहीं देती। मुझे सना दी की ज़िंदगी का ये मौन बड़ा ही आकर्षित किया करता।
'आपके साथ रहना अच्छा लगता है इसलिए'

'मेरे साथ... कहाँ अच्छा लगता है किसी को मेरे साथ रहना... अच्छा लगता तो अविनाश आज मेरे साथ होते ... वे कहीं गुम हो जाती हैं और फिर दूसरे पल वापस भी आ जाती हैं। वे हंसने की कोशिश करती हैं।

उन्हें मैंने कभी भी खुलकर हंसते नहीं देखा था; पर उनकी मुस्कुराहट में एक अजीब-सा आकर्षण था, जैसे कोई बड़ी गहरी उदासी में आकंठ डूबा हुआ हो; इतने गहरे कि उदासी उसकी ज़िंदगी का हिस्सा बन गई हो और अब उसने उदासी से हैरान परेशान होना छोड़ दिया हो। उसी गहरी उदासी के बीच खिलते हुए कमल सी थी सना दी की मुस्कुराहट! स्टूडेंट्स सारे जा चुके थे सारे हॉस्टल ख़ाली हो चुके थे। मैंने बहुत कम बार ऐसा देखा था स्कूल को। हमेशा यही होता कि छुट्टियां शुरू होने से पहले ही वीरानी छाने लग जाती थी। बच्चों के जाने की देर होती और हफ़्ते भर के अंदर स्कूल गहरी और उदास शांति में डूब जाया करता। यह सब शुरू के एक सप्ताह तक तो अच्छा लगता जब बच्चों के शोर से ऊबा हुआ कैंपस ताज़ा ताज़ा शांति के आगोश में चला जाता लेकिन सप्ताह बीतते ही वह शांति वीरानी में बदल जाया करती। मुझे अपने पूरे करियर में उँगलियों पर गिनकर चार दफ़ा ऐसी वीरानी को देखने का मौका मिला था। मैं जानती थी कि सना दी छुट्टियों में कहीं नहीं जाती। लोग जानते थे कि वे इसलिए नहीं जाती क्योंकि उनका कोई है ही नहीं इस दुनिया में । वे पिछले 22 बरसों से स्कूल में थी और ये सच था कि उनमें से दस बरस मैंने ही उन्हें देखा था। उनका क्वार्टर बच्चों के हॉस्टल के पास था। बाकी टीचर्स के क्वार्टर कुछ अलग हटकर थे। फैमिली क्वार्टर और बच्चों के हॉस्टल के बीच एक दीवार थी; लेकिन वहां से एक रास्ता हॉस्टल की तरफ खुलता था। रास्ता जहाँ खुलता था वहीँ सना दी का मकान था। सना दी के क्वार्टर से गुज़र कर ही हॉस्टल तक पहुंचा जा सकता था यानी उनका क्वार्टर कतार का आख़िरी क्वार्टर था और उसके बाद हॉस्टल की बॉउंड्री शुरू हो जाती। वह क्वार्टर उन्हें सोच समझ कर ही दिया गया होगा क्योंकि उनका पूरा का पूरा समय बस बच्चों और हॉस्टल को ही समर्पित था और इस तरह हॉस्टल के क़रीब रहना उनके लिए लाज़िमी था।

मैंने जब पहली बार उन्हें देखा था तो उन्होंने गहरे हरे रंग की प्लेन साड़ी पहन रखी थी जिसके साथ गहरे बादामी, हरे और काले रंग का प्रिंटेड ब्लाउज़ था। वह कुछ अलग- सा था। वे अपने क्वार्टर में ताला लगा रही थीं और उन्होंने जब दरवाज़ा बंद किया तो उसपर जो नाम लिखा था, वह था सनारा। मझे यह नाम भी भा गया। लोग उन्हें सना दी कहा करते।
'यहाँ तुम्हें छुट्टियों में अच्छा नहीं लगेगा।' उन्होंने कहा था ।
'क्यों नहीं लगेगा भला, आप हैं न'

'मेरे साथ बोर हो जाओगी---' वे इस बार ज़रा ज़्यादा हंसी, थोड़ा खुलकर मगर हर बार की तरह उनकी हंसी में मुझे गहराई नज़र आई, ऐसी गहराई जिसमें उदासी के कतरे साफ़ नजर आ जाएँ।

'और वैसे भी इन स्कूल वालों ने मुझपर इतनी जिम्मेदारियाँ डाली हैं कि मुझे अपने लिए ही कभी वक़्त नहीं मिलता तो मैं तुम्हें कहाँ वक्त दे पाऊँगी; अब देखो न इस बार छुट्टियों में हॉस्टल के लिए शॉपिंग करनी है। मैडम ने ये सारी ज़िम्मेवारी मुझे ही दी है।'
'हॉस्टल के लिए शॉपिंग-- वो क्या है !' मैंने पूछा।

'मतलब हॉस्टल के लिए एकमुश्त सामान खरीदना है'
'आप अकेले करेंगी ये सब... '

'अरे नहीं साथ कुछ टीचर्स भी रहेंगी मिसेज़ कौल और विनीता कुमार भी हैं - ऑफिस से रंजन और सुमंत भी लेकिन ख़ास ज़िम्मेदारी तो रहती ही है; सारा कुछ सुपरवाइज़ करना होगा'

'तो मुझे भी ले चलिए न' मैंने बच्चे सी ज़िद की, अल्हड़ सी ज़िद। वे थोड़ा अटकीं ---शायद उन्हें यह सब झूठ जैसा लगा।

'सच्ची?'

'हाँ बिलकुल आप प्रिंसिपल मैम से बता कीजिये न - मैं आपको सबसे खास कंपनी दूंगी'

उन्होंने कुछ देर मुझे लगातार देखा शायद मेरी बात की सच्चाई को महसूस करने के लिए और फिर कहा---

'ये काफी अच्छा रहेगा, मुझे भी अच्छा लगेगा ---'

और वहीं से सना दी को जानने की शुरुआत हुई।

मुझे महसूस हुआ हम जिन लोगों के बारे में यह सोच लिया करते हैं कि वे अपनी ज़िंदगी को किसी अँधेरे में बंद कर देना चाहते है...दरअसल वे ऐसा कुछ नहीं सोच रहे होते हैं, बल्कि कभी-कभी तो वे इस इंतज़ार में ही होते हैं कि कोई उनसे बात करे, उन्हें टटोले।

कुछ ऐसी ही दिखी सना दी की ज़िंदगी। एक ऐसी दीवार-सी थी, हर कोई जिसके दूसरी तरफ़ देखने की कोशिश तो करता लेकिन फिर जैसे दीवार की ऊंचाई देख पीछे हट जाता।

'एक ख़ूबसूरत ज़िंदगी थी मेरी, वह सब कुछ था जो एक सामान्य औरत चाहती है --एक सुन्दर घर, ऊँचे ओहदे पर बैठा पति, जो उसे समाज में सर उठा कर जीने का मौका दे... मैं कोई महत्वाकांक्षी औरत नहीं थी... मेरा कोई अपना सपना भी नहीं होता था...मैं तो अविनाश के सपने अपनी आँखों से देख लिया करती थी... तुम समझ सकती हो, तुम भी तो एक औरत हो न' मैंने सर हिला कर हामी भरी।

वे सर्दियों के दिन थे, ऐसा लगता था सर्दियां हर साल एक नया रिकॉर्ड कायम करना चाहती थीं और हम दोनों स्कूल के फील्ड में अपने-अपने ग्रेट कोट की जेब में दोनों हाथ भर कर एक दूसरे के साथ चल रही थीं। सना दी इतना बोल सकती है, यह मैंने पहली दफ़ा जाना, उसी दिन।

'समाज में सम्मान, क्लब की शामें, वीकेंड की पार्टियां, बिना मतलब की शॉपिंग...अब वह सब सोचकर लगता है यह सब कुछ तभी तक अच्छा होता है जब तक आपकी ज़िंदगी किसी तेज़ रफ़्तार गाड़ी की तरह बिना रुके अपनी पटरी पर चलती जाये... आपके इर्द-गिर्द कितने लोग होते हैं और आप सोचते हैं, यह सब कुछ अंतहीन है हमेशा चलने वाला है तब तक, जब तक आपकी ज़िंदगी किसी हादसे से न गुज़र जाये ।' सना दी अपने मन की बात कर रही थी, बहुत ही तन्मयता से।

'आइये सना दी यहाँ बैठें' मैंने फील्ड के एक किनारे बनी पत्थर की खूबसूरत बेंचों की तरफ़ इशारा करके कहा। वे अचानक से मुड़ी और बेंच पर जाकर बैठ गयी मानो मेरे सुझाव का इंतज़ार ही कर रही हों।

'यही दस्तूर है ज़िन्दग़ी का सना दी... '

मेरे पास कहने को कुछ ख़ास नहीं था, और वैसे भी मैं कहने को उनके पास नहीं थी सिर्फ़ सुनने को थी।

'ये आदत मुझे पहले से ही थी... नहीं, आदत नहीं बीमारी कह लो या अब्नोर्मलिटी कहेंगे शायद। जानती हो, शब्द बड़े ही महत्वपूर्ण होते है और हमें ये तब तक महसूस नहीं होता जब तक हम शब्दों का ग़लत इस्तेमाल नहीं कर लेते। जब गलत इस्तेमाल हो जाता है और उस वेदना को हम महसूस करते हैं तो हमें पता चलता है, अरे इस एक ग़लत इस्तेमाल ने कैसा क़हर बरपा कर दिया। दरअसल ये मेरे लिए कोई नयी बात नहीं थी। मैं शादी से पहले से ही इस आदत की चपेट में थी ,मुझे ऐसे कुछ वाक्यात बख़ूबी याद हैं .. '

सना दी चुप हो गईं कुछ देर के लिए। ऐसा लगा कि वे चुप रहकर भी बहुत कुछ कह पा रही हैं। मुझे अबतक सब कुछ, उनकी तमाम बातें किसी पहेली की तरह लग रही थी।

'हम बड़ी बुआ के घर गए थे और हमारी स्कूलों की छुट्टियां थीं ... शाम का समय था और बुआ ने मुझे अकेले एक तरफ़ ले जाकर पूछा बुज़ू सुनो, बुज़ू मेरा प्यार का नाम था... उन्होंने पूछा 'तुमने आज स्टेशनरी की दुकान से इरेज़र उठाया है' मैं उन्हें चुपचाप देखती रही, एकटक शून्य आँखों से, शायद मैं यह सोच रही थी कि बुआ को आख़िर मालूम कैसे हुआ या शायद कुछ नहीं सोच रही थी और बुआ की कड़ी पूछताछ को बस झेल रही थी ।

'मुझे बहुत कुछ याद नहीं, कुछ-कुछ बातें याद हैं जैसे ये कि बुआ ने मेरी तरफ करुण भाव से देखा था; ये भी याद आता है कि एक डर-सा दिल में आ गया था। दो बातें मुझे अच्छी लगी थी वे यह कि एक तो बुआ का नहीं डांटना और दूसरा माँ को इस बाबत कुछ भी न कहना ...वो ज़माना मॉल वगैरह का तो नहीं था... हम दुकानों में ही तो जाया करते थे, तो एक और वाक्य याद आता है जब मैं दुकान के सामने खड़ी हूँ मेरे साथ माँ है ... मैं एक छोटा-सा टेडी उठाकर अपनी मुट्ठी में दबोच लेती हूँ ...माँ पैसे देकर थोड़ी दूर तक आ जाती है तो मेरी दबी हुई मुट्ठी देखकर पूछती है कि मुट्ठी में क्या है...मैं चुपचाप हूँ; वे मेरी बंद मुट्ठी खोलकर देखती हैं मेरे हाथ में टेडी देखकर उसे वे अपने हाथ में ले लेती हैं। वे वापस दुकान में जाती हैं और दुकानदार से कुछ कहती हैं, माँ और दुकानदार दोनों हँसते हैं, दोनों मेरी तरफ़ देखते है। फिर हम घर आ जाते हैं। इस बारे में कोई बात नहीं होती। कभी-कभी मुझे महसूस होता है कि क्या होता अगर वे मुझे इसपर डांट लगाया करतीं या फिर अगर कोई सख़्ती करतीं तो हालात कैसे होते; क्या मैं कुछ ज़्यादा डर जाती या ये आदत छोड़ देती या फिर इससे भी अलग कुछ होता।'

'क्या ऐसी घटना के बाद आपको महसूस होता था...जैसे कि कुछ कोई असहजता या शर्मिंदगी जैसी चीज़' मैंने सहज भाव से सवाल किया।

'हाँ मुझे महसूस होता... कुछ...जिसे तुम असहज होना कह सकती हो, लेकिन वह असहज होना ऐसी किसी एक और दूसरी घटना के बीच पसरा होता वह दूसरी घटना को रोकने के लिए नाकाफ़ी हुआ करता शायद यही अब्नोर्मलिटी होती है कुछ अब्नॉर्मल करकर नार्मल रह जाना...यह सब तो मैंने बहुत बाद में जाना जब मैंने इस बारे में पढ़ना शुरू किया'

'फिर...'

सना दी ने लंबी साँस खींची और बेंच से बड़े ही स्वाभाविक तरीके से उठ खड़ी हुईं। ऐसा लगा वे किसी बेचैनी से निजात पाना चाहती हों जैसे; मैं भी उनके पीछे-पीछे खड़ी हो गयी । घटनाएं बार-बार होती रहीं तो भी किसी ने ग़ौर नहीं किया। शायद वे इसे नादानी समझते रहे या फिर बचपन की कोई आदत या सिर्फ़ मासूम सी कोई हरकत ---'

'फिर कैसे छूटी यह आदत... '

सना दी रूक गई ... उन्होंने मेरी तरफ देखा करुण भाव से।

'बहुत देर हुई छूटने में... ज़िन्दग़ी तबतक कुछ बदसूरत तरीक़े से बदल चुकी थी... '

वे फिर चहलक़दमी करने लग गईं; मैंने उनका हाथ पकड़ लिया... शायद मुझे भी डर-सा महसूस हो गया कि आगे वे क्या कहने वाली हैं।

'फिर क्या हुआ सना दी'

उन्होंने अपना हाथ नहीं छुड़ाया; मेरे लिए वह किसी कहानी के ऐसे क्लाइमेक्स की तरह था जिसका कुछ कुछ अंदाज़ा पाठक को लग पाए और उसके सामने दो ही सूरतें हों या तो वह उसका मज़बूती से सामना करे या वह उससे बचना चाहे... लेकिन वह सब कुछ मैं सोच ही न पाई जो उन्होंने आगे कहा।

'हमारी शादी की सालगिरह थी'

वे रूक गयी... उनका हाथ मेरे हाथ में स्थिर पड़ा हुआ था न कोई ज़ोर, न कोई गर्म जोशी।

'अविनाश को पार्टियां बेहद पसंद थीं। उस दिन भी उन्होंने शाम को पार्टी रखी थी। हम घर के लॉन में इत्मीनान से बैठे थे। शाम को कौन-सी साड़ी पहननी है, कौन से ज़ेवर, अविनाश क्या पहनेंगे, ये बातें हो रही थीं। तभी मैंने तपाक-से कहा, और मेरी साड़ी, आज के लिए तो नई लूंगी, जानती हो मैं उस घटना को याद करती हूँ तो सोचती हूँ अक्सर कि हम ज़्यादातर समय कितनी बेतुकी बातें किया करते हैं गैरज़रूरी बातें जिनके बगैर आसानी से चल सकता है....और अविनाश इतने अच्छे मूड में थे कि तुरंत तैयार हो गए, 'ऐसे ही इन्हीं कपड़ों में... ' मैंने कहा ।

हाँ, क्या खराबी है,चलो अभी इसी वक़्त, नहीं तो कभी नहीं,अविनाश बोले और हम निकल पड़े। हमारी दुकान फिक्स थी।हमारी सारी शॉपिंग खास तौर पर कपड़ों की वहीं से होती। वह एक डिपार्टमेंटल स्टोर था। वह मॉल का जमाना नहीं था फिर भी हमारे शहर में वह एक बिलकुल आधुनिक तरह का डिपार्टमेंटल स्टोर था जहाँ हर चीज़ बड़ी उम्दा क्वालिटी की हुआ करती, दरअसल वह शहर के कुछ ख़ास लोगों संभ्रांत लोगों, की पहली पसंद था। उस ज़माने में उस स्टोर में शॉपिंग करना शान की बात हुआ करती थी। कितने ख़ुश थे अविनाश और मैं भी। अविनाश को लाल रंग जाने क्यों बेहद पसंद था... वह साड़ी ही एक मेरे पास अब तक बची रह गयी है बाक़ी सारे निशान मैंने नेस्तनाबूद कर दिए। दरअसल ये ज़रूरी था,

स्मृतियाँ जब बोझ बनने लगें तो उन्हें फ़ौरन झटक कर उतार फेंकना चाहिए, नहीं तो चलना ही मुश्किल हो जाता है।आप किसी के साथ जी सकते है मगर किसी के साथ आप मर नहीं सकते।'

मैंने सना दी के हाथ को अपने सीने से लगा लिया। उन्होंने हाथ नहीं हटाया और अपनी बात जारी रखी।

'हम ख़रीदारी करके बाहर निकलने लगे तो दुकान के बड़े दरवाज़े के पहले ही हमें बड़ी शालीनता से ही रोक दिया गया; हम उस शॉप के काफ़ी जाने पहचाने क्लाइंट थे, वे बद्तमीज़ी से पेश नहीं हुए; ये उनकी ही मेहरबानी थी। अविनाश बिफर पड़े उन्हें इस तरह रोका जाना नागवार गुज़रा। लेकिन गेट पर खड़ा संतरी तो अपनी ड्यूटी कर रहा था। उसने मुझे बैग खोलने को कहा...' सना दी कुछ देर ख़ामोश रही।

'फिर...' मैंने पूछा। 'बैग में एक साड़ी थी; अविनाश सन्न हो गए और मैं उन्हें चुपचाप वैसे ही देखती रह गयी जैसे बरसों पहले सवाल करने पर बुआ को देखा था। एक नयी तक़दीर लिखी जा चुकी थी।

अविनाश ने उसके बाद कोई बात नहीं की; न मुझसे, न किसी और से वह चुप्पी नहीं था; वह एक सन्नाटा था। शाम को पार्टी भी हुई तब भी वह सिर्फ़ हाँ और न ही करते रहे। तबीयत खराब होने की बात कहते रहे और लोगों से बचते रहे। अविनाश अचानक खो गए,दूसरे दिन सुबह ही फिर मिले, फिर कभी नहीं मिलने के लिए... '

'मतलब' मेरी मुठियाँ भींच गयी

सना दी ने मुझे देखा और वही मुस्कराहट उनके चेहरे पर थी जो अक्सर दिखा करती थी बहुत सारे दर्द गुज़री हुई मुस्कुराहट।

एक सप्ताह तक मैं और सना दी नहीं मिले। दरअसल मुझे ही हिम्मत न हुई। सना दी तो वैसे भी इन सब जज़्बात से ऊपर उठ चुकी थी। लेकिन जब वापस हम मिले तो हम अलग थे। हम खुलकर बातें करने लग गए थे।

'अविनाश के जाने के बाद मैं समाज से कट गई या कहो, काट दी गयी; बात अख़बारों में आ गयी... परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा का सवाल था... मैं डिप्रेशन में थी; सामाजिक प्रतिष्ठा जैसी चीज़ मेरे लिए बेमानी थी। मुझे इलाज के लिए डॉ. खान के पास ले जाया गया। वे न केवल अच्छे डॉक्टर थे बल्कि बड़े ही ज़हीन किस्म के इंसान थे। उन्होंने लम्बे समय तक मुझे अपनी देखरेख में रखा। मुझे डिप्रेशन से निजात दिलाई और क्लिष्टोमनिया से भी.. मैं बीमार थी... यह कोई समझ नहीं पाया । मेरी ज़िन्दगी उनकी कर्ज़दार है, इस जन्म में शायद ही उन्हें मैं भुला पाऊं। हम एक ऐसे समाज में रहते है जहाँ हम शारीरिक कष्टों पर तो बड़ा काम करते हैं; मगर मानसिक अवस्थाओं को या तो समझ नहीं पाते या उन्हें इग्नोर करते हैं। कभी-कभी लगता है कि और लोगों की ही तरह अविनाश भी मुझे समझे बिना ही चले गए। उनके लिए शायद वह प्रतिष्ठा ज़्यादा महत्वपूर्ण थी जो किसी ठोस ज़मीन पर नहीं बल्कि भुरभुरी ज़मीन के ऊपर खड़ी थी... वे लोग, जिनका ख्याल करके वे चले गए; दरअसल कुछ भी नहीं जानते थे। .. न मेरे बारे में, न मेरी बीमारी के बारे में।'

उस दिन हम देर तक पत्थर की एक बेंच पर बैठे रहे, ऐसा लगता था, पत्थर की उस बेंच की तासीर हमारी देह को लग गई थी और हम बुत बन गए थे।

- 57, साउथ एन्ड

मानसरोवर रोड नंबर 2

पोस्ट हटिया, रांची 834003

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में दिनांक 28.01.2023 को 'समग्र रेशम उत्पादन उत्पादन - चुनौतियाँ एवं भावी रणनीति' विषय पर राष्ट्रीय राजभाषा तकनीकी सेमिनार का आयोजन किया गया । सेमिनार में देश के विभिन्न राज्यों से कुल 89 शोध-पत्र/लेख अर्थात् लीड पेपर-04, राजभाषा-05, तसर-47, मूगा एरी-08 एवं शहतूत-25 प्राप्त हुए जिन्हें स्मारिका सह शोध-पत्र संकलन के रूप में प्रकाशित किए गए । चार सत्रों में से एक राजभाषा सत्र भी रखा गया । इस अवसर पर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया ।

सेमिनार में मुख्य अतिथि के रूप में हथकरघा, रेशम एवं हस्तशिल्प निदेशालय, उद्योग विभाग, झारखण्ड सरकार की निदेशक सुश्री आकांक्षा रंजन, भा.प्र.से. उपस्थित थीं । अपने सम्बोधन में उन्होंने तसर संस्थान एवं राज्य रेशम विभाग, झारखण्ड सरकार के सहयोगात्मक अनुसंधान एवं कार्यान्वयन पर विशेष बल दिया । उन्होंने कहा कि तसर रेशम के उत्पादन के क्षेत्र में व्यावहारिक अनुसंधान की आवश्यकता है जिससे राज्य के सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों की अधिसंख्य जनसंख्या को तसर कीटपालन का समुचित लाभ मिल सके एवं उनकी आजीविका में वृद्धि हो सके । विशिष्ट अतिथि वन उत्पादकता संस्थान, राँची के निदेशक डॉ. नितिन कुलकर्णी ने कहा कि राजभाषा के माध्यम से तकनीकी विषयों पर सेमिनार का आयोजन किया जाना अपने-आप में महत्वपूर्ण है । उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा कृषकों के हित में किए जा रहे उपयोगी योजनाओं/परियोजनाओं की सराहना की ।

संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण ने कहा कि यह संस्थान उष्णकटिबंधीय तसर के क्षेत्र में विश्व का एकमात्र संस्थान है । उन्होंने सहर्ष अवगत कराया कि राजभाषा का उत्कृष्ट कार्यान्वयन में इस संस्थान को वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 हेतु पूर्वी क्षेत्र में लगातर दो बार क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के रूप में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है । उन्होंने विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में राजभाषा के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने पर बल दिया । उन्होंने कहा कि वर्तमान में सूचना प्रौद्योगिकी के कारण तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग काफी बढ़ा है ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, भा.व.से., केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर द्वारा की गई । उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि राजभाषा के माध्यम से सेमिनार का आयोजन करना अच्छी पहल है । वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग होता है तो यह जन-साधारण तक सुगमता से पहुँचता है । तकनीकी शब्दों को देवनागरी में ही लिखा जा सकता है तथा राजभाषा विभाग का भी यही प्रयास है कि राजभाषा का सरलीकरण किया जाए । हमने कई चुनौतियों का हल किया है लेकिन अभी और चुनौतियों से निपटने के लिए आगे की रणनीति बनाने की आवश्यकता है ।

विशिष्ट अतिथि डॉ.संजय सिंह, वैज्ञानिक-जी, पारि-पुनर्स्थापना वन अनुसंधान केन्द्र, प्रयागराज ने अपने सम्बोधन में कहा कि हिन्दी एक ऐसी भाषा है जो सोचने एवं समझने का मौका देती है । हिन्दी में मौलिक चिन्तन की आवश्यकता है। इस अवसर पर के.रे.उ.अ.व प्र.सं., बहरमपुर के निदेशक डॉ. सी.एम. किशोर कुमार एवं बु.त.रे.बी.सं., बिलासपुर के निदेशक डॉ. वेणुगोपाल ए. ने भी अपने विचार व्यक्त किए । सेमिनार में प्रस्तुत शोध-पत्रों को संकलित करते हुए स्मारिका-सह-शोध पत्र संकलन का विमोचन सेमिनार में उपस्थित गणमान्य अतिथियों द्वारा किया गया । सेमिनार में प्रतिभागियों समेत सपोर्ट टीम के रूप में संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों सहित कुल 198 लोगों ने भाग लिया।

शाप

-जया केतकी

1.शाप देना यानी एक जीवन पर रोक लगाना
बदलना उसका पथ
जिसे उसने चुना

भटका देना उसे
उसके लक्ष्य से

शाप का प्रभाव
दूर नहीं होता आसानी से

करना पड़ता है
उसके लिए त्याग

झेलना पड़ता है
यातनाओं को लगातार

मानसिक और शारीरिक
भावनात्मक भी

बदल जाता है
सब एक शाप से

2. उसने अपनी काली जुबान से
दे दी थी गाली गंदी सी

वह बेचैन हो गया
सो नहीं पाया रात भर

गाली में जिस जिस का
जिक्र किया गया था

उनमें से कोई भी
नहीं था अब दुनिया में

क्या फिर भी असर करेगी
गाली उसके नाम की

इसी शाप को ओढ़कर
वह खोज रहा है

अपने जीवन के
निर्धारित लक्ष्य को

3. उस शापित घर का सन्नाटा
जगा देता है उसे आधी रात को

वह उठकर छत पर आ जाती है
मिलने उन आत्माओं से

जो चाहती हैं
अपने हिस्से की खुशियां मेरे बहाने

वो चीख-चीख कर सुनाती हैं
उन पर किए गए जुल्मों की दास्तां

क्या मैं बदल पाऊंगी
उन बेदर्द रस्मों रिवाजों को

जो चली आ रही हैं
सदियों से
क्या हो सकती है मुक्त
नारी इस शाप से

4 अगर तुम्हारे कमंडल में है इतना जल

कि तुम दे सको शाप उसे छिड़ककर

तो पहला शाप तुम उन कुरीतियों को

देना जो दीमक की तरह चट कर रही हैं

समाज को अंदर ही अंदर

उजाड़ती जा रही हैं कस्बे गांव शहर देश

तुम्हें शाप देना हो तो देना उन बुराइयों को
जो भूल गई हैं भाई को भाई समझना
पिता को पिता, मां को मां, बहन को बहन

तुम शाप दे सकते हो उन्हें भी
जो समाज में फैला रहे हैं
ऐसी गलत परंपराएं जिनसे
नहीं होता कोई भी समाज समृद्ध

अगर अब भी बचा है जल तुम्हारे कमंडल
में तो दे दो शाप उन बीमारियों को
जो असमय ही ले लेती हैं अपने आगोश में

और मिटा देती है आने वाली पीढ़ी का वह

चिराग जिसके बलबूते पर खड़ा हो सकता

था एक नव निर्माण

- 45 मंसब मंजिल रोड
रायल डेंटल क्लीनिक के सामने,
भोपाल

बात की बात

-ईश्वरचंद्र मिश्र

बातों की कोई बात करे तो
कोई करे सौ बात की बात;
दिलपर घात है किसी की बात
मन की बात बड़ी है बात।

पते की बात, मजे की बात
अपनी बात उनकी बात
सबकी बात और जज्बात
सौ बातों की बात कभी तो
इसी की बात दिल पर घात
मन की बात बड़ी है बात

कहते बात से बनती बात
और बिगड़ती बात से बात
दिल पर घात है किसी की बात
मन की बात बड़ी है घात।
बातों से कई बात निकलती
और बात से होती मात
कुछ बातें सौगात भी होतीं
सोच-समझकर करना बात

बात नहीं गर करना जानो
फिर मत करना कोई बात
सौ बातों की एक बात है
मन की बात बड़ी है बात।

बतरस की भी अलग बात है
नासमझों की दीगर है बात
अगर बात का असर न जाना
क्या कर लोगे करके बात
दिल पर असर है इसी बात का
मन की बात बड़ी है बात।

- सहायक निदेशक
(सेवानिवृत्त),
केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो,
बेंगलूरु

बेटी की आरजू

- मुरलीधर देवांगन

किसी के परिवार जब बेटी पैदा होती है तब माँ-बाप की जिम्मेदारी बढ़ने के साथ ही साथ उसकी परवरिश, शिक्षा एवं भविष्य के गाँव की चिंतन शुरू हो जाती है क्योंकि बेटी माँ-बाप की मान/इज्जत/लक्ष्मी होती है। इसी कारण हर माँ-बाप, बेटी की वर्तमान स्थिति को मद्देनजर रखते हुए अपनी क्षमता अनुसार पढ़ा-लिखा करके उसे इस समाज में जीने लायक बनाने की असफल कोशिश करते हैं और इसके लिए वे अपने जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामने करते रहते है। समयानुसार बेटी जब धीरे-धीरे बड़ी होती रहती है तो सबसे पहले समाज और पड़ोसियों की नजर उस पर पड़ती है तब उस समय हर माँ-बाप अपने सीने में पत्थर रखकर अपनी बेटी के भविष्य को ध्यान में रखकर हर समस्या को मन में दफन करके उसको आगे बढ़ाने के लिए ताना-बाना बुनते रहते हैं और तब तक जब उसकी शादी की चिंता में तरह-तरह के ख्याली अरमान मन में लिये बेचैन रहते हैं और उसके सपनों को पूरा करने में माँ-बाप, व्यस्त हो जाते हैं।

आज परिस्थितियाँ बदल चुकी है और वर्तमान समयानुसार हर माँ-बाप अपनी बेटी से पूछते हैं कि बता बेटा, तुझे कैसा वर चाहिए जो मैं तेरे भविष्य के लिए तलाश करूँ। जैसे कि राम-लखन राधा-कृष्ण वैसा या कोई और जो आपकी मनपसंद हो।

तब बेटी कहती है कि पापा मुझे राम-लखन जैसा वर तो कदापि नहीं चाहिए जिसने पिता के आज्ञा पालन के साथ-साथ एक पत्नी व्रता धर्म का पालन तो बखूबी से किया, और इस संसार में पुरुषोत्तम राम कहलाते हैं, परन्तु किसी और के कहने पर अपनी पत्नी सीता को शंकावश वन में भेज दिया, और लक्ष्मण अपनी पत्नी के संग ना रह सके। ऐसा राम-लखन मुझे नहीं चाहिए और रही कृष्ण की बात तो वे राधा से आजीवन प्रेम करते रहे और राधा के साथ उन्होंने अपना नाम भी जोड़ लिए, परन्तु शादी किये रुकमिणी से। इसलिए पापा एक सवाल मेरे मन में और है जो हम बचपन से सुनते आ रहे हैं कि शादी-विवाह में छत्तीस गुण मिलान कर ही शादी करनी चाहिए, तो क्या राम-सीता, लक्ष्मण-उर्मिला का छत्तीस गुण नहीं मिले थे क्या, जो आजन्म उनके दुख: का कारण बना।

तो पापा मुझे आप लोग इस काबिल बना दो कि मैं अपना भविष्य निर्धारित कर अपना जीवन साथी खुद ढूंढ सकूं और अपने पति/परिवार के सुख-दुख में साथ निभा सकूं। मुझे ऐसा भी नहीं बनना कि रानी गांधारी की तरह आँखों में पट्टी बांधकर उनके हर भले-बुरे निर्णय में साथ निभाती रहूँ। इसलिए मुझे ऐसा सक्षम और समझदार बना दो कि हर परिवार में एक सेतु की तरह अपने आप को स्थापित कर सकूं।

- वरिष्ठ तकनीकी सहायक,
बु.बी.प्र. एवं प्र. केन्द्र, बोईरदादर

श्री विजय कुमार, उप निदेशक (रा. भा.) के मार्गदर्शन में केन्द्रीय रेशम बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन में और गति प्राप्त हुई । आपके नेतृत्व में बोर्ड में राजभाषा संबंधी विभिन्न गतिविधियाँ हुई । केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान एवं केन्द्रीय कार्यालय में उनके कार्यकाल के दौरान हिन्दी के प्रगामी प्रयोग में उत्तरोत्तर विकास हुआ । अपनी 29 वर्षों की सेवा काल के उपरांत अधिवर्षिता की आयु प्राप्त कर आप दिनांक 31 जनवरी 2023 को बोर्ड की सेवा से सेवानिवृत्त हुए । केन्द्रीय रेशम बोर्ड एवं रेशम भारती परिवार की ओर से उनके सुखद एवं स्वस्थ जीवन के लिए शुभकामनाएँ ।

केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय एवं अधीनस्थ कार्यालय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित

केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय, बेंगलूरु

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय-1, बेंगलूरु द्वारा दिनांक 16.12.2022 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह एवं द्वितीय बैठक में केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु को वर्ष 2019-20 के लिए तृतीय तथा वर्ष 2020-21 के लिए द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह सतीश धवन ऑडिटोरियम, यु आर.रॉव उपग्रह केन्द्र, एच ए एल एयरपोर्ट रोर्ड, बेंगलूरु में आयोजित किया गया जिसमें आदरणीय श्री एम शंकरन, अध्यक्ष नराकास (का-1) एवं निदेशक, यु.आर.रॉव उपग्रह केन्द्र के करकमलों से श्री विजय कुमार, उपनिदेशक (रा.भा.) द्वारा राजभाषा शील्ड और श्रीमती मीना एस. कामत, सहायक निदेशक (राभा) द्वारा प्रशस्ति पत्र ग्रहण किया गया।

केन्द्रीय रेशम अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु

केन्द्रीय रेशम अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु को राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा दक्षिण–पश्चिम एवं दक्षिणी क्षेत्र के केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में वर्ष 2021-22 के दौरान उत्तम राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार दि. 27.01.2023 को तिरुवनंतपुरम में आयोजित राजभाषा सम्मेलन के दौरान प्रदान किया गया। केरल के महामहिम राज्यपाल श्री मुहम्मद आरिफ खान के करकमलों से यह पुरस्कार संस्थान के उप निदेशक श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय और प्रशस्ति पत्र श्रीमती शचि के., सहायक निदेशक ने प्राप्त किया।

केन्द्रीय रेशम प्रौद्यौगिक व प्रशिक्षण संस्थान, बेंगलूरु

केन्द्रीय रेशम प्रौद्यौगिक व प्रशिक्षण संस्थान, बेंगलूरु को दिनांक 27.01.2023 को केरल की राजधानी तिरूवनंतपुरम के टैगोर थियेटर, वझुथाकौड में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के वर्ष 2021-22 के लिए प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया गया। केरल के राज्यपाल महामहिम श्री आरिफ मोहम्मद खान ने संस्थान के प्रभारी अधिकारी/वैज्ञानिक-डी, डॉ. वाई सी राधालक्ष्मी को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित किया। इसी समारोह में संस्थान को वर्ष 2020-21 के लिए तृतीय क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्र, राजभाषा विभाग की सचिव श्रीमती अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव श्रीमती मीनाक्षी जौली एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की अध्यक्ष श्रीमती सुधर्मिणी उपस्थित थे। उल्लेखनीय है कि इस कार्यक्रम में दक्षिण एवं दक्षिण पश्चिम राज्यों के केन्द्र सरकार के विभिन्न संगठनों के प्रमुख एवं राजभाषा अधिकारी उपस्थित थे। उक्त समारोह में संस्थान के श्री ललन कुमार चौबे, सहायक निदेशक (रा.भा.) को राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय योगदान करने के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया। ज्ञातव्य है कि संस्थान को संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए तीन वर्षों से लगातार क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर

दिनांक 08.12.2022 को भुवनेश्वर [ओडिशा] में आयोजित "भारत के पूर्व एवं पूर्वोत्तर राज्यों के क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन" में केन्द्रीय रेशम उत्पादन व अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर को वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन व अनुपालन हेतु समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गृह राज्य मंत्री, श्री अजय कुमार मिश्र तथा संसदीय समिति के उपाध्यक्ष श्री भातृहरि मेहताब महोदय के कर कमलों से तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, केरेबो, बेंगलूरु

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, केरेबो, बेंगलूरु को राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन तथा प्रशंसनीय उपलब्धियों के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बेंगलूरु (का-1) द्वारा क्रमश: वर्ष 2019-20 और 2020-21 के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मनित किया गया। पुरस्कार समारोह 16 दिसंबर, 2022 को सतीश धवन ऑडिटोरियम, यु आर.रॉव उपग्रह केन्द्र, एच ए एल एयरपोर्ट रोर्ड, बेंगलूरु में आयोजित किया गया जिसमें आदरणीय श्री एम शंकरन, अध्यक्ष नराकास (का-1), एवं निदेशक, यु.आर. रॉव उपग्रह केन्द्र के करकमलों से श्री वी.के.हरलापुर, वैज्ञानिक-डी और श्री सुनिल कुमार पी., वरिष्ठ अनुवादक (हिंदी) द्वारा राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति-पत्र ग्रहण किया गया।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, राँची को वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्यवन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्वी क्षेत्र में 'क' क्षेत्र के 50 से अधिक कर्मचारी संख्या वाले कार्यालयों में लगातार 2 वर्ष हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार द्वारा दिनांक 8 दिसम्बर 2022 को भुवनेश्वर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में दोनों वर्ष के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण को शील्ड एवं सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री कमल किशोर बडोला को प्रशस्ति-पत्र से सम्मानित किया गया।

इसी प्रकार 'ग' क्षेत्र में क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, बारीपदा को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार श्री बी.डी. पटनायक, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा ग्रहण किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली

अमृतसर में संपन्न राजभाषा क्षेत्रीय पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरण कार्यक्रम में क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली को वर्ष 2020-21 हेतु उत्तर क्षेत्र स्थित "क" क्षेत्र के कर्मचारी वाले कार्यालय की श्रेणी में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु राजभाषा क्षेत्रीय प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। उक्त पुरस्कार का वितरण दिनांक 03.11.2022 को उत्तरी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय-1, दक्षिण दिल्ली द्वारा उत्तर क्षेत्र-1 एवं क्षेत्र-2 हेतु अमृतसर में आयोजित "संयुक्त राजभाषा क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र वितरण समारोह में प्रदान किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव (राजभाषा), गृह मंत्रालय एवं श्री बी.एल. मीणा, निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, नई दिल्ली के कर-कमलों से श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक), क्षेका, केरेबो, नई दिल्ली को क्षेत्रीय राजभाषा शील्ड एवं श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

बुनियादी तसर रेशम कीट बीज संगठन, बिलासपुर

दिनांक 3 मार्च 2022 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रायपुर, छत्तीसगढ़ में मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के लिए क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन एवं केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा वर्ष 2020-21 एवं 2021-22 में राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट कार्यो के लिए पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में माननीय राज्य गृह मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर को 2021-22 के लिए प्रथम एवं वर्ष 2020-21 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। संगठन कर्यालय की ओर से डॉ. ए. वेणुगोपाल, निदेशक ने राजभाषा शील्ड एवं श्री पी.एस. लोधी वरिष्ठ अनुवादक हिंदी ने प्रमाणपत्र प्राप्त किया।

मूगा रेशमकीट बीज संगठन, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, गुवाहाटी

पूर्वोत्तर क्षेत्र स्थित केन्द्र सरकार के 11-50 तक कामिकों वाले कार्यालयों में वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य निष्पादन के आधार पर मूगा एरी रेशमकीट बीज संगठन, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, गुवाहाटी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ तथा दिनांक 08.12.2022 को भुवनेश्वर में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में प्रथम पुरस्कार ग्रहण किया गया।

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, पाली

बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केन्द्र, पाली को वर्ष 2020-21 हेतु प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। डॉ. एम. एस. राठौड़, वैज्ञानिक-डी ने बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, पाली की ओर से राजभाषा शील्ड एवं श्री रमेश पटेल, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने प्रमाण प्रत्र प्राप्त किया।

***

हिन्दी पखवाड़ा

केन्द्रीय रेशम बोर्ड मुख्यालय, राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन एवं केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु में दिनांक 14.09.2022 से 12.10.2022 तक संयुक्त रूप से हिन्दी माह और 11.11.2022 को हिन्दी माह 2022 : पुरस्कार वितरण, सांस्कृतिक एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया। माह के दौरान तीन अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिताएं जैसे, टिप्पण आलेखन, प्रशासनिक व तकनीकी शब्दावली, हिन्दी निबंध एवं छः केरेबो परिसर के स्तर पर जैसे, भाषण, स्मृति परीक्षा, वाचन, सुलेख, तस्वीर क्या बोलती है?, वर्ग पहेली, विविधा (क्विज व अंत्याक्षरी) प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। हिन्दी माह के दौरान कवि सम्मेलन व प्रहसन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनांक 11.11.2022 को केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु के निदेशक (तक.) डॉ. बी टी श्रीनिवास की अध्यक्षता में राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन तथा केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, बेंगलूरु के साथ संयुक्त रूप से हिन्दी माह समापन समारोह आयोजित किया गया। मंचासीन डॉ. बी. टी. श्रीनिवास तथा अन्य उच्च अधिकारियों द्वारा दीप प्रज्जवलन के साथ समारोह का शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात् श्री विजय कुमार, उपनिदेशक (राभा) ने सभी का हार्दिक स्वागत किया और 14-15 सितंबर 2022 को सूरत (गुजरात) में आयोजित हिन्दी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के बारे में बताया जिसमें उप निदेशक (राभा), सहायक निदेशक (राभा) एवं अन्य 3 उच्च अधिकारियों ने भाग लिया जिसकी अध्यक्षता माननीय श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार द्वारा की गई। उसके बाद हिन्दी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं, कवि सम्मेलन एवं प्रहसन कार्यक्रम की झलकियां दिखाई गई एवं श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार एवं सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखंडियार का संदेश पढ़ा गया। इस अवसर पर हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ-साथ यह सूचित किया गया कि अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी 27 विजेताओं को पुरस्कृत किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ. बी.टी. श्रीनिवास ने कहा कि हिन्दी सीखना और बोलना आसान है, केवल थोड़ा प्रयास करने की जरूरत है। जब छोटे इकाई या फील्ड में काम करने या किसानों से बातचीत करके अपनी बात बतानी या समझानी होती तब हिन्दी मालूम होने से हमारा काम आसान हो जाता है इसलिए हम सबको हिन्दी सीखनी चाहिए। इसी अवसर पर श्री के.एस. गोपाल, वैज्ञानिक-डी एवं श्री एम आर ईटगी, वैज्ञानिक-डी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। समापन समारोह में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर में दिनांक 14.09.2022 से 30.09.2022 तक डॉ. एन.बी. चौधरी, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। दिनांक 14.09.2022 को हिंदी दिवस आयोजित किया गया तथा उक्त अवसर पर माननीय गृह मंत्री एवं सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के संदेशों का वाचन किया गया। दिनांक 14-15 सितम्बर, 2022 को सूरत, गुजरात में आयोजित हिंदी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में संगठन कार्यालय से श्री पी.एस. लोधी, वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने सहभागिता की। पखवाड़े के दौरान कुल 03 प्रतियोगिताएं, निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता तथा कंप्यूटर पर हिंदी यूनिकोड टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई।

समापन समारोह दिनांक 30.09.2022 को आयोजित किया गया। उक्त अवसर पर डॉ. ऊषा तिवारी, विभागाध्यक्ष, हिंदी, शासकीय ई.रा. महाविद्यालय, बिलासपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के प्रारंभ में श्री पी.एस. लोधी, वरिष्ठ अनुवादक (हिं) ने समापन समारोह के कार्यक्रम के बारे में पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रस्तुति दी। इस अवसर पर डॉ. एन.बी. चौधरी, वैज्ञानिक-डी ने अध्यक्षीय उद्बोधन में सभी से आग्रह किया कि हमें घर पर अपनी मातृभाषा में तथा कार्यालय में अपनी राजभाषा में संवाद करना चाहिए ताकि हमारी संस्कृति एवं देश समृद्ध रहें। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को बधाई दी। साथ ही उन्होंने संगठन कार्यालय को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा 2020-21 हेतु द्वितीय एवं वर्ष 2021-22 हेतु प्रथम क्षेत्रीय पुरस्कार एवं बुबीप्रवप्रके, पाली को 2020-21 हेतु प्रथम क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार हेतु चयनित होने पर हिंदी अनुभाग एवं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बधाईयां दी।

मुख्य अतिथि डॉ. ऊषा तिवारी, विभागाध्यक्ष हिंदी ने उक्त अवसर पर बताया कि हिंदी आज वैश्विक भाषा बन चुकी है। हिंदी सभी भाषाओं की सहयोगी है तथा हिंदी से किसी भी भाषा

का विरोध नहीं है। उक्त अवसर पर उन्होंने स्वरचित कविता भी सुनायी।

अंत में हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र एवं पुरस्कार राशि अध्यक्ष महोदय एवं मुख्य अतिथि के कर कमलों से प्रदान की गयी। कार्यक्रम में मंच संचालन एवं आभार श्री पी.एस. लोधी, वरिष्ठ अनुवादक हिन्दी ने व्यक्त किया। समापन समारोह में संगठन कार्यालय, रेशम तकनीकी सेवा केन्द्र, बिलासपुर एवं बुबीप्रवप्रके, बिलासपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरु में दिनांक 14.09.2022 से 30.09.2022 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 30.09.2022 को हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पखवाड़ा की शुरुआत दिनांक 14.09.2022 को सूरत में अखिल भारतीय राजभाषा सेमीनार के उद्घाटन से हुई| पखवाड़ा के दौरान सही लेखन, श्रुतलेखन, शब्दावली और स्मृति जांच परीक्षा प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। दिनांक 30.09.2022 को हिन्दी पखवाड़ा के मुख्य कार्यक्रम एवं समापन समारोह की शुरुआत मंगलाचरण से हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री टेकचंद, पूर्व उप निदेशक(रा.भा), क्षेकाका, बेंगलूरु उपस्थित थे। संस्थान की निदेशक (प्र.) डॉ मेरी शेरी जोसफा, वैज्ञानिक-डी एवं मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम का शुभारंभ संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। तत्पश्चात संस्थान के उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय के द्वारा स्वागत संबोधन एवं कार्यक्रम की भूमिका का विवरण प्रस्तुत किया गया। डॉ मेरी शेरी जोसफा, वैज्ञानिक-डी ने अध्यक्षीय अभिभाषण प्रस्तुत करते हुए उपस्थित सभी वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों का आह्वान किया कि वे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग सुनिश्चित करें। इस अवसर पर गृह मंत्री, भारत सरकार एवं सदस्य सचिव, केंरेबो, बेंगलूरु से प्राप्त संदेश का पाठ किया गया। कार्यक्रम के अंत में हिन्दी प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार का वितरण किया गया।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री टेकचंद, पूर्व उप निदेशक (रा.भा), क्षेकाका, बेंगलूरु ने कहा कि हिन्दी अत्यंत सहज एवं सुबोध भाषा है। थोड़े प्रयत्न से इस भाषा को सीख कर इसका प्रयोग आसानी से सरकारी कामकाज में किया जा सकता है। इस अवसर पर संस्थान के उप निदेशक (रा.भा.) श्री सुरेन्द्र कुमार उपाध्याय ने संस्थान में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग से संबंधित वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान गीत संगीत कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्रीमती शचि के. ने किया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पाम्पोर, जम्मू व कश्मीर में दिनांक 16.09.2022 से 29.09.2022 तक हिन्दी पखवाड़ा-2022 का आयोजन किया गया। इस बार दिनांक 14.09.2022 को हिंदी दिवस सूरत (गुजरात) में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के साथ किया गया। पखवाड़े के दौरान कुल 04 प्रतियोगिताओं-'शब्दावली/प्रश्नोत्तरी - अहिन्दी भाषीयों के लिए, प्रश्नोत्तरी/शब्दावली हिंदी भाषीयों के लिए तथा श्रुतलेख बहु-कार्य कर्मचारियों व चालकों के लिए एवं सुलेख का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के संयोजक, श्री सत्येन्द्र प्रसाद टम्टा, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने हिन्दी दिवस/पखवाड़े के महत्व एवं प्रासंगिकता के बारे में जानकारी प्रदान की तथा सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के संदेश को पढ कर सुनाया। श्री तस्लीम अंसारी, सहायक निदेशक/नामित हिंदी अधिकारी द्वारा दिनांक 14-15 सितम्बर, 2022 को सूरत (गुजरात) में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में भाग किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. सरदार सिंह, निदेशक प्रभारी ने संस्थान द्वारा हिन्दी में किये गये कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया, कि हिन्दी के कार्यों में धीरे-धीरे प्रगति हो रही है तथा इस तरह के समारोह एवं आयोजनों से कर्मचारियों को राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहन मिलता है, साथ ही हिन्दी प्रतियोगिताओं के सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी एवं उन्हें प्रमाण-पत्र/पुरस्कार प्रदान किये गए।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, रांची में दिनांक 16.09.2022 में 29.09.2022 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग, गृह

मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा दिनांक 14-15 सितम्बर, 2022 को सूरत में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में संस्थान की ओर से श्री कमल किशोर बडोला, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने भाग लिया। हिन्दी दिवस के अवसर पर गृह मंत्री, वस्त्र मंत्री, वस्त्र राज्य मंत्री, मंत्री मंडलीय सचिव तथा सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूर से प्राप्त संदेशों का वाचन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान 04 प्रतियोगिताओं यथा, टिप्पण व आलेखन, शब्दावली व राजभाषा ज्ञान, पत्र लेखन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें संस्थान के वैज्ञानिकों/ अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया गया।

दिनांक 29.09.2022 को हिन्दी पखवाड़ा का मुख्य समारोह आयोजित किया गया जिसमें भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान, रांची के निदेशक डा. के.के. शर्मा को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि हमारी अभिव्यक्ति सहज एवं सरल भाषा में होगी तो और अधिक प्रभावी होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ गांधी दास, वैज्ञानिक-डी ने कहा कि अधिक-से-अधिक हिन्दी का प्रयोग करें ताकि सरकारी कार्यों में हिन्दी का महत्व और बढ़ सके। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री कमल किशोर बडोला ने सूचित किया कि इस संस्थान को राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा पूर्वी क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार हेतु चयनित किया गया है। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि द्वारा हिन्दी प्रतियोगिताओं के श्रेष्ठ प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिक/अधिकारी, कर्मचारी एवं अन्य उपस्थित थे।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर (प.बं.) में दिनांक 01.09.2022 से 05.09.2022 तक विविध प्रतियोगिताओं यथा, शब्दावली, निबंध, सुलेख व श्रुतिलेख तथा हिंदी टिप्पण व आलेखन का आयोजन किया गया ताकि संस्थान के अधिकारियों/कर्मचारियों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेरणा व प्रोत्साहन की भावना संचारित होने के साथ ही साथ राजभाषा प्रावधानों के सम्यक कार्यान्वयन व अनुपालन में और भी गति आ सके। मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 30.09.2022 को किया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्थान के निदेशक डॉ. किशोर कुमार सी. एम. द्वारा किया गया। श्री मनोज कुमार, हिंदी शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, बहरमपुर मुख्य अतिथि के तौर पर विराजमान थे।

समारोह का शुभारंभ, संस्थान के श्री चंदन कुमार साव, वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] के स्वागत अभिभाषण द्वारा किया गया। इस दौरान उपस्थित सभी पदाधिकारियों को केन्द्रीय रेशम बोर्ड की गौरवपूर्ण उपलब्धि अर्थात् वर्ष 2020-21 के लिए क्षेत्रीय पुरस्कार से सम्मानित होने की सहर्ष संसूचना और इस मुकाम तक पहुंचाने में सभी पदधारियों के सराहनीय प्रयास व योगदान के लिए बधाई दी गई। तदुपरांत, इस अवसर पर श्री अमित साह, गृह मंत्री, राजभाषा विभाग, भारत सरकार एवं श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड से प्राप्त अपील/संदेश का पाठन किया गया। इसके अलावा, संस्थान के वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] द्वारा वार्षिक राजभाषा प्रगति व उपलब्धियों का ब्यौरा भी प्रस्तुत किया गया।

तत्पश्चात, संस्थान के निदेशक द्वारा हिन्दी पखवाड़ा के दौरान आयोजित कुल 04 प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान करने के साथ-साथ वर्ष 2021-22 के दौरान मूल रूप से राजभाषा हिन्दी में निष्पादित सरकारी कामकाज हेतु अधिकारियों/पदधारियों को प्रोत्साहन स्वरूप नकद राशि एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

इस अवसर पर श्री मनोज कुमार, हिंदी शिक्षक, केन्द्रीय विद्यालय, बहरमपुर, मुख्य अतिथि द्वारा अपने अभिभाषण में यह उदगार व्यक्त किया गया कि हिन्दी बहुत ही समृद्ध भाषा है और हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को एकसूत्र में बांधकर रख सकती है।

तत्पश्चात, संस्थान के निदेशक डॉ. किशोर कुमार सी.एम. ने अपने अध्यक्षीय भाषण में राजभाषा हिंदी की वैश्विक पकड़ पर चर्चा करते हुए कहा कि यही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूरे राष्ट्र की अखंडता को अक्षुण्ण रख सकती है। सर्वशेष में संस्थान के वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] द्वारा संस्थान के समस्त अधिकारियों/पदधारियों को इस समारोह को सफल बनाने में

प्रदत्त सहयोग व प्रतिभागिता के लिए धन्यवाद ज्ञापन के साथ समारोह की समाप्ति की घोषणा की गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2022 को हिंदी दिवस एवं दिनांक 14.09.2022 से 20.09.2022 तक हिंदी सप्ताह का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। हिंदी प्रतियोगिताएँ यथा, मुहावरें तथा लोकोक्तियाँ, प्रशासनिक शब्दावली एवं टिप्पण-लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया एवं दिनांक 19.09.2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्ष महोदय ने हिंदी सप्ताह-2022 के सफलतापूर्वक आयोजन पर हिंदी अनुभाग को सराहना व्यक्त करते हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इसमें बढ़-चढ़ कर प्रतिभागिता करने हेतु आभार व्यक्त किया।

केन्द्रीय रेशम जननद्रव्य संसाधन केंद्र, होसूर में दिनांक 14.09.2022 से 20.09.2022 तक हिन्दी सप्ताह मनाया गया। कार्यक्रम के दौरान विविध प्रतियोगिताओं अर्थात शब्दावली, स्मृति परीक्षण एवं गायन का आयोजन किया गया ताकि केरेजसंके, इएसएसपीसी, एसएसपीसी के वैज्ञानिकों/ अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं प्रक्षेत्र कामगारों में राजभाषा हिन्दी के प्रति प्रेरणा व प्रोत्साहन की भावना संचारित हो। मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 14.09.2022 को किया गया जिस की अध्यक्षता केन्द्र के निदेशक महोदय, डॉ. बी.टी. श्रीनिवास द्वारा किया गया। समारोह का शुभारंभ, डॉ. ऋत्विका सुर चौधरी, वैज्ञानिक-सी (हिंदी प्रभारी) के स्वागत अभिभाषण से किया गया। इसके बाद उद्घाटन भाषण केंद्र के निदेशक डॉ. बी.टी. श्रीनिवास ने दिया। तदुपरांत, इस अवसर पर सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरू श्री राजित रंजन ओखण्डियार एवं माननीय श्री अमित शाह, गृह मंत्री से प्राप्त संदेश का पाठन किया गया। दिनांक 20.09.2022 को केन्द्र के डॉ. एम. माहेश्वरी, निदेशक प्रभारी की अध्यक्षता में समापन सह पुरस्कार वितरण समारोह मनाया गया। उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिन्दी हमारे राष्ट्र की अस्मिता है। इसमें न केवल पूरे राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखने की क्षमता विद्यमान है बल्कि यह एक अत्यंत वैज्ञानिक भाषा है।

रेशम-जैव प्रौद्योगिकी अनुसंधान प्रयोगशाला, रेशमकीट बीज प्रौद्योगिक प्रयोगशाला और क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, कोड़ती के द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 14.09.2022 से 30.09.2022 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़ा का आरम्भ 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के आयोजन से हुआ जिसमें हार्वेस्ट इंटरनेशनल स्कूल, कोड़ती की हिंदी शिक्षिका ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। इस अवसर पर हिंदी शिक्षिका ने हिंदी के महत्त्व पर एक व्याख्यान भी दिया। कार्यक्रम के उद्घाटन के बाद हिंदी लेखन प्रतियोगता का भी आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सभी अधिकारियों, वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। हिंदी दिवस के अवसर पर केरेबो के सदस्य सचिव श्री राजित रंजन ओखण्डियर के सन्देश को पढ़कर सुनाया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया, साथ ही 20 सितम्बर को रेशम दिवस का आयोजन किया गया जिसमें श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी के द्वारा केंद्रीय रेशम बोर्ड की स्थापना में उनके योगदान को याद किया गया। पखवाड़े का समापन 30.09.2022 को विभिन्न प्रतियोगिता में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित करके किया गया। अंत में, डॉ. के.एम. पोनुवेल ने कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग व उपयोग और हिन्दी दिवस के महत्व के बारे में जानकारी देने के साथ अति सरल रूप से रोज़ के कामकाज़ में हिन्दी का प्रयोग करने की सलाह दी। समापन समारोह की समाप्ति धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुई।

एरी अनुसंधान प्रसार केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, फतेहपुर (उ०प्र०) में दिनांक 17.09.2022 को हिंदी पखवाडा के शुभारम्भ में केंद्र के श्री सूरज पाल, वैज्ञानिक-डी ने सूरत (गुजरात) में हिन्दी दिवस समारोह 2022 एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन (14-15 सितम्बर, 2022) में भाग लेकर लौटे, कार्यक्रम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी।

अनुसंधान विस्तार केंद्र, बारामती में दिनांक 14.09.2022 को हिंदी दिवस मनाया गया। उस अवसर पर श्री हुमायूं शरीफ वाई, वैज्ञानिक-डी ने सब कर्मचारियों को हिंदी में 100% काम करने को कहा और रोज के कामकाज में हिंदी का उपयोग करने को कहा। मुख्य अतिथि श्री सागर पाटिल, डाकपाल, डाकघर मालेगांव बारामती ने हिंदी के अनुभव के बारे में बताया एवं हिंदी सीखना क्यों आवश्यक है इस बारे में जानकारी दी एवं सभी से अनुरोध किया कि हिंदी में ज्यादा से ज्यादा कार्य करे। श्रीमती नीता एम. डांग, वरिष्ट तकनीकी

सहायक ने सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड का संदेश पढ़कर सुनाया । हिंदी का कहाँ-कहाँ प्रयोग होता है उस बारे में जानकारी दी एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के महत्व के बारे में जानकारी दी। कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने कार्यक्रम में भाग लिया एवं कार्यक्रम को सफल बनाया।

रेशमकीट बीज उत्पादन केंद्र, राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, जोरहाट में 14 सितम्बर 2022 को "हिन्दी दिवस" पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। "हिन्दी दिवस" समारोह, डॉ. डी. मेच, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। उन्होंने अपने भाषण में, उपस्थित सभी कर्मचारियों को "हिन्दी दिवस" समारोह के हर कार्यक्रम में पूर्ण सहयोग देने के लिए आह्वान किया। इसके बाद हिंदी आशुभाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें सभी कर्मचारियों ने बड़ी उत्साह के साथ भाग लिया। प्रभारी महोदया ने अपने भाषण में हिन्दी भाषा सीखने तथा लिखने के लिए सभी कर्मचारियों को सहज सरल पद्धति अपनाने के लिए परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि भारत देश के अलावा विदेशों में भी हिन्दी भाषा को महत्व दिया जा रहा हैं। हिन्दी पखवाड़ा के दौरान तीन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। 29 सितम्बर 2022 को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह में डॉ कार्तिक नेओग, वैज्ञानिक-डी, आर.एस.आर.एस., जोरहाट मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित रहे। विजेताओं ने अपना पुरस्कार अध्यक्ष महोदय तथा विशिष्ट अतिथि से ग्रहण किया। धन्यवाद ज्ञापन करते हुए हिन्दी पखवाड़ा की समाप्ति की घोषणा की गई।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, सहसपुर, देहरादून में दिनांक 01 सितम्बर 2022 से 15 सितम्बर 2022 तक हिन्दी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। दिनांक 01.09.2022 को दीप प्रज्ज्वलन के साथ पखवाड़े का उद्घाटन करते हुए केंद्र के प्रभारी श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान, वैज्ञानिक-डी ने अपने सम्बोधन में कहा कि राजभाषा हिन्दी को कार्यालय में बढ़ाने के लिए सभी का सहयोग अपेक्षित है। सभी पत्राचार भी शत प्रतिशत हिन्दी में ही करें। इसके अतिरिक्त उन्होंने बताया कि केंद्र द्वारा आयोजित कृषक दिवस, गोष्ठी आदि कार्यक्रम हिन्दी में ही आयोजित किये जा रहे है। कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्रीमती निवेदिता खण्डूरी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक एवं नामित हिन्दी कर्मचारी ने पखवाड़े के दौरान आयोजित होने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा सभी से इसमें भाग लेने का निवेदन किया। दिनांक 14-15 सितम्बर 2022 को श्रीमती निवेदिता खण्डूरी, वरिष्ठ तकनीकी सहायक द्वारा सूरत (गुजरात) में आयोजित हिन्दी दिवस समारोह 2022 व द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन 2022 में भाग लिया गया। दिनांक 28 सितम्बर 2022 को हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजित रंजन ओखंडियार, सदस्य सचिव, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलुरू के संदेश को पढ़ा गया तथा पखवाड़े के दौरान कार्यालय में आयोजित शब्दावली व सुलेख प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार की घोषणा की गयी।अंत में श्रीमती निवेदिता खण्डूरी, नामित हिन्दी कर्मचारी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़ा सम्पन्न हुआ।

अनुसंधान विस्तार केंद्र, केरेबो, परभणी में दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर 2022 तक हिंदी पखवाड़ा एवं 14 सितंबर 2022 को "हिंदी दिवस" समारोह का आयोजन श्री ए.एम. जाधव, वैज्ञानिक-सी, अ.वि.के., के.रे.बो., परभणी की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. सी. बी. लटपटे, प्रभारी अधिकारी, रेशम संशोधन योजना, व.ना.म.कृ.वि. परभनी उपस्थित थे। दीप प्रज्ज्वलन करने के उपरान्त श्री ए.एल. जाधव, वैज्ञानिक-सी ने मुख्य अतिथि डॉ. सी.बी. लटपटे का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया एवं कार्यक्रम का आरंभ किया गया। श्री ए.एल. जाधव, वैज्ञानिक-सी ने सभी उपस्थितों को हिंदी दिवस एवं राजभाषा पखवाड़े की हार्दिक शुभकामना दी एवं कार्यालय को प्राप्त माननीय सदस्य सचिव, केरेबो, बेंगलूरू का संदेश पढ़कर सुनाया। श्री ए.एल. जाधव, वैज्ञानिक-सी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केंद्र में राजभाषा हिंदी में हो रही प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की और साथ ही मूलरूप से सरकारी कामकाज हिंदी में निष्पादित करने पर केन्द्रीय रेशम बोर्ड की हिंदी टिप्पण-आलेखन उदार प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत कार्यालय के कर्मचारियों को नकद पुरस्कार के लिए अभिनन्दन किया। अंत में वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्री एम.पी. इंगले द्वारा आभार प्रकट करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गई।

हिन्दी कार्यशाला

केन्द्रीय रेशम बोर्ड, केन्द्रीय कार्यालय, बेंगलूरु में दिनांक 10.08.2022 को एक दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस विशेष कार्यशाला का आयोजन महिला व्याख्याताओं द्वारा और पूर्ण रूप से महिला कर्मचारियों के लिए किया गया। दो सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता एवं उद्घाटन डॉ. के.के. शर्मिला, निदेशक प्रभारी, राष्ट्रीय रेशम बीज संगठन, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री विजय कुमार, उपनिदेशक (राजभाषा), केरेबो ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया। इस अवसर पर श्री धीरज कुमार, उपनिदेशक (वित्त) एवं श्री आर.के. सिन्हा, उप सचिव (तक.) भी उपस्थित थे तथा अपने-अपने उद्गार व्यक्त किए। श्रीमती सी.पी. जयश्री, सहायक निदेशक (राजभाषा), रा.रे.बी.सं., बेंगलूरु ने निदेशक प्रभारी का परिचय करवाया। श्रीमती मीना कामत, सहायक निदेशक (राजभाषा), केरेबो, बेंगलूरु ने मुख्य अतिथि श्रीमती सीना राजेन्द्रन, उप निदेशक (रा.भा.), यू आर राव उपग्रह केन्द्र का परिचय करवाया जिन्होंने प्रथम सत्र में 'राजभाषा नियम व अधिनियम' विषय पर व्याख्यान दिया। दूसरे सत्र में श्रीमती वनजा राव के.आर., सहायक निदेशक (रा.भा.), एल आर डी ई, सी.वी. रमन नगर, बेंगलूरु ने 'राजभाषा कार्यान्वयन व पुरस्कार योजनाएं' विषय पर व्याख्यान दिया। इस कार्यशाला में केन्द्रीय कार्यालय के अतिरिक्त राष्ट्रीय रेशम कीट बीज संगठन तथा केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिकी व अनुसंधान संस्थान के महिला कर्मचारियों ने भी भाग लिया।

दिनांक 05.11.2022 (शनिवार) अवकाश दिवस को भी एक दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। दो सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता एवं उद्घाटन श्री जूलियन टोबायस, संयुक्त निदेशक (प्रशा), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु ने किया। अपने उद्घाटन संबोधन में उन्होंने कहा कि अवकाश के दिन में आयोजित इस कार्यशाला में हम पूरे मन से पूरा समय दे सकेंगे। कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री विजय कुमार, उपनिदेशक (राजभाषा), केरेबो ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक स्वागत किया एवं हिंदी के कार्यालयीन प्रचार एवं प्रसार में कार्यशाला की जरूरत पर बल दिया। इस अवसर पर श्री एम. महादेव, उपनिदेशक (प्रवले), श्री आर.के. सिन्हा उप (तक.) तथा श्री एस. संपत, सहायक निदेशक (प्रवले) भी उपस्थित थे। कार्यशाला में कुल 05 अधिकारियों तथा 09 कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में श्री विश्वनाथ झा, उपनिदेशक (राजभाषा), केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, राजभाषा विभाग, भारत सरकार, मुम्बई (सेवा निवृत) ने सर्वप्रथम भारत में राजभाषा के रुप में हिंदी के चयन एवं इसकी उपादेयता के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने संघ की राजभाषा नीति, नियम एवं कार्यान्वयन पर विस्तार से जानकारी दी। इसके अलावा उन्होंने उपस्थित सभी कर्मचारियों से हिंदी में परिचय प्राप्त किया। साथ ही, उन्होंने संस्कृत, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं के बीच शब्दों के उदाहरण से तादात्मय स्थापित किया। इसके अलावा उन्होंने उपस्थित सभी कार्मिकों से दक्षिण की एक भाषा सीखने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि दक्षिण में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु एक सकारात्मक संदेश दिया जा सके।

द्वितीय सत्र में श्री झा ने कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कामकाज के त्वरित निष्पादन हेतु गूगल टूल्स के प्रयोग की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इस संबंध में उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए अनुवाद टूल्स "कंठस्थ" के प्रयोग पर विशेष बल दिया। उन्होंने ई. टूल्स के माध्यम से किए गए अनुवाद को तुलनात्मक रुप से अन्य से अधिक उत्तम बताया। कार्यक्रम के अंत में श्रीमती मीना एस. कामत, सहायक निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय रेशम बोर्ड द्वारा अतिथि व्याख्याता तथा उपस्थित प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रकट किया गया।

केन्द्रीय रेशम प्रौद्योगिक अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु में दिनांक 17.08.2022 को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में तीन अधिकारियों एवं 16 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रशिक्षक के रूप में आमंत्रित श्री शैलेन्द्र नाथ दुबे, उप निदेशक (रा.भा.) (सेवानिवृत्त), जीएसटी ने राजभाषा नीति के अनुरूप प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग : चुनौतियां एवं समाधान विषय पर सारगर्भित व्याख्यान दिया। द्वितीय सत्र में श्री विजय

कुमार, उप निदेशक (रा.भा.), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु ने हिन्दी में टिप्पण-आलेखन एवं प्रशासनिक शब्दावली का प्रयोग पर प्रशिक्षण प्रदान किया। तृतीय सत्र में श्री ललन कुमार चौबे, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम एवं केन्द्रीय रेशम बोर्ड की राजभाषा कार्ययोजना पर विस्तार से प्रकाश डाला।

अक्टूबर-दिसंबर तिमाही में दिनांक 30.11.2022 को भी प्रशासनिक एवं तकनीकी कर्मचारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 23 कर्मचारियों ने भाग लिया। श्री विजय कुमार, उप निदेशक (रा.भा.), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु एवं श्रीमती मीना एस कामत, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने हिन्दी टिप्पण आलेखन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करते हुए प्रतिभागियों से अभ्यास भी करवाया।

बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, बिलासपुर कार्यालय में दिनांक 06.09.2022 को डॉ. एन.बी. चौधरी, वैज्ञानिक-डी की अध्यक्षता में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में श्री विक्रम सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी एवं सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बिलासपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यशाला का आयोजन दो सत्रों में किया गया। प्रथम सत्र में राजभाषा की संवैधानिक स्थिति एवं उनके सफल कार्यान्वयन हेतु आवश्यक सुझाव विषय पर तथा द्वितीय सत्र में ई-मेल एवं पावर प्वाइंट पर हिन्दी में कार्य करने हेतु प्रशिक्षण दिया गया । कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. एन.बी. चौधरी, वैज्ञानिक-डी ने सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को वर्तमान समय में हिंदी की अनिवार्यता के बारे में बताते हुए कहा कि हमारा कार्यालय हिंदी क्षेत्र में स्थित है। अत: हमारी और अधिक जिम्मेदारी होती है कि हम सरकारी पत्राचार में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें ।

प्रथम सत्र में श्री विक्रम सिंह, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी एवं सचिव, नराकास, बिलासपुर ने राजभाषा की संवैधानिक स्थिति एवं राजभाषा नीतियों को सफलता पूर्वक लागू करने हेतु आवश्यक सुझाव दिए एवं पावर प्वाइंट के माध्यम से राजभाषा के नियमों एवं अधिनियमों को समझाया। द्वितीय सत्र में श्री पी. एस. लोधी, वरिष्ठ अनुवादक (हिं) ने हिन्दी में ई-मेल भेजना एवं पावर प्वाइंट पर हिन्दी में पीपीटी तैयार करने संबंधी जानकारी दी तथा इसका अभ्यास करवाया। डॉ.एम एस राठौड़, वैज्ञानिक–डी एवं हिन्दी अनुभाग प्रभारी ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में मंच संचालन श्री लोधी ने किया।

दिनांक 09.12.2022 को भी डॉ. ए. वेणुगोपाल, निदेशक की अध्यक्षता में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डॉ. ऊषा तिवारी, विभागाध्यक्ष, शासकीय ई. राघवेन्द्र महाविद्यालय, बिलासपुर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं। कार्यशाला का आयोजन दो सत्रों में किया गया, प्रथम सत्र में सरकारी पत्राचार में सरल हिंदी का प्रयोग विषय पर तथा द्वितीय सत्र में कार्यालयी अनुवाद में अनुवाद टूल्स की भूमिका विषयों पर व्याख्यान दिए तथा अभ्यास कराया गया।

केन्द्रीय तसर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगड़ी, राँची में दिनांक 16.09.2022 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला सभी वैज्ञानिकों/ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए आयोजित की गई। कार्यशाला में संस्थान के श्री मो.शीश, सहायक निदेशक (प्रशा व लेखा), ने टिप्पण व आलेखन एवं प्रशासनिक तथा वित्तीय नियमों पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कार्यालयीन प्रयोग में टिप्पण-आलेखन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करने के अलावा प्रशासनिक एवं वित्तीय नियमों यथा परिवर्तित छुट्टी, अनुशासनिक कार्रवाई, कार्यालय प्रधान का वित्तीय अधिकार, ड्यूटी के प्रति कार्मिकों का दायित्व सहित विभिन्न प्रशासनिक विषयों पर जानकारी प्रदान की। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण ने सभी प्रतिभागियों का निःसंकोच कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने का आह्वान किया तथा सभी प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी का प्रयोग करें क्योंकि यह संस्थान 'क' क्षेत्र में स्थित है। अत: हम सभी का हिन्दी के प्रयोग के प्रति उत्तरदायित्व अधिक है। कार्यशाला का संचालन श्री एच.एस. राय, वरिष्ठ अनुवादक (हिन्दी) ने किया।

दिनांक 17.12.2022 को भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्थान के वरिष्ठ तकनीकी

सहायकों/एमटीएस के लिए आयोजित की गई। हिन्दी कार्यशाला में संस्थान के श्री कमल किशोर बडोला, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कम्प्यूटर पर सरकारी कामकाज राजभाषा हिन्दी में करने हेतु प्रशिक्षण दिया। उन्होंने राजभाषा विभाग द्वारा विकसित अद्यतन टूल्स/तकनीकियों की जानकारी साझा करते हुए ई-महा शब्दकोश, कम्प्यूटर में यूनिकोड एवं अन्य फॉण्ट्स के माध्यम से हिन्दी में कार्य करने के अलावा राजभाषा सम्बन्धी आवश्यक जानकारी प्रदान की। कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. के. सत्यनारायण ने उपस्थित सभी कार्मिकों से सरकारी कामकाज अधिक-से-अधिक कम्प्यूटर पर करने का आह्वान किया।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर में दिनांक 08.09.2022 को राजभाषा का व्यावहारिक प्रशिक्षण विषयक एक पूर्ण दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। संस्थान के कुल 20 अधिकारी/पदधारी इस कार्यशाला में उपस्थित थे। इन अधिकारियों को राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा राजभाषा नीति व इसके उपबंधों के सफल व सम्यक कार्यान्वयन और प्रचार-प्रसार के उपयोगार्थ विकसित विविध ई-टूल्स की विस्तृत जानकारी तथा इसके अनुप्रयोग व प्रचालन विधि पर व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। संस्थान के निदेशक प्रभारी महोदय डॉ. ए.आर. प्रदीप द्वारा भारतीय स्टेट बैंक, कोलकाता से पधारे अतिथि वक्ता श्री विजय कुमार दास, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा] का स्वागत किया।

तत्पश्चात, श्री विजय कुमार दास, मुख्य प्रबंधक [राजभाषा] ने राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा निर्धारित नियमों, उपबंधों व इसके प्रचार-प्रसार हेतु केन्द्र सरकार द्वारा समय-समय पर उठाए जा रहे नित नए प्रयासों से सभी पदधारियों को अवगत कराने के साथ ही साथ कार्यालय में हिंदी के अनुपालन संबंधी कठिनाईयों को दूर करने के सरल और सहज उपायों पर प्रकाश डाला। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया। सर्वशेष में श्री चंदन कुमार साव, वरिष्ठ अनुवादक [हिंदी] द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई।

दिनांक 15.11.2022 को भी "राजभाषा कार्यान्वयन के विविध आयाम" विषयक एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रमुख ध्येय राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा विकसित ई-टूल्स आदि के अनुप्रयोग से अवगत कराना था ताकि हिंदी के कार्यान्वयन में और भी गतिशीलता आने के साथ ही राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास हेतु अनुकूल माहौल की सृष्टि हो सके। इस अवसर पर संस्थान के कुल 13 पदधारियों को राजभाषा के नियमों व अधिनियमों और उसके सम्यक कार्यान्वयन आदि की विस्तृत जानकारी दी गई तथा इसके अनुप्रयोग संबंधी व्यवाहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

केन्द्रीय रेशम जनन द्रव्य संसाधन केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, होसूर में 27.12.2022 को केरेजसंके, ईएसएसपीसी व एसएसपीसी, होसूर के समस्त वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचारियों को राजभाषा के प्रति प्रेरित करने के लिए राजभाषा अधिनियम एवं इसके विभिन्न पहलुओं पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में कुल 06 वैज्ञानिक व 06 कर्मचारियों ने सक्रियता से भाग लिया। इस में हिन्दी शिक्षण योजना, गुवाहाटी से पधारे श्री. कोमल सिंह, उप निदेशक (राजभाषा) ने व्याख्यान दिया। कार्यशाला में केन्द्र की डॉ. एम. महेश्वरी, वैज्ञानिक डी एवं प्रभारी भी उपस्थित थी। उद्घाटन सत्र का संचालन करते हुए श्रीमती. शीबा. वी. एस, कनिष्ठ अनुवादक हिन्दी ने सभी का हार्दिक स्वागत किया। सत्र में केन्द्र की वैज्ञानिक डी एवं प्रभारी ने अपने संबोधन में उपस्थित समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को सलाह दी कि इस सत्र का भरपूर लाभ उठाएं और अपने दैनिक सरकारी कामकाज में सरल व सहज हिंदी का प्रयोग करने का हर संभव प्रयास करें। उन्होंने कहा कि राजभाषा के प्रचार प्रसार में इस प्रकार की कार्यशाला अत्यंत उपयोगी-सिध्द होगी। मुख्य अतिथि श्री. कोमल सिंह, उप निदेशक (राजभाषा) ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा में कार्य करना हमारा संवैधानिक दायित्व है तथा अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा के माध्यम से करने पर जोर देते हुए ऐसे कार्यक्रमों की उपयोगिता पर बल दिया। मुख्य अतिथि ने केंद्र के वैज्ञानिक प्रतिभागियों को बहुत रोचक एवं सरल तरीके से राजभाषा का परिचय दिया जिसमें सरल हिन्दी का उपयोग,

पत्र लेखन एवं स्वयं अभ्यास, राजभाषा अधिनियम एवं इसके विभिन्न पहलू आदि शामिल थे। प्रतिभागियों ने कार्यशाला पर बहुत सकारात्मक प्रतिक्रिया दी और बताया कि इस तरह की कार्यशालाएँ हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन में उनके लिए अधिक सहायक है।अन्त में कार्यशाला के समापन समारोह के दौरान केन्द्र की क. अनु. (हिन्दी) ने वैज्ञानिक-डी एवं प्रभारी व समस्त प्रतिभागियों को सक्रियता से भाग लेने व हिंदी कार्यशाला को सफल बनाने के लिए धन्यवाद दिया।

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु एवं इसके अधीनस्थ इकाइयों के प्रभारी अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 25.08.2022 को बोर्ड रूम, केरेबो, बेंगलूरु में एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में हिंदी के प्रगामी प्रयोग, राजभाषा नीति, राजभाषा नियम और संसदीय राजभाषा निरीक्षण संबंधी विषय पर श्री विजय कुमार, उप निदेशक (रा.भा.) केरेबो, बेंगलूरु ने विस्तार से व्याख्यान दिया। इसमें कुल 19 वैज्ञानिकों ने भाग लिए। इसी प्रकार, रारेबीसं के पहचाने गए कुछ इकाइयों के 07 कर्मचारियों के लिए दिनांक 30.09.2022 को एक ऑनलाईन कार्यशाला का आयोजन श्री सुनिल कुमार पी., वरिष्ठ अनुवादक द्वारा किया गया। कार्यशाला में टिप्पण आलेखन और प्रशासनिक शब्दावली के बारे में कर्मचारियों को अवगत कराने के साथ-साथ प्रश्नावली देकर व्यावहारिक अभ्यास भी करवाया गया ताकि पदधारी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करें। दिसंबर माह के दोरान रारेबीसं मुख्यालय के कर्मचारियों के लिए दिनांक 26.12.2022 को एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें श्रीमती मीना एस. कामत, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने कर्मचारियों को फाइल में टिप्पणी लिखने के लिए आवश्यक लघु वाक्य और प्रशासनिक शब्दावली को सरल रूप से सिखाया, कार्यशाला के अंतिम चरण में पारस्परिक चर्चा के साथ उपस्थित पदधारियों की शंकाओं को दूर करने का भरपूर प्रयास किया गया। कार्यशाला में 10 कर्मचारी उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक 19.12.2022 को संयुक्त हिंदी कार्यशाला हिंदी भाषा की प्रयोगधर्मिता एवं सार्थकता" विषय पर आयोजित की गई। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु अतिथि वक्ता के रूप में श्री नरेश कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, लोधी रोड, नई दिल्ली को आमंत्रित किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) द्वारा उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के परिचय के साथ किया गया। श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक) ने अपने अध्यक्षीय संबोधन के साथ मुख्य अतिथि वक्ता श्री नरेश कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो एवं भारतीय पशु चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली कार्यालय के डॉ. जयंत कुंभकर, वैज्ञानिक अधिकारी सहित क्षेका, केरेबो, नई दिल्ली एवं भारतीय पशु चिकित्सा परिषद, नई दिल्ली के उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का अभिनंदन एवं स्वागत संबोधन के साथ शुभारंभ करते हुए उन्होंने बताया कि नियमित कार्यशाला के आयोजन द्वारा महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा-परिचर्चा, विचार-विमर्श से राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में गति मिलती है एवं सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को विषय पर नवीनतम एवं ज्ञानवर्धक जानकारी प्राप्त होती है।

श्री नरेश कुमार, उप निदेशक (राजभाषा) ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित कर बताया कि भाषा मानव जीवन के साथ जुड़ी है। भाषा का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अभिव्यक्ति से है। अलग-अलग क्षेत्र में प्रयुक्त होने मात्र से मानव समुदाय की भाषा में विकास होता है। श्री महेश साव, कनिष्ठ अनुवादक (हिंदी) ने कार्यशाला के अतिथि वक्ता श्री नरेश कुमार, उप निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो एवं श्री दाशरथी बेहेरा, सहायक सचिव (तक), नई दिल्ली तथा डॉ. जयंत कुंभकर, वैज्ञानिक अधिकारी सहित उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के सहयोग से कार्यशाला सफलतापूर्वक सम्पन्न की गई।

क्षेत्रीय कार्यालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, कोलकाता में दिनांक 12.09.2022 को कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में कुल 3 अधिकारी एवं 5 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उदघाटन कार्यालय अधक्ष्य श्री गोपालकृष्ण सामन्त द्वारा किया गया जिन्होंने अपने

सम्बोधन में राजभाषा के नियम एवं धाराओं से सभी को अवगत कराया।

दिनांक 26.12.2022 को भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में कुल 2 अधिकारियों एवं 5 कर्मचारियों ने भाग लिया। अध्यक्षता श्री परेशनाथ मोदक, उप-निदेशक (निरी.) द्वारा की गई । अतिथि व्याख्याता के रूप में श्री नवीन कुमार प्रजापति, वरिष्ठ सलाहकार व केंद्र प्रभारी, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, निजाम पैलेस, कोलकाता आमंत्रित थे।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, सहसपुर, देहरादून में दिनांक 28 सितम्बर, 2022 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। अध्यक्षता कार्यालय प्रभारी श्री सुरेन्द्र सिंह चौहान, वैज्ञानिक-डी ने की जिन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकारी कामकाज में प्रयोग में आने वाली हिन्दी भाषा आसानी से समझ में आने वाली भाषा बनाना होगा। उन्होंने बताया कि राजभाषा नीति का अनुपालन करना सिर्फ हिन्दी अनुभाग का ही दायित्व नहीं अपितु प्रत्येक अधिकारी/ कर्मचारी से अपेक्षा की जाती है कि वे हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करें। श्री छतरपाल, वैज्ञानिक-सी ने कार्यालय में उपयोग होने वाले तकनीकी शब्दों के उपयोग पर अपने सुझाव दिये, साथ ही सभी से यह भी अनुरोध किया कि निदेशक कार्यालय, पम्पोर एवं केन्द्रीय कार्यालय, बेंगलूरु को द्विभाषी पत्र भेजने में सभी अपना योगदान दें। सभी का धन्यवाद व्यक्त करते हुये कार्यशाला सम्पन्न हुई।

रेशम तकनीकी सेवा केंद्र, कटक में दिनांक 14.09.2022 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं कार्यालय में उपस्थित सभी कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यालय के अनुरोध पर श्री मदन कुमार, हिंदी प्रध्यापक, बी.एस.एन.एल ने हिंदी मसौदा और टिप्पण आलेखन के बारे में चर्चा की और हिंदी पत्रों के विभिन्न रूपों के बारें में अवगत कराया और धारा 3(3) के अंतर्गत जारी कागजात अधिक से अधिक द्विभाषी करने के बारे में भी चर्चा की । कार्यशाला के अंत में श्रीमती संजुबला मोहंती, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री निखिलेस पंडा के प्रति आभार प्रकट करते हुए सभी कर्मचारियों को धन्यवाद दिया। इसके बाद कार्यशाला समाप्त की गई।

दिनांक 22.12.2022 को भी हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री मदन कुमार, हिंदी प्रध्यापक, बी.एस.एन.एल. ने कार्यालय में हिंदी यूनिकोड और कंठस्थ के बारे में चर्चा की और यूनिकोड अपना कम्प्युटर पर लोड कर के कैसे आसानी से काम कर सकते हैं इसके बारे में अवगत कराया ।

रेशम तकनीकी सेवा केंद्र, मीरां साहिब, जम्मू में दिनांक 30.12.2022 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन वैज्ञानिक-डी श्री नंद सिंह गहलोत की अध्यक्षता में किया गया। श्री पवन कुमार शर्मा, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने सभा में उपस्थित सभी सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हमारे कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यावयन समिति द्वारा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सीएसआईआर- भारतीय औषध संस्थान, जम्मू की द्वितीय अर्धवार्षिक बैठक नवम्बर 2022 को राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिये पुरस्कृत कर रेशम तकनीकी सेवा केंद्र, केंद्रीय रेशम प्रोद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मीरां साहिब, जम्मू को शील्ड प्रदान की गई, अध्यक्ष महोदय ने कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करते हुए बताया कि यह मेरी हार्दिक इच्छा थी, जो आप सब के संयुक्त प्रयास व परिश्रम की वजह से ही संभव हो पाया है जिसके लिये सब वधाई के पात्र हैं। वैज्ञानिक-डी/अध्यक्ष महोदय ने कहा कि कार्यालय में सभी को हिंदी का ज्ञान तो है पर हिंदी की बढोतरी हेतु अभी भी बहुत कुछ किया जा सकता है। सदस्य संचालक ने हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया और कहा कि इस कार्यशाला में हमने बहुत कुछ नई चीजें सीखी जिनसे हम अपने दैनिक कार्य को और आसान बना सकते हैं। इसी के साथ सदस्य संचालक ने धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम को समाप्त करने की घोषणा की।

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, पाम्पोर, जम्मू व कश्मीर में दिनांक 13.09.2022 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें श्री कुलदीप कुमार पुष्पाकर, शिक्षक हिंदी,

केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक-01 श्रीनगर को मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। अध्यक्षता संस्थान के डॉ. सरदार सिंह, निदेशक प्रभारी ने की। कार्यशाला दो सत्रों में संपन्न हुई। प्रथम सत्र में 'राजभाषा हिन्दी का सरकारी कार्यालय में प्रयोग' तथा दूसरे सत्र में ' हिंदी व्याकरण पर विस्तृत चर्चा कर प्रतिभागियों से अभ्यास कराया।

कार्यशाला का शुभारम्भ निदेशक प्रभारी डॉ. सरदार सिंह, मुख्य अतिथि वक्ता एवं संस्थान के अन्य वरिष्ठतम वैज्ञानिक-डी, राजभाषा अधिकारी/कर्मचारी द्वारा दीप प्रज्जवलित कर किया गया। इसके बाद श्री अल्ताफ कौल, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने निदेशक प्रभारी, मुख्य वक्ता एवं उपस्थित समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों का स्वागत किया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि ने सभी प्रतिभागियों को हिंदी व्याकरण के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषा के सही प्रयोग के लिए उस भाषा के व्याकरण की जानकारी होनी आवश्यक है अन्यथा हम उस भाषा के सौंदर्य से परिचित नहीं हो पाएंगे। कार्यशाला में श्री सत्येन्द्र प्रसाद टम्टा, सहायक अधीक्षक (प्रशा.) ने सभी सरकारी कर्मचारियों को अधिक से अधिक हिंदी का अभ्यास एवं प्रयोग के साथ राजभाषा का प्रचार-प्रसार करने का अनुरोध किया। डॉ. सरदार सिंह, निदेशक प्रभारी ने अपने संबोधन में कहा कि संस्थान के अनुसंधान एवं क्रियाकलापों का हिन्दी में अधिक से अधिक प्रचार व प्रसार किया जाए तथा लेख, कविता आदि को संस्थान की पत्रिका में प्रकाशित किया जाए। उन्होंने यह भी कहा, कि राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को कार्यालय में बढ़ाने के लिए एक उत्साहजनक वातावरण बनाए जाने की आवश्यकता है, जिसमें सभी का सहयोग अपेक्षित है। कार्यक्रम का संचालन श्री अल्ताफ कौल, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ समापन की घोषणा की गई। दिनांक 11.11.2022 को भी एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

रेशम कीट बीज उत्पादन केन्द्र, जोरहाट में दिनांक 30.12.2022 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया और कार्यालय के सभी कर्मचारियों और अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया।अध्यक्षता डॉ. डि.मैच, वेज्ञानिक-डी एवं प्रभारी अधिकारी रे.की.बी. उ .के, जोरहाट ने की। उन्होंने प्राप्ति और प्रेषण संबधित नियमों के बारे में बताया और संक्षिप्त में परिपत्र लेखन के बारे में भी चर्चा की। साथ ही हिंदी अनुवाद के लिए इंटरनेट का उपयोग के बारे में, गुगल अनुवाद के उपयोग एवं हिंदी व्याकरण के विषय में भी व्याख्यान दिया।

क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केन्द्र, भीमताल द्वारा दिनांक 21.12.2022 को एक दिवसीय पूर्णकालिक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री शेख एजाज अहमद, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने कार्यशाला की अध्यक्षता की एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए हिन्दी कार्यशाला का शुभारम्भ किया। श्री विवेक चन्द्र फुलोरिया, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने कम्प्यूटर पर यूनीकोड मे हिन्दी में लिखे जाने वाले शब्दों की अशुद्धियों में सुधार संबंधी अभ्यास कराया। हिन्दी में होने वाली मात्राओं की त्रुटियाँ के बारे में विस्तार से बताया एवं अभ्यास कराया। केन्द्र के श्री शेख एजाज अहमद, वरिष्ठ तकनीकी सहायक ने हिन्दी पर अपने विचार रखे और केन्द्र के सभी कर्मचारियों से हिन्दी में ही कार्य करने का अनुरोध किया और कहा कि कार्यालय में अधिकाधिक हिन्दी भाषा को प्रयोग में लाने से हिन्दी को और अधिक सफलता मिलेगी। अभी तक इस तिमाही के दौरान कर्मचारियों द्वारा हिन्दी में किये गये पत्राचार, टिप्पणी आदि लिखने में काफी कम त्रुटियां पाये जाने पर प्रसन्नता व्यक्त की।

मूगा एरी रेशमकीट बीज संगठन, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, गुवाहाटी में दिनांक 30.12.2022 को मूगा एरी रेशमकीट बीज संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय एवं क्षेत्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, गुवाहाटी में संयुक्त रूप से एक दिवसीय पूर्णकालीन हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। उद्घाटन, दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु श्री रामलाल शर्मा, सहायक निदेशक, आयकर विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, गुवाहाटी को आमंत्रित किया गया। उद्घाटन सत्र के दौरान उन्होंने कहा कि हिन्दी हमारी राजभाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा भी है। इस आयोजन का उद्देश्य केवल आपको अपनी इस भाषा को सही व शुद्ध लिखने के लिए प्रेरित करना तथा सामान्य गलतियों की जानकारी देना है। उन्होंने इस अवसर पर देवनागरी लिपि के

मानकीकरण पर चर्चा करते हुए प्रतिभागियों को मानक देवनागरी लिपि की जानकारी दी। डॉ. प्रभात बरपुजारी, वैज्ञानिक-डी एवं प्रमुख ने कहा कि केन्द्रीय रेशम बोर्ड में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होने कार्यालयीन कार्य में शत-प्रतिशत हिन्दी में टिप्पणी लिखने के लिए सभी से आह्वान किया तथा कार्यशाला से पूर्ण लाभ उठाने को कहा। डॉ. लोपामुद्रा गुहा, वैज्ञानिक-सी एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी ने भाषा की सामान्य परिभाषा पर प्रकाश डाला। पहले सत्र में श्री बदरी यादव ने हिन्दी मसौदा तथा टिप्पणी लिखने पर प्रशिक्षण प्रदान किया। अंत में डॉ. लोपामुद्रा गुहा, वैज्ञानिक-सी ने आशा व्यक्त की कि सभी उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी अवश्य इस कार्यशाला से लाभान्वित हुए होंगे तथा कार्यशाला के आयोजन में सहयोग करने वाले अधिकारियों व सहकर्मियों के प्रति भी आभार व्यक्त किया। श्री गोपाल सुत्रधर, प्रवर श्रेणी लिपिक द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के पश्चात कार्यशाला की समाप्ति की घोषणा की गई।

***

सेल्फियाना प्रेम

-एस.के. घोष

मनुष्य का स्वभाव यायावरी प्रवृत्ति का होता है। पाषाण युग का मनुष्य झुंड बनाकर घूमता था। वह मनोरंजन या फिर भावभिव्यक्ति के लिए अपने रहने के स्थान या गुफाओं में कुछ रेखाचित्र उकेर देता था। फिर उसने गायन वादन नृत्य चित्रकला जैसी कलाओं में खुद को निखारा। इसके साथ-साथ मानव ने अपनी जिज्ञासा और आवश्यकता को पूरा करने के लिए खोज भी आरंभ कर दी। वह विज्ञान और प्रौद्योगिकी की ओर चल पड़ा। उसने नए-नए ईजाद किए। हवाई-जहाज, रेडियो, टेलिविजन, टेलिफोन, जीवनरक्षक दवाएं और उपचार के उपकरण आदि। फिर आई सूचना क्रांति तो कंप्यूटर बना। इससे भी ज्यादा क्रांतिकारी आविष्कार हुआ मोबाईल फोन का। सूचना का वह पुलिंदा, जिसे हम जेब में लेकर घूम सकते हैं। आज तो इस मोबाइल का प्रयोग बहुविध प्रकार से किया जाता है। इसका सबसे बड़ा उपयोग है, खुद की फोटो लेना, जिसे सेल्फी कहा जाता है। और इस वायरस से पूरा विश्व पीड़ित है। कोरोना से भी भयंकर बीमारी 'सेल्फी' को साक्षी कहूं या फिर हमदर्द की तरह साथ-साथ चलने वाली हमसफर। चाहे लोग भूख से बेहाल होकर पैदल मार्च कर रहे थे, या रेल की पटरियों पर सोए, अधिकांश ने सेल्फी अपने व्ट्सएप स्टेटस पर डाली। इस परमवीर मनुष्य की हालत चाहे जो भी हो, परंतु सेल्फी जरूर ली जाएगी। चाहे खुशी का समारोह हो या गम का मौका' सेल्फी लेना या सेल्फियाना भी समाज में धाक जमाने का प्रतीक है।

सेल्फी प्रेम कई बार देश प्रेम से भी ज्यादा असरदार दिखाई पड़ता है। यह वह खाज है, जिसे करने में मजा तो आता है, लेकिन कई बार-इसके लिए जान की बाजी भी लग जाती है। सड़क पर चलते-चलते सेल्फी लेना और पहाड़ी नदियों के बीच चट्टानों पर खड़े होकर सेल्फी लेना ऐसा नशा है, जिसके कारण लोग नदी में आए अचानक वेग या फिर थोड़ा-सा संतुलन बिगड़ते ही जान से हाथ धो बैठे। तो कभी समुद्र तट पर सेल्फी लेते-लेते समुद्र में ही डूब गए। ऐसे न जाने कितने उदाहरण हैं, जहां सेल्फी के चक्कर में लोग घनचक्कर बन जान से हाथ धो बैठे। लेकिन इस सेल्फी का नशा है कि छूटता ही नहीं। सेल्फी एक जंग है, जीवन के लिए दंश भी है। इतना ध्यान या तो हम ईश भक्ति में या फिर अपने कैरियर में लगाएंगे, तो जीवन ही धन्य व सफल हो जाएगा।

"जादू है नशा है, मदहोशियां
तुमको भुलाके, अब जाउं कहाँ?"

- सेवानिवृत्त सहायक निदेशक (प्रवले)
सिविल लाईन्स, बंगालीपारा
रायगढ़-496001 (छत्तीसगढ़)

इतिहास के पन्नों से

मध्ययुगीन भारत में सूरत: यूरोपीय शक्तियों का अंतर प्रभाव

-राजेश कुमार सिन्हा

तापी या ताप्ती नदी पर स्थित सूरत शहर का गौरवशाली इतिहास 300 ईसा पूर्व का है। हालाँकि, उपलब्ध साहित्य के अनुसार शहर की स्थापना गोपी नाम के एक ब्राह्मण ने की थी जिन्होंने 1516 में गोपी तालाब का निर्माण किया था और इस क्षेत्र का नाम सूर्यपुर रखा । 1520 में इसे सूरत शहर का नाम मिला।

सूरत शहर को विदेशी हमलों से बचाने के लिए स्थानीय सुल्तान महमूद शाह III ने उस समय एक किला बनवाया था जब मुगल सम्राट हुमायूँ निर्वासन में थे। जब सम्राट अकबर ने 1573 में गुजरात सूबे को अपने साम्राज्य में मिला लिया तो यह किला मुगल आधिपत्य में आ गया और सूरत मुग़ल साम्राज्य का सबसे समृद्ध बंदरगाह बन गया ।

भारत के दक्षिण-पूर्वी गुजरात राज्य में स्थित सूरत शहर, खंभात की खाड़ी में ताप्ती नदी के मुहाने के पास स्थित है। शहर में अरब सागर के किनारे इसकी अवस्थिति ने सूरत को एक महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र के रूप में उभरने में मदद की और 16-18वीं शताब्दी के दौरान समुद्री व्यापार से इसे समृद्धि मिली। भारत एवं कई अन्य देशों के बीच सूरत सबसे महत्वपूर्ण व्यापार संपर्क बन गया और जहाज निर्माण गतिविधियों के अलावा अन्य कई क्षेत्रों में समृद्धि की ऊंचाई पर पहुंच गया। बम्बई में बंदरगाह के उत्थान के बाद, सूरत को गंभीर झटका लगा और इसके जहाज निर्माण उद्योग में भी गिरावट आई। उत्थान और पतन के बीच झूलते हुए स्वतंत्रता के बाद, सूरत में व्यापारिक एवं अनेक औद्योगिक गतिविधियों, विशेष रूप से हीरे की कटाई, ज़री बनाने और वस्त्र उद्योग में काफी वृद्धि हुई है ।

अपनी स्थापना काल से ही सूरत को एक महानगरीय शहर के रूप में मान्यता दी गई। शहर के विकास के तरीके और समय के साथ इसकी वास्तुकला में हो रहे परिवर्तनों को साफ-साफ देखा जा सकता है। चारदीवारी वाले शहर का सबसे भीतरी और सबसे पुराना केंद्र होने के नाते, गोपीपुरा का क्षेत्र सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास की दृष्टि से गौरव का केन्द्र है। इसकी गलियों में घूमते हुए कानों में गूंजती एक कहानी पिछली और आने वाली पीढ़ियों की अपने इतिहास में समाहित वैश्वीकरण की सच्ची भावना का परिचय तो देती ही है, वर्तमान के लिए प्रासंगिक भी है। इमारतों और संरचनाओं में अद्भुत वास्तुकला शैलियां देखी जा सकती हैं जो समय के साथ विकसित हुई, और एक बीते भव्य समय का बहुत ही सटीक परिचय देती है।

आइए, 16वीं सदी की शुरुआत में भारत में पहली बार प्रवेश करने वाली विभिन्न यूरोपीय शक्तियों, दूसरों पर हावी होने की उनकी रणनीतियों और प्रभाव के बारे में समझें।

भारत के लिए समुद्री मार्गों की खोज से पहले भी एशियाई और यूरोप देशों के बीच व्यापारिक संबंध थे। अरबों और तुर्कों द्वारा मिस्र, सीरिया और कॉन्स्टेंटिनपोल देशों पर विजय प्राप्त करने के साथ, यूरोपीय कंपनियों के लिए भारत का भूमि व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गया; इसलिए, उन्होंने समुद्री मार्गों की खोज की आवश्यकता पर बल दिया क्योंकि भारत से रेशम सहित मसालों और वस्त्रों जैसे सामानों की पूरे यूरोप में भारी मांग थी।

यूरोपीय विभिन्न चरणों में भारत आये। व्यापारी के रूप में भारत आने वाले सबसे पहले पुर्तगाली थे, उसके बाद ब्रिटिश, डच, डेनिश और फ्रांसीसी थे जिन्होंने बाद में भारत के राजनीतिक स्वामी बनने की योजना बनाई, जिसमें अलग-अलग शक्तियों को कभी सीमित क्षेत्र या समय-काल में तो किसी को बहुआयामी सफलता कदम चूमने को आयी लेकिन इन सबका प्रभाव भारत के सामाजिक, आर्थिक या फिर सांस्कृतिक हित में तो कदापि नहीं था।

पुर्तगाली

हम सब जानते हैं कि अंग्रेजों ने हमें किस प्रकार लूटा। लेकिन हम प्राय: भूल जाते हैं कि व्यापार के नाम पर लूटपाट पुर्तगालियों ने शुरू की थी जिसकी शुरुआत वास्को डी गामा की यात्रा से हुई थी जिन्हें भारत की खोज़ का श्रेय भी दिया जाता रहा है। वास्को डी गामा मई 1498 में केप ऑफ गुड होप के माध्यम से कालीकट पहुंचे थे जहां स्थानीय शासक ज़मोरिन ने उनका स्वागत किया था। वर्ष 1500 में पुर्तगालियों ने पेड्रो अल्वेरेस कैब्रल के नेतृत्व में दूसरा मिशन भेजा।

अफोंसो डी अल्बुकर्क के वाइस-रॉयल्टी के अधीन, पुर्तगालियों ने वर्ष 1510 में गोवा पर कब्जा कर लिया। उन्होंने भारतीय तटीय क्षेत्रों को जब्त कर लिया; कोचीन, गोवा, दमन और दीव, साल्सेट और बेसिन और बॉम्बे में अपनी व्यापारिक बस्तियां स्थापित कीं और अपने यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों से अपने व्यापार एकाधिकार की रक्षा करने व क्षेत्र विस्तार के लिए हमेशा युद्धरत रहे ।

पुर्तगाली भारत तक समुद्री मार्ग की खोज के बाद हिंद महासागर को अपना उपनिवेश मानते हुए वहां का संप्रभु बन बैठे। कार्टाज़

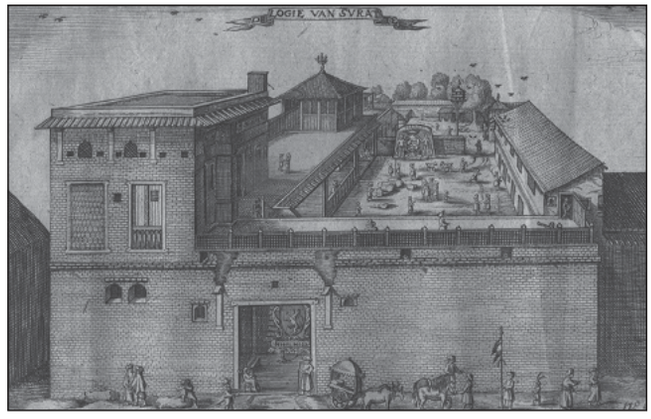

प्रणाली के आधीन पुर्तगालियों ने नौसैनिक व्यापार लाइसेंस जारी करना शुरू कर दिया और हिंद महासागर के माध्यम से निर्यात-आयात पर अपना एकाधिपत्य जमा लिया।

मुगल युवराज मिर्जा खुर्रम (बाद में सम्राट शाहजहाँ), जिनके पास सूरत की जागीर थी, ने अन्य यूरोपीय शक्तियों की तुलना में पुर्तगालियों का पक्ष लिया और भारतीय व्यापारियों की प्रतिनिधि संस्था, सूरत महाजन सभा ने भी ऐसा ही किया।

वर्ष 1609 में अंग्रेजों को व्यापारिक सुविधाएं देने से पुर्तगाली नाराज हो गये थे। लेकिन बातचीत के बाद मुगल सम्राट और पुर्तगालियों के बीच समझौता हो गया। पुर्तगालियों ने ब्रिटिश जहाजों को सूरत के बंदरगाह में प्रवेश करने से रोक दिया।

हालाँकि, युवराज खुर्रम ने ही 1618 में सम्राट जहाँगीर के नाम पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को मुक्त व्यापार के लिए फ़रमान जारी किया था जब अंग्रेजों ने सूरत में पुर्तगाली बेड़े को हराकर समुद्र पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया था ।

मुगल साम्राज्य की मुख्यधारा में पुर्तगाली शक्ति के विकास को रोकने वाले विभिन्न कारकों में से जहांगीर के दरबार में एक प्रभावशाली मुगल साम्राज्ञी हरखा बाई को नाराज करने की कहानी भी सुनने में आती है। जलाल-उद-दीन मुहम्मद अकबर के साथ शादी के बाद हरखा बाई को 12000 पुरुषों की घुड़सवार सेना की कमान दी गई। हरखा बाई की बेशकीमती संपत्तियों में से एक 'रहीमी' थी, जो उस समय समुद्र में सबसे बड़ा भारतीय जहाज था और हर साल 600-700 तीर्थयात्रियों को मक्का ले जाने के काम आता था। 1613 में, पुर्तगालियों ने इस शाही जहाज को जब्त कर लिया, इसे 700 लोगों के साथ गोवा जाने के लिए मजबूर किया और फिर आग लगा दी। जहाँगीर ने त्वरित और कड़ी कार्रवाई करते हुए सबसे महत्वपूर्ण व्यापारिक बंदरगाह सूरत से सभी पुर्तगाली व्यापार को बंद कर दिया। मुगल साम्राज्य ने उनकी गतिविधियों को दक्षिणी भारत के पश्चिमी तट तक सीमित कर दिया। पुर्तगाली गोवा की ओर पीछे हट गए, जिसे उन्होंने वर्ष 1961 तक अपने पास रखा जब स्वतंत्र भारत की सेना ने आक्रमण कर विजय प्राप्त की ।

भारत में डचों का आगमन

डचों ने भी भारत में अपने व्यापार केंद्र स्थापित किये। कॉर्नेलिस डी हाउटमैन भारत आने वाले पहले डच नागरिक थे। डच ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन वर्ष 1602 में हुआ था । उन्होंने पुर्तगालियों की सम्पतियों पर कब्ज़ा कर लिया और भारत में मसाला खेती के केंद्रों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। उन्होंने गुजरात, बंगाल, बिहार और उड़ीसा में अपनी व्यापारिक चौकियाँ स्थापित कीं। पहला डच कारखाना 1605 में मसूलीपट्टम में स्थापित किया गया था; अन्य महत्वपूर्ण कारखाने पुलिकट (1610), सूरत (1616), कासिम बाजार, पटना, बालासोर, नागपट्टनम और कोचीन में थे। डच अधिकतर मसालों, नील, कच्चे रेशम, चावल और अफ़ीम का व्यापार करते थे। यह डच व्यापारी ही थे जिन्होंने भारत को कपड़ा निर्यात का केंद्र बनाया। डच सुरटे, आधिकारिक तौर पर नेदरलैंड्स वेस्टिंग वैन सुर्ते (सूरत में डच बस्ती), 1616 और 1795 के बीच डच ईस्ट इंडिया कंपनी का एक निदेशालय था, जिसका मुख्य कारखाना सूरत शहर में था।

पिछले प्रयास विफल होने के बाद, पीटर वैन डेन ब्रोके ने वर्ष 1616 में सूरत में एक डच व्यापारिक पोस्ट की स्थापना की। आचे के सुल्तान द्वारा उन्हें स्थानीय बाजार में सस्ता कपास खरीदने की अनुमति नहीं देने के बाद डच ईस्ट इंडिया कंपनी को यह केन्द्र खोलना पड़ा।

अपनी अहमदाबाद यात्रा के दौरान कंपनी द्वारा पैरवी के बाद जहाँगीर ने 12 मार्च 1618 को गुजरात में डच ईस्ट इंडिया कंपनी के लिए फ़रमान जारी किया, जिसमें कुछ उल्लेखनीय आश्वासन दिए गए, जैसे किसी भी मुगल बंदरगाह पर व्यापार करने की स्वतंत्रता, उनके मामलों को संभालने की स्वायत्तता, सामान्य सीमा शुल्क (2.5%), स्थानीय व्यापारियों के साथ व्यापार करने और अपना धर्म मानने की स्वतंत्रता।

मुगल साम्राज्य में आंतरिक अशांति के कारण, 18वीं शताब्दी की शुरुआत में मुगल राजधानी आगरा के साथ सूरत का व्यापार धीरे-धीरे कम हो गया, अधिकांश व्यापार अंग्रेजी पश्चिमी प्रेसीडेंसी की नई राजधानी बॉम्बे में स्थानांतरित हो गया। तीसरे कर्नाटक युद्ध (1756-1763) के परिणामस्वरूप यह शहर ब्रिटिश भारत का हिस्सा बन गया। वर्ष 1759 में, बेदारा की लड़ाई में, जिसका नेतृत्व रॉबर्ट क्लाइव ने किया था, अंग्रेजों ने उन्हें निर्णायक रूप से हरा दिया। यद्यपि डच ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारियों ने सूरत में व्यापार जारी रखा, और वे अंग्रेजों के अधीन हो गए थे।

केव लेटर्स के प्रावधानों के अनुसार डच सुरटे वर्ष 1795 में अंग्रेजी संरक्षण में आ गया, जो फ्रांस को एशिया में डच सम्पतियों पर कब्जा करने से रोकना चाहते थे। प्रारंभ में, अंग्रेजों ने डचों को अपना व्यापार जारी रखने और यहां तक कि उन्हें अपने कारखानों पर डच ध्वज फहराने की भी अनुमति दी, लेकिन फरवरी 1797 में, अंग्रेजी ध्वज फिर फहराने लगा और तीन महीने बाद अंतिम डच सैन्य बलों ने शहर छोड़ दिया।

1802 की अमीन्स की संधि का उद्देश्य डच सूरत में डच शासन बहाल करना और डच कारखाने पर कब्ज़ा करना था। हालाँकि, ऐसा होने से पहले यूरोप में विभिन्न ताकतों और कारकों के बीच

प्रतिद्वंद्विता फिर से शुरू हो गईं और परिस्थितियाँ एक बार फिर बदल गईं। वर्ष 1824 की एंग्लो-डच संधि के प्रावधानों के कारण, वर्ष 1825 में सूरत को फिर से अंग्रेजों को सौंप दिया गया।

ब्रिटिश वर्चस्व

17वीं शताब्दी के शुरुआती वर्षों में, सूरत एक हलचल भरा उद्यम केन्द्र था, जो दक्षिण पूर्व एशिया, अरब देशों, अफ्रीका और उससे आगे के देशों के साथ व्यापार करता था। इसके बंदरगाह पर बड़ी संख्या में जहाज आयातित सामानों से लदे हुए आते थे और वापसी यात्रा में रेशम, मसालों और कीमती पत्थरों से लदे होते थे। सूरत मुगलों का प्रमुख बंदरगाह था।

शुरुआती काल में मुगल सम्राट जहांगीर द्वारा ब्रिटिश कम्पनी भारत में व्यापार करने की अनुमति देने के बाद सूरत में ही बसे थे। सर विलियम हॉकिन्स ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी की भारत यात्रा का नेतृत्व किया और ड्रैगन की भूमि से रवाना होने के बाद 24 अगस्त 1608 को गुजरात के सूरत बंदरगाह पर पहुंचे। हॉकिन्सअंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी का प्रतिनिधि था, जो हेक्टर जहाज का कमांडर भी था। एंथोनी मार्लो ईस्ट इंडिया कंपनी के गवर्नर को अपने पत्र में लिखते हैं कि हॉकिन्स इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम से मुगल सम्राट के नाम एक निजी पत्र लेकर आये जिसमें भारत में व्यापार करने की अनुमति देने और व्यापार रियायतें मांगने का अनुरोध किया गया था।

29 नवंबर 1612 को सूरत के पास एक गांव सुवाली के तट पर कैप्टन थॉमस बेस्ट के नेतृत्व में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना और पुर्तगालियों के बीच लड़ी गई स्वाली (सुवाली) की लड़ाई निर्णायक और ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण थी क्योंकि इसी से भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की उपस्थिति दर्ज हुई ।

इसने भारत में यूरोपीय ताकतों के समीकरण को बदल दिया और मुगल सम्राट जहांगीर ने एक फरमान जारी कर वर्ष 1613 की शुरुआत में थॉमस एल्डवर्थ के अधीन सूरत में एक कारखाना स्थापित करने के लिए अंग्रेजों को अनुमति दी। 6 जनवरी 1613 को, मुगल सम्राट जहांगीर ने कैप्टन थॉमस बेस्ट को एक पत्र जारी किया जिसमें गुजरात के गवर्नर द्वारा की गई संधि की पुष्टि की गई और सूरत में ईस्ट इंडिया कंपनी की पहली फैक्ट्री की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

वर्ष 1615 में सर थॉमस रो को इंग्लैंड के राजा जेम्स प्रथम ने कंपनी के लिए अधिक रियायत के अनुरोध के साथ जहाँगीर के दरबार में भेजा था। रो बहुत कूटनीतिक था और उसने सफलतापूर्वक एक शाही चार्टर हासिल कर लिया जिससे कंपनी को पूरे मुगल क्षेत्र में व्यापार करने की आजादी मिल गई।

जब इंग्लैंड के चार्ल्स द्वितीय ने वर्ष 1662 में पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन से विवाह किया तो उन्हें दहेज के रूप में बॉम्बे द्वीप मिला जिसे उन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया। पश्चिमी तट पर कंपनी ने अपना व्यावसायिक मुख्यालय सूरत से बॉम्बे (मुंबई) स्थानांतरित कर दिया।

जब से अंग्रेज़ भारत आये, उन्हें अन्य यूरोपीय शक्तियों से चुनौतियों का सामना करना पड़ा। भारत में व्यापार और वाणिज्य पर पूर्ण एकाधिकार स्थापित करने के ब्रिटिश कंपनी को उन्हें बार-बार फ्रांसीसियों के साथ संघर्ष करना पड़ा। तीसरे कर्नाटक युद्ध में, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 22 जनवरी, 1763 को वांडीवाश में फ्रांसीसी सेना को हरा दिया, जिससे भारत में वर्चस्व को लेकर लगभग एक सदी से चल रहा संघर्ष समाप्त हो गया।

जहां प्लासी की लड़ाई (1757) ने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव रखी, वहीं मेजर हेक्टर मुनरो के नेतृत्व में लड़ी गई बक्सर की लड़ाई (1764) ने उन्हें पूरे देश पर आधिपत्य के दावेदार के रूप में स्थापित किया। प्लासी की लड़ाई बहुत कुछ साजिश से जीती गई; इसकेविपरीत, बक्सर की लड़ाई में ब्रिटिश कंपनी ने अपने सामरिक कौशल को दिखाते हुए न केवल बंगाल के नवाब बल्कि मुगल सम्राट को भी हरा दिया।

माना जाता है कि भारत में औपचारिक ब्रिटिश शासन वर्ष 1757 में प्लासी की लड़ाई के बाद शुरू हुआ था। तब से ब्रिटिश कंपनी वाणिज्यिक व्यापारिक उद्यम से एक राजनीतिक इकाई में बदल गई जिसने वस्तुतः भारत पर वर्ष 1858 में अपने विघटन तक शासन किया। यही वह दौर है जब भारत सरकार अधिनियम 1858 के अधीन ब्रिटिश सरकार ने भारत का प्रशासन सीधे अपने हाथ में ले लिया।

- उप निदेशक (प्रचार) व संपादक, इंडियन सिल्क,
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु

East India Company headquarters in London

EAST INDIA COMPANY headquarters in Leadenhall Street, London, about 1790

सूरत में कब्रिस्तान

-राजेश कुमार सिन्हा

सूरत में अंग्रेजी, डच और अर्मेनियाई कब्रिस्तानों की कब्रें शहर के सबसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारकों में से एक मानी जाती हैं। आरंभ में यूरोपीय जो व्यापार करने के लिए भारत आए थे, वे मुगलों से अत्यधिक प्रेरित थे। ईस्ट इंडिया कंपनी के कई अधिकारी जो यहां व्यापार करने आए थे, जल्द ही बहुत अमीर बन गए। उनमें से कुछ, स्वदेश लौटकर ठाठ से रहते थे और राजनीतिक प्रक्रिया को भी प्रभावित करते थे; जबकि, कई अन्य लोग भारत में रहे, मरे और यहीं दफनाए गए। वे जो पीछे छोड़ गए हैं, वह न केवल उनकी स्थिति बल्कि उनकी आकांक्षाओं का भी संकेत देता है।

अंग्रेजी और डच कब्रिस्तानों की सबसे खास विशेषता उनकी विशाल और भव्य कब्रें हैं। वे शक्ति और महिमा की कहानी बताते हैं।

प्रत्यक्षतः, सूरत में डचों और अंग्रेजों के बीच मूल निवासियों पर अपनी महत्ता और शक्ति का प्रभाव डालने की इतनी प्रतिस्पर्धा थी कि उन्होंने कब्रों के स्थान पर स्मारक बना दीं।

भारत के विभिन्न हिस्सों में कोलकाता में पार्क स्ट्रीट से लेकर मुंबई में सेवरी तक और कई अन्य स्थानों में अंग्रेजों के कब्रिस्तानों की कोई कमी नहीं है । कई कब्रिस्तानों में विशाल मूर्तियाँ और फैंसी स्मारक हैं; लेकिन सूरत के बड़े और सजावटी मकबरों का शायद ही कोई मुकाबला कर सके। उनमें से कई स्मारक ओबिलिस्क, गुंबद, स्तंभ आदि की दृष्टि से स्पष्ट रूप से मुगल वास्तुकला से प्रेरित हैं। वास्तव में, इनकी तुलना दिल्ली, आगरा और बीजापुर के मकबरों से नहीं की जा सकती; लेकिन रोम में एड्रियन के मकबरे और कुछ अन्य को छोड़कर इस तरह की कोई भी यूरोपीय संरचना इनकी बराबरी नहीं कर सकती।

सूरत में कतारगाम गेट के पास स्थित अंग्रेजी कब्रिस्तान सूरत में कई प्रसिद्ध नामों की याद दिलाता है जो शहर के राजनीतिक

इतिहास में महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। जॉर्ज ऑक्सेंडेन और क्रिस्टोफर ऑक्सेंडेन अंग्रेज व्यापारी थे जिन्होंने सूरत में अंग्रेजी फैक्ट्री की कमान संभाली थी, की कब्रें अंग्रेजी कब्रिस्तान में सबसे बड़ी हैं। अंग्रेजी फैक्ट्री के अध्यक्ष सर जॉर्ज ऑक्सेंडेन ने छत्रपति शिवाजी के छापे के खिलाफ ब्रिटिश प्रतिष्ठान की सफलतापूर्वक रक्षा की थी । मार्च 1667 में, चार्ल्स द्वितीय ने बॉम्बे को ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंप दिया और ऑक्सेंडेन को बॉम्बे द्वीप पर कब्ज़ा करने पर सूरत के अध्यक्ष एवं

परिषद के नियंत्रण में बॉम्बे का गवर्नर और कमांडर-इन-चीफ नियुक्त किया । वे सभी वर्ग के लोगों में काफी लोकप्रिय थे। 14 जुलाई 1669 को सूरत में ऑक्सेंडेन की मृत्यु पर कंपनी ने उनकी कब्र पर एक भव्य स्मारक बनवाया। वह भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रारंभिक काल में बॉम्बे प्रेसीडेंसी के पहले गवर्नर थे।

डच कब्रिस्तान, अंग्रेजी कब्रिस्तान से कुछ ही दूरी पर स्थित है; यह छोटा है लेकिन, इसमें बड़े मकबरों की कोई कमी नहीं है। डच कब्रें विभिन्न आकारों और आकृतियों की हैं, जो बहुत भव्य हैं । डच ईस्ट इंडिया कंपनी के निदेशक हेंड्रिक एड्रियन बैरन वान रीड, जिनकी दिसंबर 1691 में मृत्यु हो गई थी, के भव्य मकबरे में बड़े आकार का एक दोहरा गुंबद है जिसके ऊपर और नीचे एक गैलरी है जो सुंदर स्तंभों पर टिकी हुई है। यह स्मारक पहले भित्तिचित्रों, ढालों और धर्मग्रंथों के अंशों से अलंकृत था और खिड़कियाँ सुंदर लकड़ी की नक्काशी से भरी हुई थीं।

सूरत में आज कब्रिस्तान उपेक्षित हैं और केवल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ही इसकी देखभाल करता है। अब वास्तुकला के छात्र और स्मारक पर्यटक ही कब्रिस्तानों में जाते हैं और कभी-कभार विदेश से अपनी वंशावली का पता लगाने वाला कोई व्यक्ति आता है। लेकिन औपनिवेशिक इतिहास में रुचि रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए यह बहुत रोचक विषय हो सकता है।

- उप निदेशक (प्रचार) व संपादक, इंडियन सिल्क,
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलूरु

आपके पत्र

"रेशम भारती" का दिसम्बर 2021 अंक प्राप्त हुआ। सदैव की भांति वैज्ञानिक, तकनीकी और भाषा संबंधी आलेखों के सुंदर सम्मिश्रण के साथ पत्रिका पठनीय एवं संग्रहणीय है। सदस्य सचिव की कलम से निकले उद्गार रेशम बोर्ड की राजभाषा के प्रति निष्ठावान प्रयासों को प्रतिबिम्बित करते हैं। रेशम बोर्ड के विभिन्न संस्थानों की राजभाषा संबंधी गतिविधियां राजभाषा के कार्यान्वयन के प्रयासों की झलक दिखलाती हैं। इन गतिविधियों के रंगीन चित्र पत्रिका को अधिक आकर्षक स्वरूप प्रदान कर सकते हैं, ऐसा मेरा विनम्र सुझाव है।
आशा है पत्रिका का आगामी अंक शीघ्र ही प्राप्त होगा।
शुभकामनाएं,

*** रुद्रनाथ मिश्र, उप महाप्रबंधक**
(राजभाषा),एनएमडीसी लिमिटेड, मुख्यालय, हैदराबाद

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'रेशम भारती' दिसंबर, 2021 की एक प्रति प्राप्त हुई है। आपके कार्यालय की राजभाषा संबंधी उपलब्धियां सराहनीय हैं। बोर्ड द्वारा वैज्ञानिक व तकनीकी विषयों पर हिंदी के प्रयोग का दायरा बढ़ाने और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में आपका प्रयास अनुकरणीय है।
आशा है, भविष्य में भी 'रेशम भारती' का आगामी अंक हमें राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेरित व उत्साहित करता रहेगा।
शुभकामनाएं सहित,

*** डॉ. ई. मोहन राव, राज्य निदेशक, खादी और ग्रामोद्योग आयोग, बेंगलूरु**

"रेशम भारती" दिसंबर, 2021 की एक प्रति प्राप्त हुई। साथ ही इसमें छपे लेख एवं कविताएं भी सारगर्भित और विविध चित्र चयन सुंदर भी है। सुंदर व जानकारी पूर्ण पत्रिका के सफल संपादन केलिए समस्त संपादक मंडल को कोचिन पत्तन प्राधिकरण की हार्दिक बधाईयां।

*** सहायक सचिव ग्रेड I (राजभाषा), कोचिन पत्तन प्राधिकरण, विलिंगटन आईलैण्ड, कोचिन**

आपके द्वारा प्रेषित हिंदी गृह-पत्रिका रेशम भारती' का नवीनतम अंक हमारे संस्थापन को प्राप्त हुआ। पत्रिका में उपलब्ध सभी लेख अति उत्तम एवं ज्ञानवर्धक है तथा इनमें प्रकाशित कविताएँ भी अत्यंत सुंदर एवं मार्मिक है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादन मंडल, राजभाषा समिति एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।
'रेशम भारती' के उत्तरोत्तर वृद्धि हेतु हमारी शुभकामनाएँ।

*** उमा एस जी, सहायक निदेशक (रा.भा.),कृते निदेशक, वैमानिकीय विकास संस्थापना, रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, बेंगलूरु-560075**

आपके संस्थान की राजभाषा वार्षिक गृह-पत्रिका "रेशम भारती" के अंक 64-65, दिसंबर 2021 की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में प्रकाशित पठनीय सामग्री अत्यंत रोचक, तात्कालिक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से वैज्ञानिक तरीके से रेशम की खेती का किसानों पर प्रभाव, कैसे अपने को समझाऊँ, भारत का भविष्य, कोविड-19 महामारी से मिली सीख, बालकनी वाली आजादी, वात्सल्य की उपादेयता, आजादी का अमृत महोत्सव- साहित्य, संस्कृति, संसद व मीडिया आदि लेख एवं कविताओं ने पाठकों का मन मोह लिया है।

***वेंकटेश कुमार द्विवेदी, वैज्ञानिक 'ई, युद्धक विमान प्रणालियाँ विकास एवं एकीकरण केन्द्र, रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन, बेंगलूरु**

हिन्दी पत्रिका रेशम भारती अंक 64-65, दिसंबर 2021 प्राप्ति के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। धन्यवाद,

*** ऐ बी नरेन्द्र कुमार, वैज्ञानिक-डी, अनुसंधान विस्तार केन्द्र, केरेबो, क्यालानुर क्रॉस, कोलार तालुक और जिला, कर्नाटक**

साहित्य का कर्तव्य केवल ज्ञान देना नहीं है, परंतु एक नया वातावरण देना भी है।

- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन